Nagari-Pracharini Granthmala Series N. 4-6.

THE PRITHVIRÁJ RAŚO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

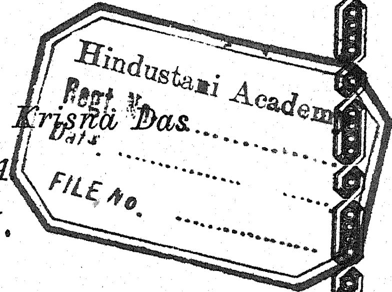
BY

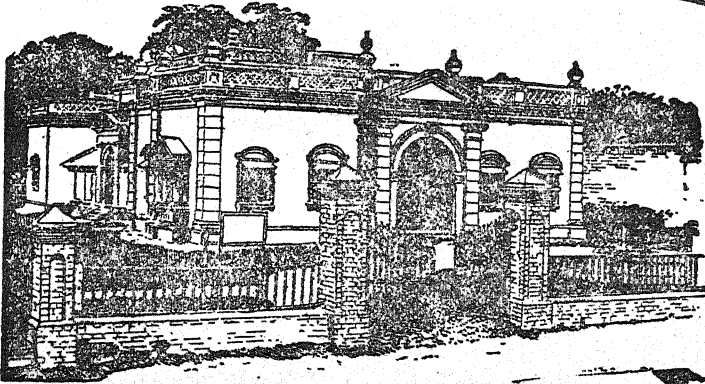
Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XVII. TO XXIV.





महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व-१७ से २४ तक।

PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA,
BENARES.

1906.

मूल्य १)]   Issued 16th March 1906.   [*Price Re. 1.*

सूचीपत्र।

अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिष्यते ॥

(सत्रहवां समय ।)

पृथ्वीराज का कुँअरपन में शिकार खेलना ।

कवित्त ॥ कुंअरप्पन प्रथिराज । राज आषेटक षिल्लहि ॥
जोव्वने मभ्भ रवन । मूल पच्छिम दिसि मिल्लहि ॥
भाजि बीर वाराह । चक्क बज्जी चावद्दिसि ॥
मुक्कि थान पंचांन । मिले सूर संमूह धसि ॥
लोहांन बीर आजान भुअ । लोहा लंगर धाइया ॥
रुह थांन चुक्कि अपथांन मुकि । पंचां नन रव काइया ॥ छं० ॥ १ ॥

हाथी घोड़े आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नहीं पड़ता ।

दूहा ॥ पंच सबद गुंजत सुगज । है हींसन सद स्वानं ॥
गिर गुंजत परसद्द बहु । सद्द न सुनियै कांन ॥ छं० ॥ २ ॥

सिंह का क्रोधित होना ।

कवित्त ॥ सद्दपति संभरिय । कांन मंडे रव संभलि ॥
ज्यों षल बयन ग्रसंत । विप्र षेजै निगंम मिलि ॥
गुन अवगुन कुल बधू । सती पति हता मानि मन ॥
नाग अंग चंपयौ । किमार अग्गै फुल्यौ मन ॥
षिझयौ एम पंचाननह । बाय बास सुमंन फुलिय ॥
द्रिग षोलि द्रिष्ट म्रगया सकल । तेज अंग कायर छलिय ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ कांनन सद्दन संभरत । कूह कलह आषेट ।
थह सूतो बर जग्गयौ । सिसु दंपति घटि पेट ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ दिष्ट राज अंमरिय । सरित संभरिय सँपत्ते ।

के हंके हक्काह । केक चावद्दिसि धत्ते ॥
के पाइल बर बान । मूल धारी उठि नट्ठे ॥
के असवार करार । हीन काइर ह्वै नट्ठे ॥
के गए मुक्कि पाइल मगय । षीर छंटि तक्कर परत ॥
दिष्षयौ संग लंगावली । बियौ न कोइ धीरज धरत ॥ छं ॥ ५ ॥

सिंह का महा क्रुद्ध होना ।

सुनिव सूर बर हक्क । धक्क बज्जी चावद्दिसि ॥
नरन सद्द कानन प्रसद्द । सिंघ किन्नो सु क्रोध ग्रसि ॥
बीरा रसु बिहुरिय । पुंछि सिर झारि झपट्टिय ॥
दीप नयन प्रज्जरिय । संग दिसि लगें लपट्टिय ॥
बल अतुल तोल तोलंत पय । बुल्यौ मन सद्दह गुद्दिर ॥
फटिय धरकि मानहु गगन । सिस सनेह संगन बद्दन ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ आषेटक दरसे सकल । सिसु सिंघनी बिच सिंघ ॥
स्वान देषि मुहु रव करत । ओलंघे नरसिंघ ॥ छं० ॥ ७ ॥

सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज का तलवार से सिंह को मारना ।

कवित्त ॥ सबै सेन अवसांन । मुक्कि लग्गौ बर तामस ॥
तब पंचानन हक्कि । धक्कि चहुआनां पामिस ॥
लै कमांन बिय बांन । षंचि नंष्यौ बिय चुक्यौ ॥
समर सिंघ सब सथ्य । तथ्थ चावट्टिसि हंक्यौ ॥
डंमरिय डहकि विज्जुल लहकि । षग कढ्ढौ सोमेसजा ॥
चंप्यौ नरिंद अवसांन तकि । षंडो डारिय हथ्यता ॥ छं० ॥ ८ ॥
चंपि स्वामि बिहुरिय । लोह संजुरि नग मुक्यौ ॥
लोहा लंगर राइ । बीर अवसान न चुक्यौ ॥
स्वामि सथ्थ परिबथ्थ । रुंड धर बर उष्पारे ॥
रुधिर अंग झंझरिय । सिंघ पारिय अष्पारे ॥
बन राय बीर बन छित्त रुप । सूर स्वामि ध्रंमं सुरसि ॥

चर नंग बीर तल वज्जय । सबर जोर जम दढ्ढकसि ॥ छं० ॥ ९ ॥

दूहा ॥ लंगे लोह उचाइ करि । अरु चावद्दिसि चाहि ॥
छघ्य आइ कर तोन द्रढ । बर कमान कर साहि ॥ छं० ॥ १० ॥

कबित्त ॥ द्रढ कमान मुठ्ठिय प्रमान । गह्यौ तकि तोन जोर कर ॥
बरकि बरकि बंगाल । चित्तन चंचल सु बोलि गुर ॥
गुंजि गरज भूभांन । जंग देवत्त रत्त जुअ ॥
नचि निवेस तजि बाल । सिंघ सम बीर इक्क हुअ ॥
आषेट तजिय चल्लिय सुभर । बिविध सिंघ दिष्षन दिसा ॥
सम बीर बीर एकत भए । तहां दिष्यौ सोमेस जा ॥ छं० ॥ ११ ॥
षेध लग्गि कुटि बीर । सुबर दिषि बीर अष्ट क्रम ॥
सोमेसुर सुअ सूर । लयौ पर तोजिम रविनम ॥
मुष्टि दिष्टि मरदां मरद । मिले पँचानन सूरं ॥
पिता जात बेबंध । द्रव्य अधो अध पूरं ॥
चय भाग तक्किय सिंघह सुहय । तुला म्लल लंगी चढ्यौ ॥
उप्पमा चंद सुनि सुपन ज्यौं । सुबर बीर देवी दढ्यौ ॥ छं ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की धूम धाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया में अपने सरदारों के साथ बैठना ।

छंद पद्धरी ॥ आषेट रमत प्रथिराज रंग । गिरवर उतंग उद्यांन दंग ॥
उत्तंग तरुन छाया अकास । अनेक पंषि क्रीडहिं हुलास ॥
सुब्बा सरास कुद्दे सुगंध । तहां भ्रमत भोर बहु बास अंध ॥
फल फूल भार नमि लगी साष । नासा सुगंध रस जिह्व चाष ॥ छं० ॥ १३ ॥
पन्नग प्रचंड फूंकर फिरंत । देषंत नरह ते करत अंत ॥
अनेक जीव तहां करत केलि । बट बिटपि छांह अवलंबि बेलि ॥
इक घाट विकट जंगल दुअर । तहां बीर म्लल पिथ्थल कुंआर ॥
वामंग अंग चामंड राय । चूकै न छूठि सौ काल घाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
दाहिनि दिसा कन्हा सुजोध । सम ब्रह्म सस्त्र सम नाहि क्रोध ॥
लोहांन पिठ्ठ बैठो प्रचंड । जंनार जोर जम देन दंड ॥

ढिग कन्ह वैठि पुंडीर धीर । आजान बाह बज्जी सरीर ॥
चामंड अंग कैमास काल । जीवार जोध पसु घरनि घाल ॥
तिन अग्ग आइ पज्जून राइ । सब षेल निपुन पसुदाइ घाइ ॥ छं० ॥ १५ ॥
दुअ ओर ओर सामंत जूह । षेदानि जोर करि करी कूह ॥
कर जोरि सेन सात सहस सथ्थ । उड्डंत पंषि गहि लेंइ हथ्थ ॥
जुर बाज कुही तुर मती धारि । उड्डंत जीव ते लैहि पार ॥
सच लैंहि स्वांन ते रोभ्भ भुम्मि । पिष्षियै जु करंक बिन मंस भूम्मि ॥ छं० ॥ १६ ॥
सकल अनेक उठ्ठे बराह । बट बंटि मंसनह तुहि थाह ॥
सा मरन सूर परि बथ्थ लेहि । ते बंटि बंटि सब सथ्थ देहिं ॥
षरगोस स्वांन नह लहत बांटि । फिरि चढ़े जीव ते ओठ चांटि ॥
मृगमाल पवन उठि चले भागि । तिन परसु तीर सरवसि आगि ॥ छं० ॥ १७ ॥
अनजीव जीव वष्षांन कोंन । सिकार लग्गि दून चाव होंन ॥
सब सथ्थ तथ्थ हुअ एक जुहि । गज्यौ सु सिंघ जनु गगन फुहि ॥
धपि चल्यौ वीर प्रथिराज धीर । संगरिय लोह नह इक्क तीर ॥
दिष्यौ सुजाइ सिंघनिय बाल । अवतार धरिय जनु पुहमि काल ॥ छं० ॥ १८ ॥
गरु राइ गुंग गज्यौ गरूर । उच्चाइ पुक मनु पुहमि चूर ।
हथवांन हथ्थ हाकंत ष्याल । दद्दुरनि दौरि मनोद बटि व्याल ॥
आकास सीस हढ़ै प्रचंड । जम रूप जीव ताडंत तुंड ॥
हक्यौ सुराइ संजम कुंआर । कुद्यौ सु तेज जनु तीर तार ॥ छं० ॥ १९ ॥
भए लथ्थ बथ्थ नर जीव जोध । न्रप अग्ग केलि जनु मल्ल क्रोध ॥
गल बांह घल्लि दव्यौ सुसूर । फाड्यौ सु उदर जम दढ्ढ पूर ॥
हथवाह एक केहरिय कीन । पय हथ्थि अंष्षि करि कंन हीन ॥
आये सु दौरि सब सथ्थ जांम । संगा सधन्नि इम कहिय स्वांम ॥ छं० ॥ २० ॥

संजम राय के बेटे का वीरता दिखलाना ।

दूहा ॥ संजम राइ कुमार बल । करि संजम न्रप भ्रंम ॥
इक मिक्क एकत भए । अप्प चम्म पसु चम्म ॥ छं० ॥ २१ ॥
गर्जनि कुंभ जिसि हथ्थ हनि । फारि चीर घर डार ॥

संजम राइ कुमार सौ । बथ्थन मारि पक्कारि ॥ छं० ॥ २२ ॥
रीछ रोझ बाराह हनि । दट्ठुन बक्के कोरि ॥
तिते जीव उर मभ्भ्फत । कढि जम दट्ठे फोरि ॥ छं० ॥ २३ ॥
गिरि परबत नद षोह सर । लंघत लगी न बार ॥
लंगा इक्कन लंघयौ । अनी धार धर धार ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उसकी पीठ ठोंकना ।

कवित्त ॥ भौ प्रसन्न प्रथिराज । बोल बुल्ल्यौ सुलंगरिय ॥
इत्तौ देउं प्रचंड । पंच जो मद्धि मोहि जिय ॥
अद्धा राज सु अद्ध । पाट अद्धा तंबूलं ॥
अद्धा वेस सुदेस । करैं आदर संमूलं ॥
बोलंत बैन प्रथिराज सुनि । जीव लज्जि नीची नजरि ॥
लगाइ कंठ ठुकि पिट्ठु कर । भल्लौ भल्लौ सब सथ्थ करि ॥ छं० ॥ २५ ॥

दूहा ॥ जब दैवत्त दिषाइहै । तब सत्ता मुझ्झ बैन ॥
म्रिग तिस्ना ज्यों देषियै । प्यास न बुझ्झै नैन ॥ छं० ॥ २६ ॥
सुपनंतर की प्यास ज्यों । भजै मही किहि भंति ॥
जब दैहैं तब पूजिहै । जो मन मझ्झह षंति ॥ छं० ॥ २७ ॥

सब लोगों का आगे बढ़ना, एक शकुन मिलना ।

इह कहि करि अग्गें चले । मिले सूर सब संग ॥
तब दिष्षौ इक सगुन बन । भए सबन मन पंग ॥ छं० ॥ २८ ॥

शकुन को देख कर सब को आश्चर्य होना ।

बत्त कहत प्रथिराज ने । पिष्षौ सगुन न्टपत्ति ॥
सकल साथ अचरिज भयौ । देषन इहै चरित्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

एक सर्प को नाचते हुए देखना ।

कवित्त ॥ अहि सुरंग मनि दुत्ति । देवि मंडै तंडव गति ॥
बालमीक बिल अग्र । इक्क फनि कुटिल क्रोध मति ॥
इक्क हथ्थ बिच विहथ । थांन उंचौ रवि संह्यौ ॥

बर संमल उर चंपि। तेज आज्जुलि सुचिन्हौ।
आचिज्ज देषि प्रथिराज तब। चक्काह्यौ पामर सहर॥
धावर सु कन्ह चहुआंन कौ। बोलि बीर चच्चिग महर॥ छं०॥ ३०॥
महर कहर करिवार। भार जिन जुद्ध कन्ह बर॥
नरनाहां बर गढ। गाह गिर दीह दुम्मन धर॥
मति जोतिग सहदेव। सगुन आगम गम जांनै॥
प्रबल मैवासन मारि। उथपि थप्प थिर थांनै।
बिर दैत दमित आजांन भुअ। उर किंवार वर बज्र जुअ॥
कुह न किमह जै क्रोध तजि। दुअ महिष निवारै भुजनि दुअ॥ छं०॥ ३१॥

पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना।

छंदपद्धरी॥ आयौ सुमहर महरन नरेस। जिहि सुनत चढि भगि जात देस॥
उन्निद अंग उत्तंग कंध। बर बाहु वज्र अरि धर असंध॥
बेहथ कलाइय हथ्थ जाहि। पग दौरि बियन बर रह्यौ गाहि॥
महिषी सु उभय पय टांसि जाइ। कलहंत क्रोध दिष्षय बलाइ॥ छं०॥ ३२॥
रष्षत सु निजरि सब अग्ग पच्छ। चुक्कवै चोट हनि तुच्छ तच्छ॥
कुल छेद भेद नस करन राव। पर भूमि अप्प इस धरै दाव॥
दुअ सहस महर जिन संग जोध। कमनैत काल अनमी अबोध॥
बहु ब्रषभ गाय महिषीन तुंग। केली कयल्ल गडरन्न पुंग॥ छं०॥ ३३॥
घुंमत मथांन जिन घरन घोर। आगम अषाढ जनु घटा सोर॥
बेपार दुग्ध जिन घरन षर्च। अनभंग बुद्धि जिन समर चर्च॥
बिरदैत एक वांने न धार। चमरैत एक हूक नबल तार॥
सिर वहै बिहर पग पच्छ देन। द्रिग समर देषि सिर लगत गैन॥ छं०॥ ३४॥
गुज्जर अहीर असि जाति दोइ। तिन लीह लोपि सक्कै न कोइ॥
चाचिग हजूर कुम्मार आइ। करियै हुकंम सिर ल्यौं चढाइ
बुल्ले सुबैन चहुआंन राउ। कहि सगुन सर्प देवी प्रभाउ॥ छं०॥ ३५॥

ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आपको बहुत धन मिलेगा।

दूहा॥ महर कहर गति बैन कहि। ज्यों बुल्लै दुजबैन॥
घरी एक सम्हौ रहै। तौ लभ्भै न्रप चैन॥ छं०॥ ३६॥

कुंडलिया ॥ मंने संभरि बार सुनि । इह अपुब्ब गति इच्छ ॥
मभ्भक्ष कदन घरि इक्क मैं । आवै भूमि ह लच्छि ॥
आवै भूमि ह लच्छि । पंषि माता इह सारी ॥
दल जित्ते षुरसांन । कित्ति जग ज्यों बिसतारी ॥
इन सगुननि चहुआंन । तुच्छ दुष अतिद्धि अभन्नौ ॥
बिन जुद्दह इह लग्ग । द्रव्य निकसै आभन्नौ ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ कुटिल दिष्ट तिन चिन्त करि । कही मद्दर इक बात ॥
सो ब्रह्मा नन जांनई । बात भविष्यत घात ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा बिल में है और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है ।

कवित्त ॥ संभलि पिथ्थ कुमार । व्योम दिष्यौ स्रप सारिय ॥
अद्धौ बंबी मध्य । अद्ध उँचौ अधिकारिय ॥
ता फनि ऊपर मनि प्रमांन । देवि चावद्दिसि नंचै ॥
दिष्यो इक्क मन मंडि । राज दिसि सगुनह संचै ॥
आवै न पच्छ तथ्थह निजरि । न्रपति हियं अत्यंत सुष ॥
जंपयौ मद्दर धावर धनू । सगुन बीर जांनै सरुष ॥ छं० ॥ ३९ ॥

देवी का इतने में उड़कर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना ।

दूहा ॥ इतें देवि उडि बैठि अँब । चंच गिराइय साग ॥
दौरि मद्दिर तब हथ्थ किय । लै नरिंद तुअ भाग ॥ छं० ॥ ४० ॥

सर्प सर्पिनी का मिलना और वहां से दूसरी जगह उड़जाना ।

सर्प आंनि सर्पिनि मिलिय । भषु दीनौ तिन षाइ ॥
निय आसन थल छंडि कै । अन्न स्थल उड़ि जाई ॥ छं० ॥ ४१ ॥
इह अचिज्ज पिष्षिय सकल । चाचिग पुछि फिरि बत्त ॥
तुम जांनो सब फल सगुन । मद्दर कद्दर मत तत्त ॥ छं० ॥ ४२ ॥

इस शुभ शकुन का फल वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ तत बत्त मद्दर तिन कही बत्त। या सगुन लाभ वरन्यौ न जत्त ॥
दिन तुच्छ मद्धि धन लाभ होइ। ता पच्छ कंक दुअ राह जोइ ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तुम जैत होइ भग्गो पलांन। धन जुद्ध लाभ लभ्भै बलांन ॥
दृह लग्न महूरत इसो देव। पल भूमि अप्पि तो करै सेव ॥ छं० ॥ ४४ ॥
संसार कित्ति चहु चक्क होइ। बंदै सुवाह बल दीन दोइ ॥
सागुन्य सगुन फल कहे जब्ब। प्रमुदित्त मन चहुआंन तब्ब ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जिम मेह मोर आनंद होइ। राका रयनि आनंद तोइ ॥
रिति राइ पाइ तरु फलत फूल। जिम सिद्ध सेव हिय हरत सूल ॥ छं० ॥ ४६ ॥
जिम मंच सक्ति साधक लहंत। रस धात रसाइन लहि चहंत ॥
जिम इष्ट लाभ आराधवंत। प्रमदा मुदित जिम आइ कंति ॥ छं० ॥ ४७ ॥
तिम भयौ सुष्ष प्रथिराज अंग। बजि पंच सब्द बाजै सुरंग ॥ ४८ ॥

शिकार बंद कर के बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना।

दूहा ॥ पंच सबद बाजिच बजि। तजि म्रगया चहुआंन ॥
कानन मध्य सु उत्तरिय। किन्नौ कुअर मिलांन ॥ छं० ॥ ४९ ॥

डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वीराज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठंढा होना, भोजन की तयारी।

छंद नाराचा ॥ कस्यौ मिलांन राजयं। बरंनि कव्वि राजयं ॥
फिरंग सू फनक्कसी। जरद्दु जंज रक्कसी ॥ छं० ॥ ५० ॥
सुवंन वंस राज्जतं। उभे सुमभ्भ्भ मभ्भ्भतं ॥
फिरंन सूर लग्गतं। अजव्व जेव जग्गतं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
गिरिह डोरि रेसमं। सुपंच रंगयं भ्रमं।
तने तानव तंबुअं। करे सुपद्धरं भुअं ॥ छं० ५२ ॥
विछाइ कैदुली चयं। धरे प्रजंक वीचयं ॥
सवारि सेज पथ्थरं। सुगंध फूल विथ्थरं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
गरम्म हम्म तोसयं। ढके पलंग पोसयं ॥
कनंक मै सिंघासनं। अछादितं सुवासनं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

धरे सुपिट्ठ तक्किए । अतन्न संत ढक्किए ॥
अगें अवन्नि अंगनं । सिका करै छिरक्कनं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
कुंमकुमा गुलाबयं । सुनेक छंटि आवयं ॥
तहां सु वैठि पिथ्थयं । करै अषेट कथ्थयं ॥ छं० ॥ ५६ ॥
अनेक भंति चंदयं । पढै विरद्द छंदयं ॥
सामंत स्त्रब्ब नम्मियं । मिलांन अप्प क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सें हथ्थ चाहुआनयं । दए कपूर पानयं ॥
षवास पास वानयं । हजूर उभ्भ आनयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥
विरष्ष वट्ट जंबुअं । षिरन्न जट्ट अंबुअं ॥
गयंद बंधि अंदुअं । झरंत मद्द विंदुअं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
करंत केलि सारसी । मलष्ष ते महारसी ॥
बिरद्द नेंक बोलते । पलक्क चष्ष षोलतें ॥ छं० ॥ ६० ॥
महावतं पुकारतें । हठं न लै अहारतें ॥
पियंत नीर षें गरें । गरज्ज नभ्भ ज्यों गरें ॥ छं० ॥ ६१ ॥
कपोल लोल हल्लते । चवेल सुंड झल्लते ॥
गिलोल चोट लग्गतें । विरष्ष ओट भग्गतें ॥ छं० ॥ ६२ ॥
दिपंत दंत उज्जलं । पहार पंति कज्जलं ॥
दुरद्द हद्द बेसके । दियें गनेस भेस के ॥ छं० ॥ ६३ ॥
सुपीलवान उभ्भयं । चरष्षि गड्डु षुभ्भयं ॥
करे तुरंग काइजं । भरें अमंन बाइजं ॥ छं० ॥ ६४ ॥
मिटै डरं पसीनयं । पलान दूरि कीनयं ॥
न्हवाइ नष्ष सिष्षयं । अक्षादि कंध रष्षयं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रतब्ब दै ब्रहासयं । करे चपत्त घासयं ॥
ता पच्छ जाइ साहनी । अरांम पंड वाभनीं ॥ छं० ॥ ६६ ॥
कहूं करं भलारयं । भरी रषत्त भारयं ॥
अनूचरं उतारयं । संभारि ढार ढारयं ॥ छं० ॥ ६७ ॥
हुलास सेन उप्पजै । भोज्जंन भष्ष निप्पजैं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

धरे सुपिठ्ठ तक्किए । अनल्ल संत ढक्किए ॥
अगें अवन्नि अंगनं । सिका करै छिरक्कनं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
कुंमकुमा गुलाबयं । सुनेक छंटि आवयं ॥
तहां सु बैठि पिथ्थयं । करै अषेट कथ्थयं ॥ छं० ॥ ५६ ॥
अनेक भंति चंदयं । पढै विरद्द छंदयं ॥
सामंत स्रब्ब नम्मियं । मिलांन अप्प क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सें हथ्थ चाहुआनयं । दए कपूर पानयं ॥
षवास पास वानयं । हजूर उभ्भ आनयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥
विरष्ष बद्द जंबुअं । षिरन्न जद्द अंबुअं ॥
गयंद बंधि अंदुअं । झरंत मद्द बिंदुअं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
करंत केलि सारसी । मलप्प ते महारसी ॥
बिरद्द नेंक बोलते । पलक्क चष्ष षोलतें ॥ छं० ॥ ६० ॥
महावतं पुकारतें । हठं न लै अहारतें ॥
पियंत नीर षों गरें । गरज्ज नभ्भ ज्यों गरें ॥ छं० ॥ ६१ ॥
कपोल लोल हल्लते । चवेल सुंड झल्लते ॥
गिलोल चोट लग्गतें । विरष्ष ओट भग्गतें ॥ छं० ॥ ६२ ॥
दिपंत दंत उज्जलं । पहार पंति कज्जलं ॥
दुरद्द हद्द वेसके । दियें गनेस भेस के ॥ छं० ॥ ६३ ॥
सुपीलवान उभ्भयं । चरष्षि गड्डु षुभ्भयं ॥
करे तुरंग काढ्ढजं । भरें अमंन बाढ्ढजं ॥ छं० ॥ ६४ ॥
मिटै डरं पसीनयं । पलान दूरि कीनयं ॥
न्हवाइ नष्ष सिष्षयं । अछादि कंध रष्षयं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रतब्ब दै ब्रहासयं । करे चपत्त घासयं ॥
ता पच्छ जाइ साहनी । अरांम पंड वाभनीं ॥ छं० ॥ ६६ ॥
कहूं करं भलारयं । भरी रषत्त भारयं ॥
अनूचरं उतारयं । संभारि ढार ढारयं ॥ छं० ॥ ६७ ॥
हुलास होन उप्पजै । भोज्जंन भष्ष निप्पजैं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

इस शुभ शकुन का फल वर्णन ।

छंद पद्धरी ॥ तत बत्त मद्दर तिन कही बत्त । या सगुन लाभ वरन्यौ न जत्त ॥
दिन तुच्छ मद्धि धन लाभ होइ । ता पच्छ कंक दुग्र राह जोइ ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तुम जैत होइ भग्गो पलांन । धन जुड्ड लाभ लब्भै वखांन ॥
इह लग्न महूरत इसो देव । षल भूमि ऋप्पि ता करै सेव ॥ छं० ॥ ४४ ॥
संसार कित्ति चहु चक्क होइ । बंदै सुवाह बल दीन दोइ ॥
सागुन्य सगुन फल कहे जब्ब । प्रमुदित्त मन चहुआंन तब्ब ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जिम मेह मोर आनंद होइ । राका रयनि आनंद तोइ ॥
रिति राइ पाइ तरु फलत फूल । जिम सिद्ध सेव हिय हरत सूल ॥ छं० ॥ ४६ ॥
जिम मंत्र सक्ति साधक लहंत । रस धात रसाइन लहि चहंत ॥
जिम इष्ट लाभ आराधवंत । प्रमदा मुदित्त जिम आइ कंति ॥ छं० ॥ ४७ ॥
तिम भयौ सुष्ष प्रथिराज अंग । बजि पंच सब्द बाजै सुरंग ॥ ४८ ॥

शिकार बंद कर के बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना ।

दूहा ॥ पंच सबद बाजिंच बजि । तजि म्रगया चहुआंन ॥
कानन मध्य सु उत्तरिय । किन्नौ कुअर मिलांन ॥ छं० ॥ ४९ ॥

डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वीराज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठंढा होना, भोजन की तयारी ।

छंद नाराचा ॥ कह्यौ मिलांन राजयं । बरंनि कब्बि राजयं ॥
फिरंग सू फनक्कसी । जरद्दु जंज रक्कसी ॥ छं० ॥ ५० ॥
सुवंन वंस राज्जतं । उभे सुमभ्भ मभ्भतं ॥
फिरंन सूर लग्गतं । अजब्ब जेव जग्गतं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
गिरिद्द डोरि रेसमं । सुपंच रंगयं भ्रमं ।
तने तानव तंबुअं । करे सुपद्धरं भुअं ॥ छं० ५२ ॥
बिछाइ कैदुली चयं ।धरे प्रजंक वीचयं ॥
सवारि सेज पथ्थरं । सुगंध फूल विथ्थरं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
गरम्म छम तोसयं । ढके पलंग पोसयं ॥
कनंक मै सिंघासनं । अछादितं सुवासनं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

सब लोगों के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना ।

दूहा ॥ करि मिलांन मध्यांन हुअ । न्निपति भोज रुच भंति ॥
एकन मिलि आहार हुअ । रही न मन कछु षंति ॥ छं० ॥ ६८ ॥

संध्या होने पर सब लोग घर लौटे ।

मादक में नउ दीप किय । बढ्ढि सुगंधन तार ॥
निसि आगम बहुरे ग्रहन । जित तित भूपन भार ॥ छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का घर पहुंच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को स्वप्न में देखना ।

चढि करि संभरि वार चलि । ग्रेह सपन्नौ जाइ ॥
अंधारी दारुन निसा । भू सुपनंतर आइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥

भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन ।

कवित्त ॥ पीत वसन आरुहिय । रत्त तिलकावलि मंडिय ॥
छूटिय चंचल चाल । अलक गुंथिय सिर छंडिय ॥
सीस फूल मनिबंध । पास नग सेत रत्त बिच ॥
मनों कनक साषा प्रचंड । गहै काली उप्पंम रुच ॥
मनो सोम सहायक राहु होइ । कोटि भांन सोभा गही ॥
अदभुत द्रव्य ससि अहि गह्यौ । साष सुरंग भनावही ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस समय यहां क्यों आई हो ।

दूहा० ॥ सुरंग त्रिया सोमो नृपति । वचन सुपन कहि लाल ॥
का तूं सुंदरि किन वरन । क्यों ऊभी इहि काल ॥ छं० ॥ ७३ ॥

भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूं, मेरे लिये सुर असुर सब शंकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर मिले तो मैं बहुत रस स्रवती हूं ।

कवित्त ॥ बीर भोग वसुमती । बीर भोगी वर चाहैं ॥
हाइ भाइ कटाच्छ । बीर बीरां मन साहैं ॥

वीरां थी पद्दरी। विना वीरां वर बंकिय॥
हुं दिव्य नारी एह। सुरां असुरांनह संकिय॥
मिष्टांन पांन बहु भोग रस। रस सुगंध वीरन ट्रश्रीं॥
अनभंग वीर जोह्नित्त वरि। रस अनेक निहचै अश्रीं॥ छं०॥ ७४॥

गाथा॥ पंक जनय नीवामं। सुपनंतर राज दिठ्ठायं॥
जानिज्जै रति अंगं। कामं उक्काह दीपयं मालं॥ छं०॥ ७५॥

राजा का विचार में मग्न होना।

कवित्त॥ मन लगौ विसमित विचार। राज चिंता उप्पंनिय॥
भोमि बयन मन मझ्झ। सु कर वर गहि कर लिन्निय॥
सुभ लच्छिन उत्तंग। अंग अंग गुन पिन्निय॥
ता समांन छवि वांम। आंन करतार न किन्निय॥
मानीक वंस दानव कुलह। भोमि चरन्न निवास करि॥
जै जया सबद सुरपुर भयौ। करै केलि कलि इंद्र सर॥ छं०॥ ७६॥

पथ्वीराज से भूमि का कहना कि षट्टू बन में अगनित धन है।

दूहा०॥ कहै भूमि प्रथिराज सों। स्तुति दै करि मन सुद्धि॥
बसै द्रव्य अगनित सगुन। षट्टू पुर बन मद्धि॥ छं०॥ ७७॥

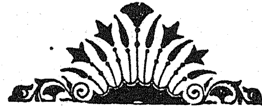
अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहां असंख्य धन रक्खा है॥

कवित्त॥ अजैपाल चक्कवै। द्रुग्ग अजमेर द्वापरह॥
तिहि बानिक पुर सिद्ध। लिषिय संजीत अपारह॥
हेम कोटि दह हून। इन देवर धर मझ्झह॥
घरी आइ इक पहर। देव देवी तत सुझ्झह॥
अस्नांन काल पूजादि वह। तहं पत्तौ दुज राज बर॥
अप्पी असीस मंगी लछिय। कांम कह्यौ दुजराज नर॥ छं०॥ ७८॥
इक्क सहस अपि द्रव्य। फेरि विप्रह अप्रमानं॥
सुनी सलछि बर विप्प। दई सुमहा बर थांनं॥
फिरि पत्तौ तहां राज। दियौ तब आप दुज्जबर॥

अप्प भयौ सुद्द राज। रहै धन रष्षि गड्यौ धर॥
मो मति द्रव्य तिहि थांन रहि। तास मोह राज़न करै॥
षायौ न कोइ षैहै न को। यों अरत्त अर्जुन फिरै॥ छं०॥ ७९॥

दूहा॥ को गड्डै षायौति को। को विलसै करि भेव॥
माया छाया मध्य दिन। ज्यों बिषया बल देव॥ छं०॥ ८०॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके भूमिस्वपन नाम सप्तदशो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ १७॥



अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिष्यते ॥

(अट्ठारहवां समय ।)

अनंगपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दूहा ॥ दिय पत्री कैमास कर । अनँगपाल कहि दूत ॥
बर बंची सामंत सत । विमत अष्षर नूत ॥ छं० ॥ १ ॥

पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज को लिखना कि मैं बूढ़ा हुआ, बद्रिकाश्रम जाता हूं, मेरा जो कुछ है सब तुम्हें समर्पण करता हूं ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री अजमेर द्रोन दुरगे । राजाधिपो राजनं ॥
पुत्री पुत्र पवित्र पथ्थ अक्षनैा । षित्री सवं तावनं ॥
मा वृद्धा वृद्ध विद्ध तप्प सरनं । वद्री निवर्त्तं तनं ॥
आभूमं पुर ग्राम हय गय समं । संकल्पितं त्वार्थयं ॥ छं० ॥ २ ॥

पत्र पढ़कर सब का बिचार करना कि क्या करना चाहिए ।

दूहा ॥ बंचि पत्र कैमास कर । न्टप सामंत समंत ॥
आइ दूत दिल्ली पुरह । सुबर बिचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३ ॥

कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहता है पहिले पृथा कुंआरि का व्याह रावल समरसिंह के साथ करना चाहिए ।

चौपाई ॥ इक कहै दिल्लिय चलि राजं । मातुल बोलि तुमं प्रथिराजं ॥
इक्क कहै भगिनी परनाइय । समर सिंघ चित्रंग सुराइय ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर नरिंद । चित्र चित्रंग देव दुति ॥
तिन सगपन संमुहाै । राज जानंत राज गति ॥
कै दिल्ली दिसि चलहि । बाल सेंवर अधिकारिय ॥
सोमेसर पितु सतें । करिय जिन बोल सुभारिय ॥

आवै न मंत विय बंध इत। अनँगपाल संमुह चलिय॥
ता पच्छ प्रथा आगम सु प्रथ। देवमत्त व्याहं थुलिय॥ छं०॥ ५॥

राजा सोमेश्वर सब सामंतो को एकत्र कर परामर्श करता है कि क्या कर्तव्य है, पुंडीर राय ने सलाह दी कि आता हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए।

सित सामंत रु नृप्प। बैठि सब सथ्थय मंतर॥
कैमासह चामंड। राय रामह बड गुज्जर॥
हाहुलि राय हमीर। सलष पांमार जैत सम॥
कह्यौ राज इम मात। तात अप्पी दिल्ली तम॥
पुंडीर राइ इम उच्चरै। करौ सकल आदर सुधर॥
उप्पाइ अनँत महि लिज्जियै। आदि ध्रंम अंमर असुर॥ छं०॥ ६॥

चंद बरदाई का मत पूछना।

चौपाई॥ सब भट पूछि पूछि कवि चंदह। तुम बरदाइ लहौ बुधि कंदह॥
किम अप्पै पितमात धरंनिय। सब बिरतंत कहौ मन करनिय॥ छं०॥ ७॥

चंद ने ध्यान कर के देवी का आह्वान किया और देवी की आज्ञा से कहा।

तब बरदाइ सुद्ध मन कीनौ। सुमरिय सकति ध्यांन मन लीनैन॥
देवी आइ कह्यौ बर तंतं। सो अष्षै प्रथिराज सुमंतं॥ छं०॥ ८॥

व्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तपैगा।

कवित्त॥ पुब्ब कथा बरतंत। कहो व्यासह ज्यों चंदह॥
सही भविष्यित बात। सुनी सो होइ नरिंदह॥
तोंअर बद्री जाइ। पथ समप्पै चहुआंनं॥
तपैं तेज रवि जेम। कहौं सरसें परवानं॥
इह मत्त सत्त मन्नौ मनह। अरु पुब्बह मंची सपुन॥
सामंत सित्त धर ध्रंम रत। सों पुब्बहु सच्चहु अपुन॥ छं०॥ ९॥

दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना (?) को वैराग्य क्यों हुआ।

दूहा ॥ दूत हजूर बुलाइ करि। पुच्छत पिथ्थ कुंआर ॥
क्यों मातुल हुअ धर अरत। सो कहो सत्त विचार ॥ छं० ॥ १० ॥

दूत का अनंगपाल की प्रशंसा।

गाथा ॥ दिल्ली अनंग नरिंदं। दंदं दहन दुजनं दलनायं ॥
त्रिगुन तेज सुअंगं। पुहमी इंदं पहुमी सरनायं ॥ छं० ॥ ११ ॥

अनंगपाल का प्रताप कथन।

दूहा ॥ बंक न्टपति इक अंक लौ। मिटत करभ्भर पांन ॥
हम इच्छै अवनी अटल। सचु न सुनियै कांन ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ गज गज्जत दरबार। घुरत दमंम बह धुअ ॥
बज्जत हय पुर तार। गाल गुज्जत सु डंट मव ॥
तंत तान झंझार। भमर गुंजार बास रस ॥
मुकट बंध राजान। लीन सेवंत हुकंम बस ॥
यों अवनि इंद्र तूंअर तपै। कँपै रोर मैाजन मनह ॥
चव बरन सरन सुष्षह रसहि। दुष्षन[1] किहिं दिष्षिय तनह ॥ छं० ॥ १३ ॥

अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन।

अनँगपाल तोंअर सुढाल। सोज वासंत दिल्लीय वर ॥
धर सुढार कालिंद पार। अठार व्रंन थर ॥
वर विहार प्रक्कार। विपन वाटिका बिराजिय ॥
ग्रिह उतांन वतांन। गोष जाली उच साजिय ॥
सब लोक असोक अनंद में। अप्प अप्प रह उद्धरिय ॥
जाजंन जाप अद्धा परषि। होम धोम धू विथ्थुरिय ॥ छं० ॥ १४ ॥

अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोंअर लोग दक्षिण दिशा को जा रहे हैं।

अति तोंअर परिवार। वृद्ध बहु रिद्ध अनूपं ॥
ध्रंम क्रंम बहु रीति। चलै सब लोक सु कूपं ॥

(१)–मो०–दुवन।

बीर सेन सुत बीर । पाल बहु काल धरंन्निय ॥
मन लग्गौ वैराग । करन क्रत ऊंच करन्निय ॥
निसि मध्य सुपन पिष्षियै दुरय । सब तूंअर दछिन चलै ॥
आरत्त माल कंठह कुसुम । दूरि मग्ग षोनी मिलै ॥ छं० ॥ १५ ॥

स्वप्न से जागकर अनंगपाल का हरि स्मरण करना ।

अनँगपाल पहु सुपन । देषि अप्पन चल चित्तह ॥
हरि हरि हरि हरि चवै । दुष्ट फुनि भूत विहत्तह ॥
निसा जांम इक सेष । अप्प सुपनैा फुनि पिष्षिय ॥
अप्प तरुनि सम उट्ठि । तिथ्थ थानक तप दिष्षिय ॥
इह लष्षि चित्त चंमक्कि न्रपति । पांनी पाय अँदोलि अप ॥
नरसिंघ नाम जंपिय पृथुक । सुत पुन नहीं पवित्त वप ॥ छं० ॥ १६ ॥

दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह जमुनाजी के किनारे आया है, दूसरा उस पार से तैरकर आया, दोनों सिंह आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नींद खुल गई, सबेरा हो गया ।

घटिय उभै निसि सेष । ताम सुपनैा फुनि पिष्षहि ॥
तट कालिंदी तीर । सिंघ क्रीडत दिव दिष्षहि ॥
ताम समै इक सिंघ । पार उत्तरि जल आयैा ॥
उभै सिंघ सो मिल्या । नेह क्रीड़ा दरसायैा ॥
बैठो सुसिंघ हथ मंडि करि । बैठि सनंमुष सिंघ दुअ ॥
जग्गायैा बीर सिंघह सुनन । ताम सुपिष्षौ प्रात हुअ ॥ छं० ॥ १७ ॥

अनंगपाल का व्यास जगजोति को बुला कर स्वप्न का प्रश्न करना ।

तब तूंअर चित चक्रत । उट्ठि एकंत मंत हुअ ॥
हरि जोतिह जग जोति । बोलि दैवग्य तथ्थ दुअ ॥
दिय आसंन तमोर । बचन आभासि भाव दिय ॥
कहैा सुपन विरतंत । आदि अंत कारंन तिय ।
संभलें सुपन मन दुज दुमन । देषि राज बुल्यौ न हसि ॥

किन करौं सब कंडौ दुमय । सब न्रिम्मान सुकाल बसि ॥ छं० ॥ १८ ॥

ब्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चौहान का राज्य होगा जैसे सिंह आया था, सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो ।

तब दैवग्य विचारि । एक एकन मुष लोकिय ॥
सब गंठी न्रिम्मान । एक कारन चित दो किय ॥
कहैं सुनौ सुत बीर । दिल्लि चहुआंन निवासं ॥
ज्यौं दिष्यौ तुम सिंघ । मिलै तूंअर सम तासं ॥
तप सद्धि तुमह सद्धौ सरग । जो इच्छौ उड्डुन अपन ॥
तूंअर विनास अग्गह अतुल । सब भविस्य कारन सुपन ॥ छं० ॥ १९ ॥

इस भविष्यबानी को सोचकर विचार करना कि दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र चौहान को देना चाहिए ।

दूहा ॥ सबैं भविस्य विचार मन । पुच्छि पुच्छ चहुआंन ।
तिहि अप्पों दिल्लिय सुदत । पसरै कित्ति प्रमांन ॥ छं० ॥ २० ॥

अनंगपाल का मन में यही निश्चय करलेना कि पृथ्वीराज को राज्य देकर बनबास करना चाहिए ।

कवित्त ॥ बालप्पन पन ग्यांन । गनह व्रिद्धप्पन आयौ ।
एक समे एकंत । चित्त परब्रह्म लगायौ ॥
पुच होइ संसार । भूमि रष्षै षल षंडै ॥
बढै वंस विसतार । कित्ति दसहूं दिसि मंडै ॥
अब करौं जोग जंगम जुगति । भुगति मुगति मंगो हरिय ॥
पुत्तीय पुत्त अप्पों पुहमि । इम चिंतन मन में धरिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर मत पूछना ।

छं० पद्धरी ॥ बोलेति मंत मंती प्रमांन । स्वामित भ्रम जे अंग जांनि ॥
रामह सुराज चिंतै सदाय । धुर भ्रंम्म रूप बांनी बदाइ ॥ छं० ॥ २२ ॥
एकंत महल राजन बयट्ठ । गुदराइ बोलि दरबांन तट्ठ ॥

संसार विरत मन दिष्षि राज। चौकट्ट कुंभ जल बूंद श्राज॥ छं०॥ २३॥
अग्यांन चित्त ज्यों दिठ्ठ ग्यांन। लोभीय चित्त ज्यों हरि न ध्यांन॥
कुलटा सुनेंन नहिं लज्ज जेम। कपटीय मनह नहि प्रेंम नेम॥ छं०॥ २४॥
बांनिक बनिज नहि प्रीति अंग। दिष्यौ सराज इन परि बिरंग॥
बुल्ले सु बिनय करि बैंन एव। कछु दुचित अज्ज मन लगत देव॥ छं०॥ २५॥
प्रति वात कहिय अब हमहिं ईस। बिन पुत्र सत्रु संसार दीस॥
न्टप वंस अंस जो पुत्र होइ। अवनीय अप्प रष्येति सोइ॥ छं०॥ २६॥
पुत्री सपुत्र चहुआंन पिथ्थ। तिन देउं राज मो सरन तिथ्थ॥
मंत्रीन मंत तब कहिय राज। चव जुगनि जुगति जे भूमि काज॥ छं०॥ २७॥
जिहि जियत जीय धर रमै श्रोर। तिहि नृप नहीं कहि लोक ठौर॥
जनमंत पुब्ब जिन तप्प होय। करि कष्ट कष्ट तप भूमि जोइ॥ छं०॥ २८॥
धर पाइ राइ धर भ्रंम बढ्ढि। धर भ्रंम क्रम सुरलोक चढ्ढि॥
जो गंग जुगति कल कठिन कांम। कहु षंगधार बिश्रांम ठांम॥ छं०॥ २९॥
हम सीष मांनि अनंगेस राइ। भूमिय सु तजै सुष कित्त जाइ॥
मंत्रीन राज तब कहीय बत्त। मानों कि वैर गहि गुंग गत्त॥ छं०॥ ३०॥

मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है इसे न छोड़ना चाहिए।

अरिल्ल॥ ते मंत्री जंपिय नृप बत्ते। किहि गुन राज भूमि अनुरत्ते॥
गत्ति अगत्ति जिन धर पर अष्षी। तिहि धरपति धर कबंहु न रष्षी॥ छं०॥ ३१॥

कवित्त॥ जो धरपति धर छंडि। भम्यौ नल राय हेत चिय॥
जो धरपति धर छंडि। तौ राम रष्षी न सीयतिय॥
जो धरपति छंडि। भ्रमिय सुत पंड षंड बन॥
धर कारन बिक्रंम। कियौ कग्गामिष भष्षन॥
धर मंडि न छंडि अनंग नृप। तिथ्थ भ्रमन राजिंद नन॥
धर काज राज धर षंडियै।। चिंत न दिष्षहि राज मन॥ छं०॥ ३२॥

मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना।

अरिल्ल॥ कहिय मंत्र नह मनिय राय। लिषि कागद अजमेर पठाय॥

सुनि बत्ती नृप भर किल कानं । राका चंद उदधि परमानं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवि चंद का मत सुनकर पृथ्वीराज का दिल्ली जाना निश्चय करना ।

दूहा ॥ सुनिय राज कवि चंद कथ । उर आनंद अपार ॥
पित मातुल मिद्दन नृपति । कियो सुगवन विचार ॥ छं० ॥ ३४ ॥

कैमास का भी यही मत होना ।

थप्पिय मत्त कैमास सोइ । धरनि धरत्तिय तथ्थ ॥
चढ़ि चहुआन सुसंचरिग । पुर दिल्लीय सँपत्त ॥ छं० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ सुनहि राज तूअर नरेस । एक बर बुद्धि विचारिय ॥
एक बनिक पाहार । सु बय अंगह तिह सारिय ॥
ताहि बाल वय नन्ह । सीन्ह हत दुल्लभ लीनौ ॥
कंस काल मन हुल्यौ । चित्त मति संत उपन्नौ ॥
अनंगेस राज तोंअर प्रगट । उह सुमत्ति जिन लेइ उर ॥
मम भूमि मुक्कि राज्यंद सुनि । भंम धुरा रष्षै न धर ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत ने आकर समाचार दिया, पृथ्वीराज का धूम धाम से दिल्ली की ओर यात्रा करना ।

दूहा ॥ कही दूत सारी विवरि । आदि अन्त जो बत्त ॥
चढि चहुआंन सु संचरिय । जुग्गिनि पुर लै बत्त ॥ छं० ॥ ३७ ॥

चौपाई ॥ लै सम सूर चल्यौ चहुआंनं । ऊगत सूर देव प्रति मांनं ॥
सगुन सकल संमुह बनि आए । गयौ राज दिल्ली समचाए ॥ छं० ॥ ३८ ॥
गयौ राज दिल्ली परिमानं । मिले सूर अनंगेस निधानं ॥
देषि भूमि दिसि थांन प्रामानं । राजा मुष बल्यौ चहुआंनं ॥ छं० ॥ ३९ ॥

अनंगपाल ने दौहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा दिन दिखला कर दिल्ली का राज्य लिख दिया ।

दूहा ॥ मातुल पित भिंट्यो सु पहु । मिलि अति उच्छव कीन ॥
बासुर सुर रवि इंद बल । लिषि दिल्ली पुर दीन ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन।

छंद उधोर ॥ पयो हर पाइ पाइह अंत। दह जुग मत्त रत्त गुरंत ॥
भाषंत चंद छंद उधोर। प्रति षग कच्ची पन्नग जोर ॥ छं० ॥ ४१ ॥
लिषि वर धटी महूरत मत्त। दुज घन वेद विद्यव सत्त ॥
आसन हेम पट्ट सुढार। मांनिक मुत्ति दुत्ति उजार ॥ छं० ॥ ४२ ॥
मंडित कलस विप्र विनोद। राजन अनिहि मानिय[1] मोद ॥
धुनि वर विप्र मंडत वेउ। माननी सकल साजन नेउ ॥ छं० ॥ ४३ ॥
बज्जहि बहुल बज्जन भार। गांनहि मांन ग्रांम सुतार ॥
नच्चि त्रिय पाच भरह सुभाव। गांनहि सिंघ विक्रम साव ॥ छं० ॥ ४४ ॥
सज्जित सघन सिंदुर दंति। कच सु पुहप सोभन पंति ॥
धवलें चढिय निरषति नारि। गौषन रंध्र सुराजकुँ आरि ॥ छं० ॥ ४५ ॥
दमकत दसन हंस विराज। मानहु तडित अभ्भ अग्राज ॥
वसनह रसमि रज्जित कोर। सजि सित सघन वासव जोर ॥ छं० ॥ ४६ ॥
राजत श्रवन रवनि ताटंक। राका मनहु सोभ मयंक ॥
सोभत लाल कुंडल कंति। मनु बुध इंद इंद मिलंत ॥ छं० ॥ ४७ ॥
चढि सु पहु सोहत दंति। मनों इंद्र ऐरापंति ॥
मांडत विप्र वेद सुवेद। जग्यहि जपति भेदहि भेद ॥ छं० ॥ ४८ ॥
पट्टहि पुत्ति पुत्त अरोहि। विंजत न्रप्प चामर सोह ॥
मांडत मुकुट उत्त सुमंग। रचि बहु धात मौल सुरंग ॥ छं० ॥ ४९ ॥
दुति कलस करिय तास। मारिच कोटि इंद उहास ॥
धुम्र सम मंडि कच अजेर। मनों हरि बाल बिंब सुमेर ॥ छं० ॥ ५० ॥
तिलकह जटित रंजित भाल। झल हल झरहि दीप उजाल ॥
परचहि मुत्ति कुंदन थाल। पूरति सुपहु पूजति बाल ॥ छं० ॥ ५१ ॥
परचति सुकर अनंगपाल। सोहति कंठ मोतिन माल ॥
दुज वर चवै असिष बेद। मांननि गांन तन सु अषेद ॥ छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो०–मानत।
(२) मो०–भाल।

हय गय हथ दिल्लिय देस । समप्पहि पुत्ती पुत नरेस ॥
षोडस दांन पूरन मांन । अप्पे विप्र धेन सुग्यांन ॥ छं० ॥ ५३ ॥
थप्प विप्र गेव सुग्यांन । ग्रहन सुतप्प तप्पिय थांन ॥
बद्रिय नाथ धरिय सु ध्यांन । ....॥ छं० ॥ ५४ ॥
तजि ग्रह मोह माया जाल । सज्जिय जोग वंचिय काल ॥
रचिय बांन प्रस्थह रूप । क्रमि रह तप्प तप्पित भूप ॥ छं० ॥ ५५ ॥
हय गय तरुनि द्रव्य सुदेस । तिन वर तजिय राज नरेस ॥
संवत ईस तीस रु अट्ठ । चलि न्टप हेम गहि कर कट्ठ ॥ छं० ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥ एकादस संवतह । अट्ठ अग्ग हति तीस भनि ॥
प्रथि सुरति तहां हेम । सुद्ध मगसिर सुमास गनि ॥
सेत पष्ष पंचमीय । सकल वासर गुर पूरन ॥
सुदि मगसिर सम इंद । जोग सद्धहि सिध चूरन ॥
पहु अनँगपाल अप्पिय पहुमि । पुत्तिय पुत्त पवित्त मन ॥
कंद्यौ सुमोह सुष तन तरुनि । पति बद्री सज्जे सरन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

शुभ लग्न दिखा कर बड़ी तयारी और विधि के साथ अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट बैठाकर अपने हाथ से राज्य तिलक करना ।

छंद पद्धरी ॥ सुभ लगन दीन दिल्लिय नरिंद । तुम करहु राज जनु पहुमि इंद ॥
सुनि श्रवन सद्द आनंद अंग[1] । राका रयन जनु दधि तरंग ॥छं०॥५८॥
बुल्लाइ फेरि दुज बर प्रमांन । थपि लगन मगन अंम्रत समांन ॥
जिन वचन व्यास मिट्टै न कोइ । स हजह कहंत सुष सिद्ध होइ ॥छं०॥५९॥
मंडप्प मंडि सुतधार बांनि । रचि व्याह कुम्भ रुकमनि मानि ॥
उच्छव अनंत बाजंत बाज । जिन घुमर घोर रव गयन लाज ॥छं०॥६०॥
न्टत्यंत नृत्य पातर प्रवीन । तिन रष्ष अंग मुनि मन अधीन ॥
सब नगर उड्डि गुड्डी अनंत । कैलास विपन बांनिक बसंत ॥छं०॥६१॥
आरास सुब्रन बनिकाच कोह । देषंत नैंन मुनि मगन मोह ॥
बहुरंग ब्रंन चिचित अवास । साला सुरंग गौषन उजास ॥ छं०॥६२॥

(१) मो-कंद ।

अंगन अनंग दिपि रचत भूलि । चिगुन निवास सुरवास फूलि ॥
जाजिम पट्ट जरकस जराव । अवनीस दिष्षि जकि धरत पाव ॥ छं० ॥ ६३ ॥
कुट्टंत तार सहजह सुरंग । भ्रंगीन श्रंग भय भ्रमत अंध ॥
नव ग्रही वास सुर वास साज । तहां बैठि आंनि अनगेस राज ॥ छं० ॥ ६४ ॥
बुल्लाय सब्ब अप भर समान । द्रिगपाल जोर तन तेज भान ॥
लघु वेस तरुन के वृद्ध वीर । कछ वाच साच दजंग श्रीर ॥ छं० ॥ ६५ ॥
इंद्रोन मोह जिन अंग भंग । संग्राम रंग जनु कप्पि पंग ॥
मच्छर हुलास जिन अंग सोह । चित जरत उठि सिर समय कोह ॥ छं० ॥ ६६ ॥
नव रस विलास निय नारि रंग । अनिवरत रंग भीषम प्रसंग ॥
षग दान मान परिमान जोइ । कवि कहै वंन जो आंनि होइ ॥ छं० ॥ ६७ ॥
कुल रीति नीति हिंदून राह । दारुन्न दुसह दुभ्भर दुवाह ॥
अस बैठि भूप सब सभा आंनि । सुर इंद्र कोटि तेतीस जांनि ॥ छं० ॥ ६८ ॥
तहां धरिय सिंघासन कनक कंति । जिन हीर लाल पीरोज पंति ॥
मानिक्क चूनि मनिमुत्ति भंति । चकचोंध दिष्ट बुधि भूलि जंति ॥ छं० ॥ ६९ ॥
नृमान लषित पुष्पह उपाइ । तहां बैठि भूप कुल सुद्ध आइ ॥
आसन्न असु तहां धीरय आंन । सुरजंपि तथ्थ जै जया बांन ॥ छं० ॥ ७० ॥
प्रथिराज बोलि बैठाय पाठ । धुनि करत बेद तहां विप्र ठाठ ॥
बिय कंध पच्छ बिय चमर ढार । रजि रूप जांनि अश्विनि कुमार ॥ छं० ॥ ७१ ॥
धरि कनक दंड सिर छत्र सोस । सिर चंद कंति कैलास ईस ॥
गायंत गांन कामिनि उतुंग । कलयंठ कंठ सुर करत भंग ॥ छं० ॥ ७२ ॥
मुसकत हसंत ऐंडत अलोल । सहजन कटाच्छ छंडत सलोल ॥
रस भरिय एक आलसय भंग । मुनि देषि अंग मति होत पंग ॥ छं० ॥ ७३ ॥
इक अलसि फेरि ऐंडति अलोल । छंडंत असित सित श्रवन कोर ॥
अंगन अवास सालानि चूरि । जालीन गौष भरि रही पूरि ॥ छं० ॥ ७४ ॥
बंदीन ठाठ बिरदह बुलंत । नव रस विलास रसना तुलंत ॥
सधि लग्न मुहूरत दुज प्रवीन । अनगेस राज तव तिलक कीन ॥ छं० ॥ ७५ ॥
बजि सबद पंच बाजे बजंत । तिन सोर घोर दरिया लजंत ॥
जित नित्त अत्ति उच्छव रजंत । बरषाह पाइ जनु जग गजंत ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना।

छं० भुजंगी ॥ तहां बैठयं राज दिल्ली प्रमानं। सिरं आतपत्रं सु दीनो निधानं ॥
बजै दुंदुभी भीत[1] आकास थानं। .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥
मिले आइ सब लोइ ते सूर बीरं। जिनै आदरं राइ दीनौ सरीरं ॥
झनक्केति ताजी किनक्कै करीनं। महामत्त दीसै सुमत्ती सुभीनं॥ छं० ॥ ७८ ॥
दूहा ॥ करि जुहार भट सुभट थट[2]। प्रजा महाजन आइ ॥
सब काहू मन यौं भयौ। ज्यों जलचर जल पाइ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

बड़ी तयारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना।

सत हथ्थी दस सित हुअस। मानक मुत्तिय लाल ॥
सवा लष्ष सोव्रन महुर। गनै और को माल ॥ छं० ॥ ८० ॥
चढन जोग हथ्थी तबै। मंगवायौ मदमंत ॥
जनु घन बद्दल पवन बसि। बग पंकति ता दंत ॥ छं० ॥ ८१ ॥
जो रावर जंजीर बसि। पवन न पावै जांन ॥
अग्ग मंडि डारै प्रबल। सायर अजा समांन ॥ छं० ॥ ८२ ॥
छंद पद्धरी॥ आरुढ इंद्र सम गज गहर। ज्वालाति जोति जनु किरन सूर ॥
जरकस्स जराव औछार मंडि। सुरराज विपन सोभात षंडि ॥ छं०॥ ८३ ॥
रेसम्म रास नारी बनाइ। घुघ्घर घमंक कंचन जराइ ॥
आरुढ राज आसन अनंद। सुर पुफ्फ विष्टि दुअ दीन बंदि॥ छं०॥ ८४॥
संगरी राव पच्छैं अरोह। कर कनक दंड सिर छत्र सोह ॥
विय बांह चमर ढर गाह धारि। रवि चंद किरनि जनु सिर पसारि॥ छं०॥ ८५॥
तिन पच्छ पंति दंतीन साजि। सामंत सूर सब चढ़े गाजि ॥
तिन पच्छ तुरी तत्ते निवानि। बर पवन रुढ मन भए जानि ॥छं०॥ ८६॥
छत्तीस वज्ज वज्जे सु बाज। विरदैत विरदै चंद राज ॥
अवधारि मध्य बाजार बीच। केसरि कपूर तहँ अगर कीच ॥ छं०॥ ८७॥
जित तित गिरंत जारीन फूल। छबि छल्लै छैल नवला अभूल ॥
मन मगन मुक्त अष्षित उछार। जलजान मनों बसि ओस भार ॥छं०॥८८॥

१) मो०--घोस।
(२) कृ० को० ए०--भर सुभट सब।

सब परज अरज प्रभु करत एह । इक भूमि ग्रेह थिर राज देह ॥
नर नारि निरषि मनु मुदित मोह । लगि चंद सूर चिरजीव होह ॥छं०॥८९॥
षट दरस दरसि आसिष्ष देत । प्रथिराज बंदि सिर झेलि लेत ॥
फिरि राज आइ अंदर अवास । जहं रहत मुग्ध मध्धा सुवास ॥छं०॥९०॥
सनमान कीन रनिवास राइ । जस मन्नि सत्त सत सिद्ध पाइ ॥ छं० ॥ ९१ ॥

पृथ्वीराज का रनिवास में आना, रानियों का मंगलाचार करना ।

दूहा ॥ अन्य न्रपति गन सुंदरिन । मधि अंगन रनिवास ॥
दिष्षत छबि छक्की सकल । मिल त्यंजन[1] दिन तास ॥ छं० ॥ ९२ ॥
कनक किउ कुंदेरनह । भरत कि भरिता अंग ॥
जलज नैन मुष कर चरन । जनु धरि अंग अनंग ॥ छं० ॥ ९३ ॥
मधुर कंति मुष मधु मुदित । उदित अर्क आकार ॥
तारि चंन तहनिय कहत । धरनि सहौ तुम भार ॥ छं० ॥ ९४ ॥
गाथा ॥ बनिता बिनय सुकरियं । धरियं भ्रंम केन अंगायं ॥
के छबि छकित छलीयं । भइयं ववसि पिष्षि पिथ्थायं ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थवास के लिये जाना ।

दूहा ॥ जुग्गिनिपुर चहुआंन दिय । पुत्रीपुत्र नरेस ॥
अनँगपाल तोंअर तिनिय । किय तीरथ परवेस ॥ छं० ॥ ९६ ॥

यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रसन्न होना ।

कवित्त ॥ सुनि सोमेसर सूर । हियै बढिय आनंद सुष ॥
अति अनंद त्रिंमलय । धनि मो पुत्र दीह रुष ॥
बर बांने बंधियै । मिले सामंत सूर सब ॥
सरित समुद्द प्रमांन । मिलिय आहत्त वीर सब ॥
गोधूर लगन चहुन न्रपति । बाल चंद कल न्रपति हुअ ॥
मांननिय मांन जानै सकल । नूर परतीन समत्त धुअ ॥ छं० ॥ ९७ ॥

(१) ह-सुम सध्यंजन ।

छंद पद्धरी ॥ बंदहि विवेक अविवेक पाइ । विंभहि मुकट सों मुकट वाइ[1] ॥
नग नगन जरहि किरनी जराइ । जाने कि अगनि अनहित्त वाइ ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

छंद चोटक ॥ भयभीत सुनंत चढंत कला । जनियै गुरदेव सुमंग मला ॥
बर बज्जि निसांन दिसांन धुअं । नृप राज सुकाज ज्यौं ध्रंम सुअं ॥ छं० ॥ ९९ ॥
प्रगटी जनु कांमय कोटि कला । करि उज्जल गज्ज सुमंत मला ॥
बिसरे द्रगपाल दसों दिसयं । प्रगटी जनु काम कला ससियं ॥ छं० ॥ १०० ॥
रन नंकिय पाइ कमल्ल भुअं । छिति मित्त छिपाधिप चित्त धुअं ॥
प्रगटे प्रथुपालक पंच कलं । तिनमें प्रथुराज प्रथून बलं ॥ छं० ॥ १०१ ॥
परधानति भीम कुंआर तिनं । नृप सेवत जास सुपाइ गनं ॥ छं० ॥ १०२ ॥

दूहा ॥ धन छत्तिय नृपराज तपि । ढिल्ली ह्वै घन साज ॥
जानिज्जै जंगल नृपति । मन उदद्धि गुन पाज ॥ छं० ॥ १०३ ॥

आशीर्वाद ।

सित छ अग्ग सामंत सजि । बजि निघोष सुनंद ॥
सोमेसर नंदन अटल । ढिल्ली सुबसि नरिंद ॥ छं० ॥ १०४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल दिल्ली दान नाम अष्टदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १८ ॥



(१) मो-चाइ ।

अथ माधो भाट कथा लिष्यते ॥

(उन्नीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना ।

कवित्त ॥ किय निवास प्रथिराज । आइ चहुआंन वीर वर ॥
पुज्ज धाम जुगिनी समांन । बलि दीय थांन थिर ॥
दस दिसांन दस मष्षिय । किन्न[1] सहु नयर दीन बलि ॥
अवर देव पुज्जे सु सेव[2] । नैवेद धूप मिलि ॥
पुज्ज सु दीय दानानि अथ । अथ पंषि दीय चंडरस ॥
कंपै सुसीम तहां राषि भट । जस जु प्रगगयौ दिसि विदिस ॥ छं० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन के कवि माधोभाट का गुण वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ कवी कब्बिचंदं सुमाधौ नरिंदं । सुरंतान भट्टं मधू माद इंदं ॥
कवी एक भंडी भिडिंभी प्रमानं । किते तार झंकार बिद्या सुजानं ॥छं०॥२॥
विधं मंच पची पढ़ै वेद बानी । तिनं भट्ट कोनं जु पूजै गियानी ॥
पढै तर्क वित्तर्क चौसट्ठि विद्या । तिनं रूप के भेद चौरास सद्या ॥ छं०॥३॥
सतं मद्धि घटियं सुषोडस प्रमानं । इते छंद विच्छंद छंदे कलानं ॥
महा रूप रंगंति गंगा प्रकारं । तिनं वाइकं भट्ट बोलंत सारं ॥ छं० ॥ ४ ॥

माधो भाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना ।

छंद चोटक ॥ दिषि भट्ट सुथांनक दिल्लि धरं । जमना जल राजत पापहरं ॥
तिहं भ्रंम सुतं त्रिप भित्त दई[3] । सोइ दिल्लिय राजस राज भई[4] ॥छं०॥५॥
इंद्र पथ्थ सु पूरब नाम धरं । इन काज सु पंडव जुद्ध जुरं ॥
चव पंथ पती पति पाप हरै । रवि की तनया तन तेज दुरै ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) मो—किल ।
(२) मो—पुज्जेति सेव ।
(३) मो—दिष्षतई ।
(४) मो—गई ।

इतनी विधि देषत थान गयौ। अग लोक समान सु तेज मयौ ॥ छं० ॥ ७॥

दूहा ॥ इहि बिधि दिष्षिय सकल द्रिग। पुर ढिल्ली उनमान ॥
थांन बीर चहुआंन कौ। प्रति कैलास समांन ॥ छं० ॥ ८ ॥

पृथ्वीराज के इन्द्र के समान राज्य करने का वर्णन।

इंद रूप ढिल्लिय नृपति। इंद्रासन पुरि ढिल्ल ॥
सचीवा इंछिनि सुव्रत। सुव्रत वृत्त गुन किल्ल ॥ ९ ॥
सुरपति सम सामंतपति। अति अनूप मति सार ॥
कनिष्ट आंन हिंदुवांन सब। इह गह अत्तें भार ॥ छं० ॥ १० ॥
इह चरित्त दिष्षित नयन। गयौ भट्ट नृप थांन ॥
मय[1] मनुं सुमन सुरष्षि कै। रच्यौ प्रथी पर आंन ॥ छं० ॥ ११ ॥

माधो भाट का पृथ्वीराज के दर्बार में भेद लेने को आना और अपने गुणों से लोगों को रिझाना।

कवित्त ॥ दिषि भट्ट माधौ नरिंद। राजधांनी चहुआंनी ॥
दूत भेद अनुसरै। दूत लग्यौ परिमानी ॥
हिंदु भाष षट रस। मेछ पारसी उच्चारै ॥
जहां अछिर कोइ कहै। वांन तैसीं विधि मारै ॥
भाषा कवित्त नाटिक सकल। गीत छंद गुन उच्चरै ॥
जानंत तर्क वितर्क सब। राग बिरागह अनुसरै ॥ छं० ॥ १२ ॥

गाथा ॥ हिंदू हिंदू अवचने। रचने मेछायं मेछयौ बयनं ॥
जं जं जेम समुझ्झै। तं तं समुझायं माधवं भट्टं ॥ छं० ॥ १३ ॥

ध्रमाइन कायस्थ का माधो भाट को सब भेद देना।

कवित्त ॥ ध्रंमाइन कायथ सुरंग। मिल्यौ बर भट्ट प्रमानं ॥
जू कछु भेद चहुआंन। दियौ निहचै सुरतानं ॥
बिध्रम सुध्रम विसाख। कहो निध्रम परिमानं ॥
कग्गद मंत चलाइ। मंत मग्गी चहुआनं ॥
दै लेह दांन संभरि धनी। रोर सतम करभांन बर ॥
मथ मंत मंत चिंतान करि। दयौ दांन इत्तोति नर ॥ छं० ॥ १४ ॥

(१) मो-बह।

पृथ्वीराज का माधो भाट को बहुत कुछ इनाम देना।

दूहा ॥ दस हथ्थी मै मत्त करि। भर मंडन मुष अग्ग ॥
अरि षंडन मंडन फवज। लेइ बीर बहु बग्ग ॥ छं० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ दस हथ्थी सत एक। एक कंजी कंमानं ॥
कंजी तौनति पंच। वांन सोहै परिमानं ॥
दियौ साह सुरतांन। भट्ट दीने परधानिय ॥
कछ मोती बर माल। कनक इक तोल सुजानिय ॥
दिय प्रथिराज सुराज बलि। द्रव्य सुबर चतुरंग बिधि ॥
माधव सुभट्ट रंजे न्टपति। चंद कही असतुति समधि ॥ छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ हेमरु है गै अंबरह। सरसैं बुद्धि गंभीर ॥
सत्त सुमति आमित्त गति। माधौ भट्ट सुबीर ॥ छं० ॥ १७ ॥

बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधो भाट को दिल्ली में रखना।

कवित्त ॥ दियौ दान बर भट्ट। मास रष्षै दिल्लीधर ॥
बहु भोजन प्रति स्वाद। इंद इंद्रास देव गुर ॥
मन लीनो न्टप हथ्थ[1]। भट्ट न्टप[2] इंद प्रमान्यौ ॥
गए दरिद्द जनमंत। चिंत्य चिंता घट भान्यौ[3] ॥
अप्पै सु दांन सामंत सब। सुहन मत्त हत्तह सुधरि ॥
भै पूर पूर पूरन करो। जा चांया भग्गी सुउरि ॥ छं० ॥ १८ ॥

दूहा ॥ जात जात जे जात है। गए गवन किन कीन्ह ॥
इत्तय बन पूरन नहीं। मत्ति गहत्र तन चीन्ह ॥ छं० ॥ १९ ॥

बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर माधो भाट का ग़ज़नी लौट आना।

अरिल्ल ॥ लै सुदांन गज्जन पुर आयौ। इतौ दांन जनमंत न पायौ ॥
महादांन विद्या परकारं। दियौ राज[4] चौहांन विचारं ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) मो-बरभट्ट। (२) मो-न्टप बर।
(३) मो-जान्यौ। (४) मो-दान।

माधो भाट का शहाबुद्दीन के दर्बार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना।

छंद पद्धरी ॥ गह अत्त मत्त कविराज राज। श्रृंगार हास्य अद्भुत विराज ॥
तिहि जाइ कीन न्टप किति वैन। तिम तिम सुहाय सुरतान चैंन॥ छं०॥ २१॥
संभरिय वत्त उभ्भरि उरत्त। सुरतान वेन गोरी बिरत्त ॥
मातुलह वंस चहुआंन राज। दै गयौ सकल दिल्लीस काज॥छं०॥२२॥
है गै भँडार बिन किति भूमि। की बाज मार आहति कूमि ॥
दैवत्त करै इह मनुक लोइ। की बाज जनम आहत सोइ ॥छं०॥२३॥
अनगेस राज तजि तिथ्थ जाइ। सामंत सूर वर मिले आइ ॥
अजहूंनि सेन इक मनी तथ्थ[1]। गोरी सहाब इह घात तथ्थ ॥ छं०॥ २४॥
दूहा ॥ फुट्टिय वत्त प्रहास सब। वसि दिल्लिय चहुआंन ॥
बंदिन माधौ आय कहि। सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ॥ २५ ॥
है गै दिल्लिय देस सब। अरु जु अवर द्रब अप्प ॥
सो सब दै चहुआंन को[2]। अनँगपाल गय तप्प ॥ छं० ॥ २६ ॥

अनंगपाल के बनबास का वर्णन।

लै चल्यौ संग निज तरुनि। दै दिल्लिय अनगेस ॥
मन वच क्रम बद्री चल्यौ। साधन जोग जोगेस ॥ छं० ॥ २७ ॥

यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना।

सुनत सटप्पट लग्गि मन। उर गोरी बर वीर ॥
पल पल षिन जुग जात जिय। बढ्ढिय बिषम पल पीर ॥ छं० ॥२८॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिये चलना, फौज़ की शोभा वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ चढ्यौ मंगि सुरतांन साहाब ताजी। जरं जीन अंमोल साकत्ति साजी ॥
बरं बासनं रत्तहेमं हमेलं। मनो मुत्तिमाला बनी लष्ष जेलं[3] ॥छं०॥ २९॥

(१) मो-सथ्थ।
(२) कृ-सो समपय प्रिथराज कूं।
(३) मो-सेलं।

जरं हेम कचं सुभं सोभ सीसं । उवं लाल थंभं सिरं सूर दीसं ॥
अगे लक्करी लाल दो सहस सोहं । जिनं आइ जक्की सहं कोइ कोहं ॥ छं० ॥ ३० ॥
अगें साहि गोरी निसूरत्ति षानं । लग्यौ बंदि माधौ पढै विद्वानं ॥
दिसा दाहिनी षांन तत्तार गोरी । दिसं षां षुरासांन रजि वांम जोरी ॥ छं० ॥ ३१ ॥
उभै पुट्ठि मम रेज मुलतांन षानं । सुतं साहि महम्मंद सोहित्त षानं ॥
मुषं अग्ग बेतं डसे रत्न साहं । सितं चौर बांने सितं गज्ज गाहं ॥ छं० ॥ ३२ ॥
कही बत्त गोरी तिनं सों सबांही । कहैं जेव जब्बाव पुछंत सांही ॥
अपं सेन सथ्थं सहं सूर सथ्थें । तिनं जाति बांने कहे कोंन कथ्थें ॥ छं० ॥ ३३ ॥
चले आइ सो सेषची मन्न थानं । दयं छंडि दरबार साहाब तानं ॥
दरं रष्षि दरवन अप मभ्भिक्क आयं । सबै बोलि उमराति सब अप्प भायं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ ओर रोकि अप मभ्भक्क गय । नमि पय सेष चिमंन ॥
अप्प प्रसंसिय विवह परि । बैठि पयंधरि पंन ॥ छं० ॥ ३५ ॥
सीष सु पुच्छिय सेस पहु । बोलि पंचदस षांन ॥
आसन छंडिय अप्प तिन । दिय आदर सनमांन ॥ छं० ॥ ३६ ॥

शहाबुद्दीन का तातारखां आदि सरदारों को इकट्ठा करके सलाह पूछना ।

छंद पद्धरी ॥ गोरी ततार गुरलज्ज भार । षुरसांन षांन मति सिंधुसार ॥
निसुरत्ति षांन जेहांन मीर । ममरेज षांन बल लाज नीर ॥ छं० ॥ ३७ ॥
आजांन षांन सेरन वितंड । मुलतांन षांन मुहबत्ति बंड ॥
मारुप्त मीर जमुनह सुमीर । साहाब षांन गरुअत गंभीर ॥ छं० ॥ ३८ ॥
रुस्तंम षांन बल संक जास । गज्जनी षांन रिन साहि आस ॥
गजनीय लज्ज गुर तेज गंज । महमुंद मीर अरि तेज भंज ॥ छं० ॥ ३९ ॥
गोरीय बंन काबी बलाइ । मृगराज जेम मृग अरि पलाइ ॥
साहब सलाम सब करी आइ । चीमंन सेष नमि परसि पाइ ॥ छं० ॥ ४० ॥
बढ्ढे सु सब कर कर समुट्ठि । षिन एक बैठि साहाब उट्ठि ॥
गयौ सेष बाग तरु चंप नूप । बैठक्क तथ्थ चौरा अनूप ॥ छं० ॥ ४१ ॥

आसंन मंडि बैठो सु साहि। बैठक्क दई उमराव ताहि ॥
उच्चस्यौ बीर गोरी सु संच। पुच्छिय जु सब मंचह प्रपंच ॥ छं० ॥ ४२॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना।

कवित्त ॥ कहिय साहि साहाब। षांन तत्तार सुनौ सब ॥
बसि दिल्लिय चहुआंन। कही माधौ जु चंड कब ॥
अनगपाल गय तप्प। देस है गै सु द्रव्य सह ॥
सो समप्पि चहुआंन। अप्प सज्यौ सुबंन रह ॥
अरि मत्त अग्ग बर जोर हुअ। अरु लंभी चतुरंग श्रिया ॥
सधियै बेगरन षेत षल। जौ लौं जोर न बंधिया ॥ छं० ॥ ४३ ॥

तातारख़ां का सलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करना चाहिए

तब कहै षांन तत्तार। साह साहाब चित्त धरि ॥
अरि अनंत बर जोर। याहि सधियै सनद्ध करि ॥
तब दिष्यौ दल जोर। सूर सामंत स्मथ्थं ॥
अन्त तेज मत अनंत। बेग रन बहै सुहथ्थं ॥
दल जोर जोर भंडार घन। करि सुचित्त भर एक मन ॥
भरहथ्थ जीव दिल्लिय सहर। मम करि अरि सद्दन सयन ॥ छं० ॥ ४४ ॥

तातारख़ां की बात का सब लोगों का सकारना, रुस्तमखां का मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवे।

छंद पद्धरी ॥ षुरसांन षांन कहि सुनि ततार। संची सु बत्त जंपै सुढार ॥
दल मेलि बेग सद्धौ सुमंत। बंधीय बंधान अरि करिय अंत ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जेहांन बोर जंपे तमंकि। तुम उरौ मीच कुट्टौ न अंक ॥
सद्धियै दोरि करि रुचु सथ्थ। नन होइ कांम दष्यौ सुहथ्थ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
जंपी सु षांन निसु रत्ति तब्ब। बिन बंध बत्त डिंभ रु गब्ब ॥
चहरन देषि चहुआंन तुम्ह। जंपौ सबत्त मंतह गुरंम्म ॥ छं० ॥ ४ ॥ ॥

उच्चरिय षांन साहाब सक्क । वै वृद्ध भएं भय वुद्ध जक्क ॥
भंपियै जुद्ध पावक्क पाइ । बंध्यौ विराम ना निजरि आइ ॥ छं० ॥ ४८ ॥
बल तुच्छ अरिय सह्यौ सु साहि । षल दुष्ट जोर बंध्यौ न जाइ ॥
मुलतांन षांन हसि कहिय बत्त । मम रेज षांन दावो विगत्त ॥ छं० ॥ ४९ ॥
एंजाब गरुव छंड्यो गुमांन । धन मह मंत वयची प्रमांन ॥
कालिंग पुलै जिम जुध पुलाइ । गह अत्त साहि साहाब जाइ ॥ छं० ॥ ५० ॥
उक्कसें षांन सेरन विलंड । विकसे कहिय कर षग्ग मंड ॥
गोरिय अवनि तुम गनो गत्ति । भय भीत मृत्य दीसहि सुमत्ति ॥ छं० ॥ ५१ ॥
बिनसंत काज क्यों पातिसाह । पूछै सुमंत अच्छै सुभाह ॥
जंपयो बत्त काली बलाइ । मो विना सेन गोरी पलाइ ॥ छं० ॥ ५२ ॥
काल ग्रहंत मन आइ मुभ्भक्क । मंडयो जुद्ध मो बिन अबुभ्भक्क ॥
तमस्से मीर तब फते जंग । पुज्जेन सेन पंषी कुलंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥
सम वरन साज सज्जै न संग । हरि तेज तेज दष्षै अभंग ॥
अरि सार जैत जांनो न भेव । उच्चरो मंत गुन सुबर गेव ॥ छं० ॥ ५४ ॥
तब मीर जमन गज्जनी षांन । महमुह मीर मारुत्त षांन ॥
उठे सुच्यार तम तेग भारि । बुल्ले बिहँसि मत्ते विचारि ॥ छं० ॥ ५५ ॥
थिर जुद्ध मंत रच्चौ सु सब्ब । बैठनह सूर नहि भ्रंम अब्ब ॥
कीयो हुकंम साहाब जब्ब । ग्रहि तेग हनै प्रथिराज तब्ब ॥ छं० ॥ ५६ ॥
रुस्तंम कही साहाब अज्ज । मुक्कलो दूत जुध करो कज्ज ॥
लषि आवै चर सु हिंदू चरित्त । तब लग्गि सेन सज्जो सुदृत्त ॥ छं० ॥ ५७ ॥
मंन्यौ सुमंत सब चित्त सार । मंड्यौ सुमंत बर चरन चार ॥
रुस्तंम वाह धरि चक्त दीठ । बुल्लाइ सिंघ बर चर गरीठ ॥ छं० ॥ ५८ ॥

छंद भुजंगी ॥ स्वयं भेद प्रकार भेदं प्रमानं । सुनो षांन तत्तार षांनं सुमानं ॥
स्वयं साहि साहाब साहाब सूरं । मनो भेद बंभान कुत्या करूरं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
घानं तेज तेजं प्रकारंत न्यारे । कही कब्बि चंदं उपम्मा उचारे ॥ छं० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ कहत चंद बर भट्ट फुनि । सकल कथा परिमांन ॥
जु कक्कू भट माधो कही । सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ॥ ६१ ॥

छंद पद्धरी ॥ उच्चऱ्यौ चंद बरदाइ मंडि । सुरतांन षांन आरज्ज छंडि ॥
बर बीर धीर तत्तार षंडि । काली बलाइ सेरन वितंडि ॥ छं० ॥ ६२ ॥
हबसी हुजाब षुरसांन बंध । पीरोज षांन निज बंध सिंघ ॥
पर द्वार पौरि दस दस प्रमांन । राजन अनेक भर सुभ्भि थांन ॥ छं०॥ ६३॥
तिन व्यंटि सभा दिष्षी नरिंद । मनों जामिनी तेज रवि सबर इंद ॥
बंदै न चंद तत्तार षांन । पीरोज बंध हबसी समांन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
षुरसांन षांन जल्लाल बीर । सेरन वितंड माधौ सरीर ॥
हुस्सेन सूर भट्टी प्रकार । साहै जु साहि ज्यौं चंद सार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
बैरंम षांन जमनेस जोर । जमजोर बहै तिन बल सुथोर ॥
पीरोज षांन माची मरद्द । सोभंत तेज ससि बर सरद्द ॥ छं० ॥ ६६ ॥
उल्लेग षांन गाभरू मीर । बेधंत सत्त धातह सु तीर ॥
तुम तेज षांन ममरेज मीर । षुरसांन लज्ज निज मुष्ष नीर ॥छं० ॥६७॥
फतूच मीर तुंगी तुरांन । पुज्जै न तास तम तेग पांन ॥
नव नेह षांन मैदांन मीर । हम्मी हहिल्ल तम तेग धीर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
ढिल्ली बढाल ढाहन प्रकार । संभरे मुष्ष भए रत्त भार ॥
पारष्षि रष्ष पावंग जांन । जानहि जु स्वांमि भ्रम प्रमांन ॥ छं० ॥ ६९ ॥
फिरि पूछि जाइ दूत सबनि कह । उच्चरै बत्त चहुआंन थट्ट ॥
भय भीत रीत माधव सुभट्ट । हौं देषि आइ इह तथ्य घट्ट ॥ छं० ॥ ७० ॥
सोमेस सूर तस पुत्तमांन । मारन हमीर जाने गियान ॥
दातार और पोहचे न दान । दै गयौ अनंग दिल्ली निषांन ॥ छं० ॥७१॥
बर राज अनँग तिथ्थह जु जाइ । है गै सु लच्छि दोहित्त पाइ ॥ छं०॥७२॥

माधव भाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना ।

दूहा ॥ साह बदी सुरतांन तब । माधौ कह्यो न मांन ॥
भट्ट जाति जीहं गुनै । दूत सु पठय प्रमांन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूतों के लक्षण का वर्णन ।

कवित्त ॥ कं जांनी कंम्मांन । अंक रेसम प्रति भासै ॥
दस औराक तिय तोन । साहि गोरी मुकि जासै ॥

दूत भेद अनुसरै । लषि हिंदवांन चरितं ॥
सो मत्तह सुरतांन । थांन सो कलि दस रत्तं ॥
दूत के दूत मंचह सुपन । सब सु चरित अंषिन लषै ॥
उच्चरै बत्त सांची सुव्रत । सुविधि विधि अम्रत भषै ॥ छं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ दून मुक्कलि उन सथ्थ बर । दिसि ढिल्ली परिमांन ॥
माधौ भट्ट सु सथ्थ करि । दूत पठय सुरतांन ॥ छं० ॥ ७५ ॥
चाहुआंन सुरतांन बर । करन जुद्ध परिमांन ॥
मिलन पुब्ब पच्छिम हुतैं । बीरा रस उत्तांन ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ सें बुझ्झैं सुरतांन । अप्प गज्जन बलवांनं ॥
आषेटक छम करहिं । दूत मुक्के अगिवानं ॥
जु कछू भेद अनुसरै । तत्तग्यांनं परिजानिय ॥
भय भयंक भ्रम षंड । काल कलहं गुन ठानिय ॥
जं कहौ जाइ महम्मंद षां । सेरन षांन वितंड बर ॥
चवसी हुजाब मुक्कलि न्रपति । सुबर बीर मत्ते गहर ॥ छं० ॥ ७७ ॥
भेद दुग्ग भंजियै । भेद दुरजन धरि किज्जै ॥
भेद भूमि अनुसार । भेद दिल्ली धरि लिज्जै ॥
भेद पष्प मत नथ्थ । भेद विन कंक न होई ।
भेद गुरुअ गुरु ग्यांन । भेद बिन तात न जोई ॥
अव्वत्त भेद वर रंजियै । गुन सज्जन सज्जन बरन ॥
सुरतांन दीन साहाव दी । भेद साहि कीजै गवन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

गाथा ॥ षुरसांनं प्रति षांनं । पीलं नथ नथियं पानं ॥
पुंगी नथ्थ प्रमानं । वरषं नथ्थ सस्त्रयो बलयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
श्री गजनो नरिंदं । बुलल्यौ बीराइ बीर साहसं ॥
विन जग्गत जग्गायं । तौ जितै निस्चयं षलयं ॥ ८० ॥

दूहा ॥ विन जग्गत जो जग्गियै । षग्ग साह विन हाथ ॥
मेछ पिच्छ किर सान गुर । विवरि गुरज्जन साथ ॥ छं० ॥ ८१ ॥
पातसाहि षिची सुक्किति । मति रष्षन परिमांन ॥
जौ भंजै चौहान तूं । कहै दूत सोइ ठांन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

अरिल्ल ॥ माधौ बत्त सुसत्त प्रमानिय । तज दूत मुक्कलि गुन ठानिय ॥
नव नव नव घन मध्य प्रमानं । कह्यो मंत गोरी सुविद्यानं ॥ छं० ॥ ८३ ॥

दूत भेजकर अपनी सेना की तयारी करना ।

छंद पद्धरी ॥ करि मंत साह गोरी अचंभ । आरंभ चक्क भुज दंड अंभ ॥
जल थल तिथ्थलन करि प्रमांन । उनम्यो[1] मेघ जनु मध्य भांन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
गगन मगन धुर षेह छाय । सुझ्झै न भांन मिटि पंथ वाय ॥
अरुझ्झे सुकमल[2] संकुचि सकोर । रुठ्ठी सु बदन अलि किसल थोर ॥ छं० ॥ ८५ ॥
चक्कवी चक्क चक चक्री भूमि । रस ताल वितल तल कढ्ढि तूमि ॥
तिन बननि[3] तुट्टि झर झरत नीर । प्रज्जरै पंथ साइर गंभीर ॥ छं० ॥ ८६ ॥
तन[4] करै पवन गवनं प्रकार । उरझंत धजा गज चलत लार ॥
बाजत टमंक तबलं कठोर । नाचंत ईस जनु गंग सोर ॥ छं० ॥ ८७ ॥
सुझ्झै न नैन दिसि विदिसि थांन । मन क्रंम सुद्धि नठ्ठी प्रमांन ॥ छं० ॥ ८८ ॥

दूहा ॥ चाहुआंन चतुरंग दिसि । सजि सुमंत साधव्व ॥
जुक्कु मंत गुन उच्चरिय । बर कोविद माधव्व ॥ छं० ॥ ८९ ॥
मति माधव कोविद सुबर । कह्री बत्त गुन जुत्त ॥
तज साहि गोरी नृपति । फेरि मुक्कले[5] दुत्त ॥ छं० ९० ॥
बोलि दूत चव[6] अग्ग लिय । दिय कग्गर धूमांन ॥
सुद्धि सिंध अरु सोब बर[7] । दिय दूनांम अब्बांन ॥ छं० ९१ ॥

शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना ।

चल्यौ दूत दिल्ली दिसा । लिए साह फुरमांन[8] ॥
भेष सुसोफिय तन्न सजि । चित्त अचिंतिय मांन ॥ छं० ॥ ९२ ॥

(१) को-उभस्यौ । (२) मो-ततकमल ।
(३) मो-बनह । (४) क्र-नन ।
(५) मो-मुक्कहिय । (६) मो-बचन ।
(७) मो-सब ।
(८) मो· में यह तुक नहीं है ।

दूत का दिल्ली पहुंचकर अनंगपाल के बनबास और पृथ्वीराज के न्यायराज का समाचार विदित होना ।

गाथा ॥ दिल्ली दूत सपत्तं । फिरि फिरि देषंत न्याव न्टप नैरं ॥
थह धूंमांन सुग्रेहं[1] । दिन्नं बर पच हथ धूंमानं ॥ छं० ॥ ९३ ॥
षबरि स्रब धूमानं । दिन्नं न्टप आदि सूर सामंतं ॥
अनंगपाल तप सरनं । दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ ९४ ॥

ध्रमान कायस्थ का सब समाचार सामंतों के रहने आदि का दूत को बतलाना ।

कवित्त ॥ विवरि षबरि धूमांन । कही चहुआंन सेन वर ॥
पष्ष[2] सत्त राजांन । सुवास कीन पिथ्थपुर ॥
पष्ष पंच कैमास । राव चावंड पष्ष चव ॥
बसि वित्ते दिन अट्ठ । पष्ष लोहांन रसे सब ॥
चहुआंन कन्ह पष एक हुअ । बसिय बास दिन पंच हुअ[3] ॥
सामंत अवर आगम इकै । सबन[4] वास चहुआंन रय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

ध्रमान का सब समाचार लिखकर भेजना ।

दूहा ॥ लषि कारि इह बंधी विवरि । राज धूम्म चहुआंन ॥
दिय कग्गर तसु दूत कर । बर कागर ध्रम्मान ॥ छं० ५६ ॥

सब समाचार लेकर दूत का लौटना ।

षबरि सबै लीनी नृपति । चलिय दूत निज मग्ग ॥
आतुर पति गज्जन नमिय । सौपी वे सह जग्ग ॥ छं० ॥ ९७ ॥
अरिल्ल ॥ दूत आइ दिल्ली परिमानिय । राजधान जुग्गिनि पहिचानिय ॥
निगम बोध दिष्यौ चहुआंनं । रहे षट दीह फिरे तिन थानं ॥ छं० ९८ ॥

दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थीं सब शाह को जा सुनाईं ।

दूहा ॥ रहे दूत षट दीह बर । लषि चरित्त षट मास ॥
जु कछु चरित षट मास कै । कहै विवरि सुद[5]भास ॥ छं० ॥ ९९ ॥

(१) मो-गेहं । (२) मो--परक । (३) मो-भय । (४) मो-रसन । (५) मो-सुधि ।

क्रम ढिल्ली ढिल्ली बयर। ढिल्ली नृप चहुआंन ॥
गौ तीरथ बन सज्जिकैं। प्रगटि दिसांन दसनां ॥ छं० ॥ १०० ॥
प्रथीराज चहुआंन बर। लै ढिल्लीपति म्हंद ॥
जानत सकल जिहनां बर। बजि निर्घोष सुदंद ॥ छं० ॥ १०१ ॥

शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना, उमरावों की तयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ साह बदीं सुरतनां। आइ गज जुद्ध निरष्षिय ॥
अगड मध्य चैागांन। बीस गजमत्त [1]सज्जकिय ॥
सहस एक गज झुंड। मंडि मंडल अविधानिय ॥
तहां गोरी बर बीर। दंति हक्कै दिन मांनिय ॥
गज एक सेत निज रोहि बर। चढिय पिठ्ठ तत्तार षां ॥
सुरतांन षांन निसुरत्ति षां। चढि सुगज्ज बांई रुषां ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दिसि दष्षिन साहाब। साहिजादा चढि दंतिय ॥
ऊबर सब्ब उमराव। चढे गज बंधि सुपंतिय ॥
लाल झंड सम सिंघ। हेम रज्जंत साहि सिर ॥
हैदल पैदल अवर। गनिक को गनै गहब्बर ॥
महमंदचंद महावत्त सौं। बोलि साह पुर मांन दिय ॥
गज भूत सिंघ गज मुष्ष है। आंनि सुअगडह अड्ड किय ॥ छं० ॥ १०३ ॥
दूहा ॥ इहां कहत तिन चर चवन। दिय दुवाह सुरतान ॥
निरषि साह उची निजरि। बे बुल्ले षुरसान ॥ छं० ॥ १०४ ॥
बाहन बर बानै विविधि। असु औनप आलोल ॥
ठाढा कोतूहल कवल। करत दांन नव[2] लोल ॥ छं० ॥ १०५ ॥
छंद उधौर ॥ मंडित उतंग उत्तिम छंद। ऊरध सोभा सोमह नंद ॥
छच विसाल बर दुति सीस। बाल विसाल उडगन ईस ॥ छं० ॥ १०६ ॥
आसन सिंघ मंड्यौ राज। सामंत सूर भर करि साज ॥
राज चहुआन प्रथी नरेस। मंडिय चंद देव सुरेस ॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) को-कृ- ए-गमंत। (२) मो-करशानन।

मास बित्तिय मंडी रेर। नद्द निसांन थांनह भेर ॥
हे गैगुंजि नाना भंति। कच बिराज कचनि मंति ॥ छं० ॥ १०८ ॥
मिलिभर जहां तहां भरि भीर। सूर समथ्थ जुद्ध सधीर ॥
जिन निन दिष्षि रंग सरंन। आगम जांनि फूलि बसंत ॥ छं० ॥ १०९ ॥
बसन बिराजि दसन कुआरि। लोल कलोल सुंदर नारि ॥
गावति हसति अलि अलि रासि। द्दग दुति कमुद किरनि प्रकासि ॥ छं० ॥ ११० ॥
जब लगि बढै वीर जराइ। तब लगि गहिन साहि बधाइ ॥
जब लगि बढत बर जर जांम। तब लगि करन मत्तन कांम ॥ छं० ॥ १११ ॥
सुनि उर लग्गि अग्गि उदार। परति न षिनक चैन दुवार ॥
बहु चर चवत चारु बिचार। सिर दह वार नंमि उदार ॥ छं० ॥ ११२ ॥

दूत का ब्योरेवार दिल्ली का समाचार कहना।

दूहा ॥ सुनत बत्त षुरसांन[1] बर। बोले दूत हजूर ॥
पुछै साहि सुचित्त करि। बिवरि षबरि संम्भूर ॥ छं० ॥ ११३ ॥

बचनिका ॥ सुरतांन सु विहांन सुलतान साहाब दीन ॥
करि करतार कि जोर। जासु कित्त जै अरु दल की जोरि जोरि ॥
जनु दरियाव की हिलोर। मिलते सों मुह जोरै ॥
अन मिलत सों पल षंचि कढोरै[2]। सुरतांन सुचिर दुमांन ॥
आंनि कही कायथ धूमांन। दिल्ली की षबरि विवरि लिषि दीनी ॥
अनंगपाल तूंअर बन बास लीनी ॥
देस है गै कोस पुची पुच प्रिथीराज कौ दीनी ॥
पष्ष सत हुए वास कीनें। तरुनि पुच परिवार सुष चेंन ॥
पष्ष पष्ष कैमास कों भए आएं। मास दून दिन अठ्ठ भए चावंड बसाएं ॥
तीन मास लोहांन बीतें। बीस रोज कन्ह चहुआंन हूतें ॥
और सब सामंतकी बसही आंनी। कितेकों आंननै मांनी ॥
चौहांन वास की आग्या दीनी। सब सामंत सीस नांमि लीनी ॥
रोज बाईस तिस पर हमको राह लगे। पडि पतंग जग्गि सानंगे ॥

(१) मो॰-सुरतांन। (२) मो॰-षंचि के तोरै।

जबलगि न बैरी जराइ। तब लगि साह मारि करि आइ॥ छं० ॥ ११४॥

छंद पद्धरी॥ उच्चर्यौ दूत प्रति गज्जनेस। चहुआंन तेज दिष्यो असेस॥
अनगेस राज तजि तिथ्थ जाइ। सामंत सूर सब मिले आइ॥ छं० ॥ ११५॥
संकुरे सकल भुम्मिया भयांन। सेवंत आन दरबांन थांन॥
इक भजत भोमि तजि गच्छत ग्रेह। निय नारि रंम्मि सक्के न नेह॥ छं०॥ ११६॥
इक मिलत आंनि तजि एंड अंग। षल षग्ग षंडि षेसें जु जंग॥
अजहूं सुसेन इक मनी नथ्थ। गोरी सहाव इह घत्त तथ्थ॥ छं० ॥ ११७॥

संवत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना॥

दूहा॥ ग्यारह सें अडतीस भनि। भौ ढिल्ली प्रथिराज॥
सुन्यौ साहि सुरतान बर। बज्जे बज्जि सु बाज॥ छं० ॥ ११८॥

अरिल्ल॥ ग्यारह से अडतीसा मानं। भो ढिल्ली नृपरा चहुआनं॥
विक्कम बिन सक बंधी सूरं। तपे राज प्रथिराज कहूरं॥ छं० ॥ ११९॥
कलिजुग अरु द्वापर की संधी। साको भ्रंम्म सुतह बल बंधी॥
ता पच्छै विक्कम वर राजा। ता पच्छै दिल्ली नृप साजा॥ छं० ॥ १२०॥
कहि चरित्त दिल्ली परिमानिय। सब गुन साह बिबेकत जानिय॥
सबैं चरित्त कहे प्रति भट्टं। सोइ दूत अष्यै[1] प्रति घट्टं॥ छं० ॥ १२१

दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना, शाह का खुरासान ख़ां आदि से मत पूछना।

छंद दैअष्षरी॥ दूत आइ दिल्ली प्रतिथानं। हेम सु दै गै मुद्रित मानं॥
तपै राज दिल्ली चहुआनं। नाकरधू नागेंद्र प्रमानं॥ छं० ॥ १२२॥
एक बराह थिरं बेराहं। सकल छत्य सुरराज समाहं॥
को अग्या भंजै नर[2] विराजं। अप्प लज्ज सम सामंत लाजं॥ छं० ॥ १२३
मुष कुहै जो बैन प्रमानं। तो घल्ले अगि जुलित नथानं॥
सुनै साहि गोरी सुरतानं। एक अंग एकं मन ठानं॥ छं० ॥ १२४॥
पुब्ब लोइ दालिद्री नासं। सबै सुक्क तब टंक विलासं॥
दंड हथ्थ जोगिंद सुदिष्यौ। नहि सुदंड प्रज्जा सिर पिष्यौ॥ छं० ॥ १२५॥

---

(१) मो-अगें। (२) मो-नह राजं।

दुज उचिष्ट नह उष्टं अल्ली। कौन लंक कोइ कौन न भल्ली॥
कठिन कञ्चुच चिया प्रकारं। कोइ न कठिन दुअन अधिकारं॥ छं०॥ १२६॥
कसै हेम सोनार सुबीरं। कोइ न कसी दरिद्र सरीरं॥
भै निरभै संसार सुजानं। सुनि सुनि राज हत्त सुरतानं॥ छं०॥ १२७॥
मोहन अहन सुहन गुन जांनी। कहै दूत बिधि विधि परिमांनी॥
सोहै मक्ष अहत्त अभिलाषं। मोज प्रवाह सुभंत बैसाषं॥ छं०॥ १२८॥
यों आवै बक्कै कवि मन्नं। इतौ राज अप्पै प्रति दिन्नं॥
सेन सुमंन सुमंतह सारी। भो मुष मंद मंद अभिसारो॥ छं०॥ १२९॥
यों जंपिय चहुआंन सुमंतं। त्यों अभिलाष गई मति तंतं॥
बोलि षांन तत्तार प्रकारं। कहौ मंत सो किज्ज सारं॥ छं०॥ १३०॥
अनँगपाल गौ तिथ्य सुनिज्जै। चाहुआंन दिल्ली प्रति रज्जै॥ छं०॥ १३१

तातार ख़ां का दिल्ली पर चढ़ाई करने की सलाह देना।

दूहा॥ कहै षांन तत्तार वर। अहन चरित्त सुनंत॥
जे चरिच दिल्लिय न्टपति। कहि गोरी गुनमंत॥ छं०॥ १३२॥

कवित्त॥ कहै षांन तत्तार। सुनहि गोरी सुरतांनं॥
मोहि मत्त जो किजियै। सजियै सेन परमानं॥
कही बत्त माधौ सुभट्ट। सोइ लिषि कायथ कग्गर॥
सोइ दूत कहि बत्त। सुत बोलैं न भट्ट वर॥
धरमांन नाम काइथ सुघर। तेनु चरित लिष्षे सबैं॥
अप्पै सुहथ्य बंदीन ते। सुहन बीर बीरह तबै॥ छं०॥ १३३॥

तातारख़ां का मत मान कर सुलतान का सेना सजने के लिये आज्ञा देना।

दूहा॥ मानि मंत तत्तार बर। मति गोरी सुरतान॥
लिषि धरमानह कग्गरह। सुविधि विद्धि परिमान॥ छं०॥ १३४॥

गाथा॥ माधवं कोविदं भट्टं। गीतं काव्यं रसं गुनं॥
नट्टं चिचं मदा विद्या। पिंगलं भरहं तथं॥ छं०॥ १३५॥

छंद मोतीदाम॥ निरंजन भट्ट सुमाधव वीर। कही तिन बत्त सुसत्ति सधीर॥
इहै कहि मत्त सुमत्त प्रमांन। सजी चतुरंगिनि सेन निधांन॥ छं०॥ १३६॥

कवित्त ॥ सेन साजि चतुरंग । लिषे कग्गर परिमानं ॥
थांन थांन प्रति जांन । साहि कह्यौ फुरमानं ॥
आइ सेन सजि थट्ट । सक्क सबै उमरावं ॥
चढिहै कंधै झपटि । जांनि उलट्यौ दरियावं ॥
विधि रूप दैव गोरी न्रपति । गरुअ मत्ति भंजन सयन ॥
ततार षांन षुरसांन षां । करै मत्त सच्चे बयन ॥ छं० ॥ १३७ ॥
गाथा ॥ सुनि श्रवनं चर वत्तं । बज्जानं घाव नीसानं ॥
निज है वर आरोहं । चढियं सजि गज्जनी साहं ॥ छं० ॥ १३८ ॥
कहि ततार गहि बग्गं । बसो करोज अजर हो ग्रेहं ॥
रोज पंच मिलि सयनं । करि सुबसि सिंघ चहुआनं ॥ छं० ॥ १३९ ॥
कहिव साहि वर वत्तं । सुनि तत्तार सह तुम साजं[1] ॥
अरि आघात समथ्थं । सद्धि सुसिद्धि निद्ध कज्जायं ॥ छं० ॥ १४० ॥

शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना ।

छंद पद्धरी ॥ चढि तमकि चल्यौ गोरी सहाव । उलट्यौ जांनि सायरन आव ॥
पुठि प्रवाह मिलि चलिग सेन । विधि विधि प्रवाह सर भरि जलेन ॥ छं० ॥ १४१ ॥
द्वादसह कोस किन्नौ मुकांम । डेरा सुदीन नारोल गांम ॥
मिलि पुट्ठि आइ सब सेन भार । है लष्ष मीर गहअत्त गार ॥ छं० ॥ १४२ ॥
बाजिय वीर बज्जत विसाल । नारद्द नंचि तिन भ्रकुटि ताल ॥
बित्ती त्रियाम उग्गयौ सूर । दल चल्यौ सत्त जनु सिंधु पूर ॥ छं० ॥ १४३ ॥
संक्रमन सेन हूऔ हुलास । चलि विषम सुषम देराह भास ॥
पुर धूरि पूरि धूंधरिय भांन । गद्दबर सुबत्त सुनियै न कांन ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दर कूच कूच उत्तरिय सिंध । दल विषम वृत्त उर साहि विद्ध ॥
किन्नौ मुकांम आवार आर । डेरा सुदीन दल उंच टार ॥ छं० ॥ १४५ ॥
झंडे अनंत गडि विविध रंग । फुल्ल्यौ वसंत बनराइ चंग ॥
चर चले धरनि दिल्ली सुथांन । दल कहै चरित षुरसान षांन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
दूहा ॥ कहै चरित सुरतांन सौं । जे देषे तिन दूत ॥
घुरि निसांन भद्रव भरिय । द्रुम दिष्षिय अदभूत ॥ छं० ॥ १४७ ॥

(१) मो-सारं ।

छंद भुजंगी ॥ घुरै नद्द नीसांन उग्गंत सूरं। बरं बीर बाजिच बज्जे करूरं ॥
घनं पष्षरे बाज दंती सरन्नं। दलं सज्जि सन्नाहयं अब्बदन्नं ॥छं०॥ १४८॥
रचियं फौज भरं हों कठ्ठ साहं। तहां बीर मीरं गुरं गज्ज गाहं ॥
तहां बिहियं दंति ऊमत्त मत्तं। तहां कच रंगं चियंगे दरंतं ॥छं०॥१४९॥
तहां बीर माची उमाची सुरानी। तहां ढाल बहु रंग अंगी ढुरानी ॥
दिसा बांम तत्तार गोरी सु अन्नी। दिसा दाहिनी षांन षुरसांन रन्नी॥छं०॥ १५०
मुषं अग्ग बेतंड सेरंन षांनं। रतं बैरषं रत्त गज गाह ठानं ॥
तिनै रत्त उच्छारि कारत्त ढारं। रजं रत्त भंडं तरं ताल हालं ॥छं०॥१५१॥
अनी साहि पुठ्ठें विचें साहि साजं। अगें अग्ग बाजी हथं नारि साजं ॥
अगें बांन गीरं सजे जुद्ध सारं। ....मुषै मारमारं ॥छं०॥१५२॥
सुरं दीन दीनं कलिं कूक फुट्टी। भरं आइ कालं भरी जुद्ध घट्टी ॥
उडी डंबरं अंबरं रेनु पूरं। बरं बाज आघात बज्जे करूरं ॥ छं० ॥१५३॥

शाह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना।

दूहा ॥ गज्जनेस सब सेन जुरि। आयौ सिंधु उलंघि ॥
कूच कूच आतुर षरिग। दोइ लष्ष दल संघि ॥ छं० ॥ १५४ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने सरदारों से परामर्श करना

कवित्त ॥ सुनिय बत्त पृथिराज। बोलि कैमास मंच बर ॥
कंन्ह काइ[1] चहुआंन। विरदि बज्जेति[2] नाह नर ॥
रा पज्जून पवित्त। सलष पमार जैत सम ॥
जांम देव जद्दों जुबान। पर संग राव प्रम ॥
पुंडीर सेन चंदह सुमति। लोहांनौ आजांन भुष्म ॥
मिलि सकल मंत पूछिय प्रथुक। सनमांनिय सोमेस सुअ ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़कर रोकें।

कहिय मंत कयमास। सुनौ सामंत सब्ब भर ॥
गज्जनेस आयौ सु सज्जि। सब सेन अप्प पर ॥
कूच कूच उभ्भार। सुन्यौ उत्तार सिंधु नद ॥
सिंध मंत सुभ रच्यौ। फौज चंपी न होइ हद ॥

(१) मो-कक्क। (२) मो-हज्जेति।

आयौ सुराव चावंड तब । कथा विरम रच्यौ सयल ॥
इह मंत सिनह सज्जे सहलि । चढि रन चंपहु दुष्ट षल ॥ छं० ॥ १५६ ॥

इस मत को सब का मानना ।

दूहा ॥ मांनि मंत सामंत सब । हरषि राज प्रथिराज ॥
बत्त परट्ठिय ग्रेह गय । अप्प अप्प जुस साज ॥ छं० ॥ १५७ ॥

पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना ।

अरुनोदै बैरां विहसि । बज्जि निसांन निहाइ ॥
चढ्यौ राज चहुआंन तब । चिंति अप्प जुध चाइ ॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवित्त ॥ नषत सुरंग सुरंग । सुरन ग्रंमांन हथ्थ लिषि ॥
सांम दांन अरु भेद । दंड निरनै बिसेष सिषि ॥
इहत काल इह घरिय । साहि सज्जे चतुरंगिय ॥
सुनि अवाज सुरतांन । हिंदू करिहै रन जंगिय ॥
प्रति कूच कूचनि करि प्रसति । चाहुआंन न करै विषम ॥
सो मत्ति मांनि माधव सुकथ । सुबर वीर बज्जे सुषम ॥ छं० ॥ १५९ ॥
चढ्यौ राज प्रथिराज । करन मुक्क्यौ प्रति साजिय ॥
बाइ गंठि बंधईय । सुबर मानंक सु ताजिय ॥
मंच बंधि कैमास । कन्ह चहुआंन सु निठ्ठुर ॥
अट्ठत बत्त सज्जए । सूर सामंत तत्त गुर ॥
विधि रूप भूप जानन सकल । तत्त मंत बत्तह सुबर ॥
संग्राम सूर साधै सकल । षग भिल्लि बज्जी सुकर ॥ छं० ॥ १६० ॥

दूहा ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज बर । सजि सुभट्ट अप्पांन ॥
विकसे अंबुज बीर बर । काइर कंपत प्रान ॥ छं० ॥ १६१ ॥

कवित्त ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज । मंगि गज रूप सुताजिय ॥
षिचिय जाति सुभांति । हेम नग साक्रांत साजिय ॥
बंधि सत्त सैं तोन । बांन तीषे सुभाल जल ॥
बोलि कन्ह चहुआंन । मंच कैमास बुद्धि बल ॥
बोले सु सब्ब सामंत भर । अरु जु सूर सथ्थें सयन ॥
आए सुराज अग्या सुसजि । चले जुद्ध सिर सजि गयन ॥ छं० ॥ १६२ ॥

पृथ्वीराज की सेना का वर्णन ।

छंद चोटक ॥ चढि राज चल्यौ सब सेन सजं । उड़ि षेह रजं ढकि अंब रजं ॥
सुर चंबक रोर तहच्च हयं । सहनाइय सिंधु बसंन हियं ॥ छं० ॥ १६३ ॥
विकसे अरुबिंद जुबीर उरं । क्विन नंकिय कातर नारि नरं ॥
दल संग जु ग्रिद्ध पयांन सजं । हरषै नचि जुग्गिनि जुद्ध रजं ॥ छं० १६४॥
दह सत्त सहं सदलं भिलियं । नव कोस सुनन्त मिलान दियं ॥
अनि कूचह कूच दलं षरियं । जल पंथह जाइ सु उत्तरियं ॥ छं० ॥ १६५ ॥

युद्धारंभ होना ।

दूहा ॥ कूच कूच गोरी सयन । जक्कि आयौ जल पंथ ॥
सुदि वैसाष म्रग भ्रगु दसै । सज्ज्यौ जुद्ध समंथ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
दिष्षि रेन डंबर डहर । चढिय चाइ चहुआंन ॥
सुर आनंद अनंद किय । काइर कंपि पुलांन ॥ छं० ॥ १६७ ॥

युद्ध वर्णन ।

छंद मुकुंद डामर ॥ ढलक्कंतिय ढाल निसांन नद्दि सिय चंचल सूर चढे कसियं ॥
चक टोप सरूप रँगा दह हथ्थल जोप सनाह विधिं जरियं ॥
रुस मंस उक्कंसत मुंछ तिरछिय दांन सनानत न्हान कियं ॥
नचि नारद तुंमर अंबर आनंद ईस सु सिंगिय नद्द दियं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
चढि अच्छरि ईसय सीस निरष्षन बीर जु जुद्द विनोद नचं ॥
सुर रच्चिय रथ्थ अयास सुबासिय गोद चवठ्ठिय मांनि सचं ॥
नृप रच्चिय फौज सुपंच प्रपंचिय गज्जिय गैंन सिरं धरियं ॥
भरमंनिय अप्प सु जैत प्रकासिय बंदि बिरद्द प्रती परियं ॥ छं० ॥ १६९ ॥
बर सांइय सुब्भर जीव कलप्पिय मंनि अनंत सु सीस भुअं ॥
पल वारि पलद्धर ओन सकत्तिय डिंभु अगिद्धिय चित्त धुअं ॥
सुष नैंन सुरत्तिय ओन सुरत्तह मुंछह भोंह उभं धुकजं ॥
नृप दिष्षिय सुब्भर सूर अनंदिय के कवि बोरति फौज सजं ॥ छं० ॥ १७० ॥
कवित्त ॥ दूत रचिग सेन सामंत । जुद्ध मारू रा भष्षन ॥
मोर ब्यूह आकार । अप्प दुर्जन दल दग्गन ॥

एक पंष निट्ठुर नरिंद । सथ्थ कैमास रांम भर ॥
दुतिय पंष अत ताइ । बलिय बलिभद्र सार भर ॥
पिंड पाइ नष राज हुअ । रचइ पुंछ पज्जून भर ॥
पुंडीर चंच कीनौ नृपति । मद्दन रंभ मच्यौ सुथर ॥ छं० ॥ १७१ ॥
दष्षिन दिसि कैमास । बांम दिसि कन्हति सज्जिय ॥
च्यार सहस सेना सजंत । नील फर हर ढल रज्जिय ॥
सकट व्यूह सजि सुभर । कग्ग चामंड अग्ग करि ॥
मंच राज ढंढरिय । ठंठ मारू मइंन धरि ॥
चंदैल माल भौंहा सुभर । उभय चक्र सुज्जे उभय ॥
प्रथिराज अनी दष्षिन दिसा । विषम बीर सज्ज्यौ सुरय ॥ छं० ॥ १७२ ॥
अवर अनी सामंत । परे नव वीय महाभर ॥
सोलंकी रन बीर । सुतन विंझह सुराज बर ॥
षीची राव प्रसंग । हीर पम्मार सहथ्थं ॥
सुवर बीर अवसांन । करन प्राक्रंम अकथ्थं ॥
पंम्मार दोइ सिंघह सुअन । सुअ प्रसंग सागर बरन ॥
बघेल भींम लष्षन सुअन । रांम बांम हय हभ्भरन ॥ छं० ॥ १७३ ॥
बांई दिसि चहुआंन । कंन्ह सज्ज्यौ दल बद्दल ॥
सहस तीस सजि सेन । मध्य सामंत अठ्ठबल ॥
हर सिंघह बर सिंघ । हभ्भ हंमीर गंभीरह ॥
मंडली कमल नाल । भांन भट्टी बर नीरह ॥
उदिग पगार बिरदैत बर । सोलंकी सारंग उर ॥
सिर कन्ह छच सज्यो नृपति । भार सयंनह जुद्ध भर ॥ छं० ॥ १७४ ॥
मुष अग्गौं पम्मार । सलष सम जैत सु सज्जिय ॥
लोहांनौ आजान । तिन मद्धि विरज्जिय ॥
सहस पंच सेना समथ्थ । पंम्मार सिंघ स[illegible] ॥
मध्य सूर सामलौ । भीम चालुक्क पर जम ॥
ठंठरी टांक चाटा चपल । धवल जसह लोहांन सुअ ॥
लोहांन बंध केसरि समथ । अग्र भाग सब सूर हुअ ॥ छं० ॥ १७५ ॥

मध्य भाग प्रथिराज। सहस सेना सु च्यारि सजि॥
चंद्र सेन पुंडीर। राइ पर सिंघ सिंघ गजि॥
बिंझ राज लष्षन बघेल। राइ रामह कनकू सम॥
कूरंभह पज्जून। भीम चहुआन भीम क्रम॥
भाषरह दास मंधे समथ। चाहुआंन नृप कन्ह सुअ॥
गोइंद राव भुज हथ्थ न्टप। जुद्ध पथ्थ जै वज्र भुअ॥ छं०॥ १७६॥
जांम देव जद्दों जुवांन। न्टप पुठ्ठि सु रज्जिय॥
स्याम चमर पष्षरह। स्यांम गज ढाल सु सज्जिय॥
लंगी लंगर राव। अल्ह परिहार सूर बर॥
अचल अटल चहुआंन। सिंह बारड अभंग भर॥
जंघाल राइ भीमह सुबर। सागर गुर रिन झूरि बल॥
सामंत सकल सज्जे समय। कज्ज राज प्रथिराज दल॥ छं०॥ १७७॥
उत गोरी सुरतांन। सज्यौ सेन अध चंद्रं॥
अर्द्धचंद्र तत्तार। षांन षुरसान सु द्वंदं॥
अर्द्धचंद्र बर सार। षान पीरोज स इंदं॥
मधि कलंक जल्लाल। बीर रस बीर समंदं॥
उज्जल निसंक दोउ कोर बर। तेज ताप सुरतांन डर॥
चहुआंन राह लग्गन फिस्यौ। पूरन पुनिमासी सगुर॥ छं०॥ १७८॥
छंद भुजंगी॥ इसी लीन जो गिंद जो गिंद भासै। उडी गिद्द पच्छै मनों मोन भासै॥
कहै नह नंदी सुनारह बीरं। मनों जोग जोगाधि को अंत नीरं॥छं०॥१७९॥
करक्कंत बानं धरक्कंति बेनं। गए लज्ज पांबी फटे पक्क पेनं॥
मयं मत्त दंतीन की पंति सोभै। तिनं देषते इंद के चित्त लोभै॥छं०॥१८०॥
झटक्कंत दंती सुपंती प्रकारं। बलाकंति पंती बगं मेघ सारं॥
भरं डंमरं रेन रुकि भूर नभ्भं। कलापंत पंतीन की सत्त सभ्भं॥छं०॥१८१॥
दूहा॥ दिषिय रैंन डंमर डहर। चढ्यौ चाय चहुआंन॥
सूर अनंद अनंद किय। कायर कंपि परान॥ छं०॥ १८२॥
सज्यौ सेन जंगल सु पहु। जिम बद्दल आकास॥
ढलकि ढाल ढिल्ली मिली। बिषम बीर रस रास॥ छं०॥ १८३॥

घोर युद्ध होना, सुलतान की सेना का भागना॥

छंद भुजंगी॥ ढलक्की मिली ढाल ढालं दुसेनं। चढे देव देषै रचै रथ्थ गेनं॥
हकै चक्क बज्जी गजै तार[1] नारं। महा जुड्ड लग्गौ उठ्यौ धोम
धारं॥ छं०॥ १८४॥
छुटै बांन हवाइ[2] अप्पार भारं। जगी दामिनी इंद्र भादों सुढारं॥
मिली कन्ह अन्नी पुरासान अन्नी। महा षेत मत्तौ गजं गाह रन्नी॥
छं०॥ १८५॥
छुटै बांन कम्मान रुक्यौ सुगेनं। उवं जुड्ड दिठ्ठं न प्राचार नेनं॥
उभै जुड्ड मंड्यौ महा भार भारं। भरं दून भग्गे धरं धार धारं॥
छं०॥ १८६॥
गिरें उत्तमंगं धरं सूर नंचै। भरं सीस कंमालियं माल संचै॥
करै जोगिनी जोग उच्चार बीरं। पियें श्रोन धारं अपारं सुधीरं॥
छं०॥ १८७॥
मिले षेत षुरसांन षां कन्ह धायौ। उरं झारि सींगी अपुट्ठं गिरायौ॥
पस्यौ भूंमि षुरसांन षांनं सुघाए। अनी भग्गि गय और सुरतांन ठाए॥
छं०॥ १८८॥
परे सहस दो षांन कढि षेत साजं। बजी जैत देषी प्रथीराज राजं॥
भगी फौज सुलतांन देषी बिहालं। कुप्यो साहि षुरसांन किय नेंन लालं॥
छं०॥ १८९॥

फ़ौज को भागते देखकर सुलतान का क्रोध करना।

दूहा॥ भगी फौज सुरतांन दिषि। कोप्यौ साहि सहाब॥
बहुरि मिलत जनु मेघ घुरि। सावन बद्दल आब॥ छं०॥ १९०॥

सेना को ललकार शाह का फिर ज़ोर बांधना।

कवित्त॥ हक्कि सूर सुरतान। साहि बंध्यौ बल भारी॥
अग्गैई चैरंग। राज रष्षन अधिकारी॥

(१) मो॰-नारि।
(२) मो-हवाय।

सुनै साहि सुरतान । साहि जीवन सुरतानं ॥
सुबर वीर हिंदवान । कलह चंपै हिंदवानं ॥
दीजै न दान दुर्जन घरह । दइ दुवाह ऊभै न्रपति ॥
मुरि भग्यौ साहि सुरतांन कौं । साल रहै जीवत सुपति ॥ छं० ॥ १९१ ॥

तातारखां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना, पृथ्वीराज की विजय ।

तब कह्यौ षांन तत्तार । साह मंनी परिमानं ॥
रुप्यौ साहि नरिंद । साहि षुरसांन सबानं ॥
घरी एक आबद्ध । बीर बीरह रस सथ्या ॥
षेत परे तत्तार । साह गोरी गई सत्या ॥
मुह मेल साह चहुआंन हुअ । दैथप्परि दौरे असुर ॥
चामंड राइ दाहर तनय । जै सबद उचरंत उर ॥ छं० ॥ १९२ ॥

दूहा ॥ दंतिपत्ति हल्लिय विहर । जलद कि पब्बय पाइ ॥
बाइ सहाई कै अनल । कै ग्रीषम लगि लाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥

छंद माधुर्य ॥ दव दवरि दवरित सैंन डंमरित गज्ज गहरित सद्दयं ।
बिरहंत भद्दव जलद हद्दव कीच मच्चित भद्दयं ॥ छं० ॥ १९४ ॥
गिरि पंषि उल्लसि उडय दस दिसि बाय बेग करि करैं ।
देषंत मन गति होत पंगुर दांन बरषत गिरि झरैं ॥ छं० ॥ १९५ ॥
गज पंति दंतिन कंति उज्जल बग्ग पंति कि राजए ।
रवि किरन बद्दल मध्य मानहु अन्य सोभ सु राजए ॥ छं० ॥ १९६ ॥
बर करत अनतह षग्ग पुल्लत उडत किरच सुषंडि कै ।
दुल चंद मांनहु कोपि उडगन अद्ध रयनीय छंडि कै ॥ छं० ॥ १९७ ॥
हल मलिय है दल दलित पैदल सैल सिषरह फट्टियं ।
गोपीय कन्हं जनु अगन्हं सार मार उहट्टियं ॥ छं० ॥ १९८ ॥

दूहा ॥ गज्जन समवर रोस रस । बज्जिग मार अपार ॥
षोलि षग्ग सैंभरि बलिय । जनुपाइक पुंतार ॥ छं ॥ १९९ ॥

छंद रसावला ॥ करी मत्त भारो बहै सार धारी । दुहथ्थं करारी । तुटै दंत जारी ॥
छं० ॥ २०० ॥

रदं क्रिच भ्कारो । मांने मच्छ वारी ॥ लगें बांन भारी। गिरं टिड्डि चारी ॥
छं० ॥ २०१ ॥

लगें संग भारी । मनों ब्रज्ज तारी ॥ उठें छंद धारी । मनों धूम भ्कारी ॥
छं० ॥ २०२ ॥

लगें केक टारी । धनु चंद्र धारी ॥ लगी दंति अंती । भ्रिनाली सुहंती छं०॥२०३॥

भरंके उक्कारें । बकें मार मारें ॥ ढहै गज्ज जारी । गिरं अंग सारी ॥छं०॥२०४॥

दूहा ॥ गज्जन गज गज्जै सुभट । रहै रोकि रन रंग ॥
छिति छज्जै छिची इसे । जिसे भीम अनभंग ॥ छं० ॥ २०५ ॥

छंद पद्धरी ॥ अति उद्ध शुद्ध अनबद्ध सूर । बलवंत मंत दीसै कहूर ॥
भ्कलमलहि संग फुटि परहि तुच्छ । उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ ॥छं०॥२०६॥
दल स्यांम हृदय सोभै प्रमांन । मानों कि पंचमो भाग भांन ॥
बर संग फुट्टि सिप्पर प्रमांन । कर स्यांम राहु सुभ्कै समांन ॥छं०॥२०७॥
मानों कि राहु ग्रहि ससिय आइ । कुट्टी कि किरन बद्दल नचाइ ॥
किरवांन वंक बढ्ढी बिसाल । ससि बनिय डोरि करि चक्र चाल ॥छं०॥२०८॥
सिप्पर सुस्यांम हेमह सुहंत । मांनो कि चक्र हरि धरिय संत ॥
लै संगि अंग है हनि उठाइ । उप्पमा चंद जंपै सुभाइ ॥ छं० ॥ २०९ ॥
मांनो कि हथ्थ हथिनापुरेस । वंचै सु बलिय बलिभद्र भेस ॥
प्रथिराज करिय करि संग सुद्ध । लांगत भेस दीसंत उद्ध ॥ छं० ॥२१० ॥
मांनों कि रांम कांमह प्रमान । षंचैति द्रोन हनमंत जांन ॥
ढहि पस्यो गज्ज वर षेत भूमि । मांनो सुभ्र सुरनिय अंत भूमि ॥छं०॥२११॥

दूहा ॥ चक्र रूप दोइ दीन दल । बल अभूत बलवंत ॥
जांनि जुगंतह जम लरैं । करन प्रथीपुर अंत ॥ छं० ॥ २१२ ॥

छंद विअष्परी ॥ पूरन ससि सुरतांन नरिंदं । भारथ राह भिरैं भर दंदं ॥
हींदू सेन चढे रिन षेतं । जित्तन दल षुरसान सुहेतं ॥ छं० ॥ २१३ ॥
डोंह हथ्थ डवै कर डावै । सींधू राग अवै सुर गावै ॥
नंचै वर बेताल चिघाइ । नारद नद्द करै किलकाई ॥ छं० ॥ २१४ ॥
सुर रत्तं सुर बीर प्रमानं । उडै उक्कंग अरिन निद्दानं ॥
दाहिंम्मौ दाहिर अधिकारी । गहन साह गोरी षग रारी ॥ छं० ॥ २१५ ॥

जंपै मेछ कुसाद कुसादे। पारसीय मीरं रसवादे ॥
षां ततार षुरसांन पषानं। गहैं सूर संमुह रन वानं ॥ छं० ॥ २१६ ॥
पंच बांन वह ते अधकोसं। सझ्यो नाह नरिंद सरोसं ॥
रुझ्यौ दिष्षि साहि सब षानं। गहिय तेग अनमित्त जुवानं ॥" छं० ॥ २१७ ॥

दूहा ॥ मिले खेत रन रंग रस। षां ततार कैमास ॥
विषम रुद्र रत्तौ बिहसि। मनों तेग रस रास ॥ छं० ॥ २१८ ॥

छंद मोतीदाम ॥ मनों रस रासय तेगय तार। करकर बज्जिय रीठ करार ॥
चलंतह बांन सुभांन क्वान। निरष्षत अच्छरि व्योम विमांन ॥ छं० ॥ २१९ ॥
छुटै गज बाज अनंदिय जात। मनों लगि गोम उदोत उदात ॥
भिरैं भय धोम सु धूंधय भार। लषै न को सूरति एक दुरार ॥ छं० ॥ २२० ॥
फिरैं धर वज्जिय भ्कार करार। ठिलें नठिलाइ न मन्निय हार ॥
नटं भति जोगिनि नंचिय बीर। मिटी सिर मालह संकर पीर ॥ छं० ॥ २२१
मिले कयमास ततार सुअंग। हन्यो कयमासह जांनुय संग ॥
फुटी जुग जंग तुरंग समेत। पस्यौ हय मुच्छ ततार सुषेत ॥ छं० ॥ २२२ ॥
बिना सिर नंचिय सट्ठि कमंध। चले असि टेकि सु तुट्टिय रंध्र ॥
बिलै विक मंध कमंध सुबीर। सहस्सह पंच परे रन मीर ॥ छं० ॥ २२३ ॥
भगी रन फौज सु चंडह साहि। जिते रन हिंदुअ ठठ्ठ सुठाहि ॥ छं० ॥ २२४ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना।

दूहा ॥ भगी अनी तत्तार लषि। दल परमारह चंप ॥
धप्यौ राज प्रथिराज तब। लेहु लेहु मुष जंप ॥ छं ॥ २२५ ॥

छंद पद्धरी ॥ धप्यौ सुराज प्रथिराज हक्कि। उर रोहि सेन उप्परें धक्कि ॥
मिलि फौज अट्ठकिय एक ठांम। आघात रीठ मत्ती उरांम ॥ छं० ॥ २२६ ॥
किलकार हक्क बज्जी करार। आवद्ध तुट्ट मुष धार धार ॥
चंप्यौ पटाटि चामुंड राव। हल हल्ल हूक मते हलाव ॥ छं० ॥ २२७ ॥
बीभच्छ मंत बिय भर अहर। आबद्ध जांम मच्यौ कहर ॥
संगें सुसंग असि असी घाइ। पट्टा सुपट्ट बज्जे निघाइ ॥ छं० ॥ २२८ ॥
जम दड्ढ दड्ढ जुट्टें विरांम। कुलिका सुधाव जुट्टे सुजांम ॥

पाटू सुढींक परद्वार पार। मिले लथ्थ बथ्थ झुंझे झुझार ॥ छं० ॥ २२९ ॥
कर केस केस एकह अलुभझ । कुरिका सअंनि बाहैं सुलभझ ॥
तुट्टंत अंत चंपंत पाइ । तुट्टंत सीस जनु विषम वाइ ॥ छं० ॥ १३० ॥
किन नतं परत दंती सभार । द्वै परैं विहँड षंडै सधार ॥
द्वै गै परंत धर पूरि पारि । घन श्रोन अंब पूरयौ सवारि ॥छं०॥२३१॥
लग्गे ससंग नेजा सुढाल । सोहंत पाल तरवर सुहाल ॥
कच्छपह सीस गजराज नूप । धर परे हय गय मगर रूप ॥ छं०॥ २३२॥
तुट्टे सुबांह मनु मीन पांन । सोहंत मीन वर विविध जांन ॥
सोहंत सीस अंबुजह सूर । से वाल चिकुर रज्जे बिहूर ॥ छं०॥२३३॥
विगसंत नेंन सुरंगी न दिट्ठ । अंबुज निसांनि मधुकर बयट्ठ ॥
षप्पर सुभरै कालिका वारि । विन हंस सूर उड्डै उभारि ॥ छं०॥ १३४॥
पहाटि पस्यौ चामंड धाइ । विहरंत विषम बज्यौ सुघाइ ॥
दिष्यौ सुघाइ साहाव दिठ्ठ । आवद्ध मंत मत्ती सुरिठ्ठ ॥ छं० ॥ २३५॥
मिल्ल्यौ सुघाइ चामंड राइ । हय हये उंन उन्नं उनाइ ॥
हय परै बथ्थ लग्गेव सूर । थल घाव रिट्ठ मत्ती कहूर ॥ छं०॥ २३६॥
चंपे सुमीर उप्परह धक्कि । सामंत सूर लग्गे बिहक्कि ॥
धर परे षेत तहां दस्स मीर । सामंत पंच परि षेत तीर ॥ छं०॥२३७॥
धरि लियो साहि चामंड राइ । नव सहस मीर तुट्टे सुघाइ ॥
चामंड राव हय दिय षवास । साहूल नाम पावार तास ॥ छं०॥ २३८॥
भग्गौ सुषेत सुरतान सेन । जै जया सद्द सुर सद्द गेंन ॥
जे परे मीर सामंत षेत । वरदाय चंद ते गनिव हेत ॥ छं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ पस्यौ भीम चहुआंन । बंध भाषरह महाभर ॥
सांमदास चय बंध । सुतन चहुआंन नाह नर ॥
पस्यौ षेत जस धवल । सुअन लौहान समथ्थं ॥
केसर केहरि रूप । बंध लौहांन सुतथ्थं ॥
रन परे पंच सामंत बर । षेत रीठ मत्ती भरन ॥
चामंड राइ दाहर तनय । गहत साहि पष्षल सुरन ॥ छं० ॥ २४० ॥

पर्‍यो षांन सेरंन्न । वितंड मुलतांन षांन धर ॥
माह्ल मीर सुभीर । मीर जेहांन महाभर ॥
मीर जमुन गजनीय । षांन महमुंद मीर वर ॥
फतेजंग मीरह सुभीर । हासंन ह अंनर ॥
काली बलाइ विरदैत बर । मीर अवन्न सुजुझ्झ मन ॥
दस परें षेत वानेत तब । गहत साहि पष्षल सुरन ॥ छं० ॥ २४१ ॥

अवर अनी सांमत । परे रन मीर महाभर ॥
सोलंकी रन बीर । सुतन वीझ्झह सुराज बर ॥
षीचो राव प्रसंग । सुतन सागरह समथ्थं ॥
मडंन बंध षसंग । हीर पामार सु हथ्थं ॥
पामार नीरध्वज सिंधु सुअ । सुत प्रसंग सागर सुअन ॥
बघेल भीम लष्षन सुवन । राम वाम दह्वय डरन ॥ छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ सहस एक हिंदू अवर । परे घाइ रिन षेत ॥
सहस आठरह असुर दल । परे सुबंधन नेत ॥ छं० ॥ २४३ ॥

सहस सात हय षेत रहि । परे पंच से दंति ॥
लुथ्थि कोस पंचह प्रचर । परे सुपाइल्ल अंति ॥ छं० ॥ २४४ ॥

षेचर भूचर हंसचर । पलचर रुधिचर चार ॥
न्रप आनंदिय राजकहुं । चलि जै जंपि उचार ॥ छं० ॥ २४५ ॥

सूरन सीस जु ईस जुरि । सुर रज्जे बर रथ्थ ॥
रजि अच्छरि आसिष्ष दिय । बर लड्डे बर हथ्थ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चामंडराय का सुलतान को पकड़कर पृथ्वीराज के हाथ समर्पण करना ।

कवित्त ॥ बंधि साह चामंड । दियौ प्रथिराज सुहथ्थह ॥
राज मांनि पतिसाह । आनि मुष्यासन तथ्थह ॥
कियौ दंड पतिसाह । सहस अठ्ठह हय सुब्बर ॥
सोइ अड प्रथिराज । दियौ चामंड महाभर ॥

मुक्यौ सुराज सुरतांन गहि। रोहि सुवासन पठय घर ॥
जित्यौ सुराज प्रथिराज रिन। जय जै सद्दय सुर अमर ॥ छं०॥ २४७ ॥

सुलतान को एक महीना दिल्ली में रखकर छोड़ देना ॥

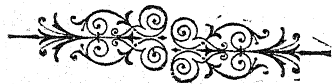
बंधि साह सुरतांन। राज ढिल्लीपुर पत्तौ ॥
दंड मंडि सुबिहान। राज जस जस गुन रत्तौ ॥
चामर छत्र रषत्त। सकल लुट्टे सुरतानं ॥
मास एक बर बीर। रष्षि मुक्यौ सुविहानं ॥
जय जय सुमत्त कित्तिय कवित। डोला राज नरिंद बर ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम। भयौ न को रवि चक्र तर ॥ छं० ॥ २४८ ॥

दूहा ॥ माधौ भट्ट सुमंत कथ। सुमत चित्त परमांन ॥
सुबर साहि गोरी नृपति। बंधि छंडि उनमांन ॥ छं० ॥ २४९ ॥

इस विजय पर दिल्ली में आनंद मनाया जाना, बहुत कुछ दान दिया जाना।

बँटि बधाय दिल्ली सहर। जीते आवत राज ॥
द्रव्य पटंबर विविध दिय। बज्जा जीत सु बाज ॥ छं० ॥ २५० ॥
दुजिय सुबद्दिय प्रति दुजह। प्रिथ्था व्याह विगत्ति ॥
किमि फिर बंध्यौ साह रिन। किम धन लद्ध सुमत्ति ॥ छं० ॥ २५१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके माधौ भाट कथा पातिसाह ग्रहन राजाविजय नांम उनविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १९ ॥





अथ पद्मावती समय लिख्यते ।

(बीसवां समय ।)

पूर्वदिशा में समुद्रशिषर गढ़ के यादवराजा विजय-पाल का वर्णन ।

दूहा ॥ पूरब दिस गढ गढनपति । समुद सिषर अति द्रुग्ग ।
तहँ सु विजय सुर राज पति । जादू कुलह अभग्ग ॥ छं० ॥ १ ॥
हसम हयग्गय देस अति । पति सायर म्रज्जाद ॥
प्रबल भूप सेवहिँ सकल । धुनि निसँान बहु साद ॥ छं० ॥ २ ॥

विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटी का वर्णन ।

कवित्त ॥ धुनि[1] निसान बहु साद । नाद सुरपंच बजत दिन ॥
दस हजार हय चढ़त । हेम नग जटित साज तिन ॥
गज असंष गजपतिय । मुहर सेना तिय संषह ॥
इक नायक कर धरी । पिनाक धरभर रज रष्षह ॥
दस पुत्र पुत्रिय एक सम । रथ सुरङ्ग उंमर डमर[2] ॥
भंडार लछिय अगनित पदम । सो पदम सेन कूँवर सुघर॥ छं० ॥ ३ ॥

कुँअर पद्मसेन की बेटी पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन ।

दूहा ॥ पदम सेन कूंवर सुघर । ता घर नारि सुजांन ॥
ता उर इक पुत्री प्रगट । मनहुँ कला ससिभांन ॥ छं० ॥ ४ ॥
कवित्त ॥ मनहुँ कला ससिभांन । कला सोलह सो बन्निय ॥
बाल बेस ससिता समीप । अम्रित रस पिन्निय ॥
बिगसि कमल म्रिग भमर । बैन षंजन म्रग लुट्टिय ॥
हीर कीर अरु बिंब । मोति नष सिष अहि घुट्टिय ॥
छत्रपति गयंद हरि हंस गति । बिह बनाय संचै सचिय ॥
पदमिनिय रूप पद्मावतिय । मनहु कांम कामिनि रचिय ॥ छं० ॥ ५ ॥

(१) क्र-घन ।   (२) को-भ्रमर ।

दूहा ॥ मनहु काम कामिनि रचिय। रचिय रूप की रास ॥
पसु पंक्षी सब[१] मोहनी। सुर नर मुनियर पास ॥ छं० ॥ ६ ॥
सामुद्रिक लच्छन सकल। चौसठि कला सुजांन ॥
जानि चतुर दस अंग षट। रति वसंत परमांन ॥ छं० ॥ ७ ॥

पद्मावती एक दिन खेलते समय एक सुग्गे को देख कर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया और महल में पिंजरे में रक्खा।

सषियन सँग खेलत फिरत। महलनि बाग निवास ॥
कीर इक्क दिष्षिय नयन। तब मन भयौ हुलास ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ मन अति भयौ हुलास। विगसि जनु कोक किरन रवि ॥
अरुन अधर तिय सधर। बिंब फल जानि कीर छबि ॥
यह चाहत चष चक्रित। उहजु तक्किय झरपि झर ॥
चंच चहुट्टिय लोभ। लियौ तब गहित अप्प कर ॥
हरषत अनंद मन महि हुलस। लै जु महल भीतर गई ॥
पंजर अनूप नग मनि जटित। सो तिहि मँह रष्षत भई ॥ छं० ॥ ९ ॥

पद्मावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा उसी को पढ़ाया करती।

दूहा ॥ तिही महल रष्षत भइय। गइय षेल सब भुल्ल ॥
चित्त चहुट्टयौ कीर सों। रांम पढ़ावत फुल्ल ॥ छं० ॥ १० ॥

पद्मावती के रूप को देख कर सुग्गे का मन में विचार करना कि इसको पृथ्वीराज पति मिले तो ठीक है।

कीर कुँवरि तन निरषि दिषि। नष सिष लौं यह रूप ॥
करता करी बनाय कै। यह पदमिनी सरूप ॥ छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ कुटिल केस सुदेस। पोह परचियत पिक्क सद ॥
कमल गंध वय संध। हंस गति चलत मंद मद ॥
सेत वस्त्र सोहै सरीर। नष स्वाति बुंद जस ॥

(१) छ-मृग।

भमर भंवहि भुल्लहि सुभाव। मकरंद वास रस॥
नैन निरषि सुष पाय सुक। यह सदिन मूरति रचिय॥
उमा प्रसाद हर हेरियत। मिलहि राज प्रथिराज जिय॥ छं० ॥ १२॥

पद्मावती का सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है।

दूहा॥ सुक समीप मन कुँवरि कौ। लग्यो बचन कै हेत॥
अति विचित्र पंडित सुआ। कथत जु कथा अमेत॥ छं० ॥ १३॥

गाथा॥ पुच्छत बयन सुबाले। उच्चरिय कीर सच्च सचाये॥
कवन नाम तुम देस। कवन थंद करै परवेस॥ छं० ॥ १४॥

सुग्गे का उत्तर देना कि मैं दिल्ली का हूं वहां का राजा पृथ्वीराज माने इंद्र का अवतार है।

उच्चरिय कीर सुनि बयनं। हिंदवान दिल्ली गढ अयनं॥
तहाँ इंद अवतार चहुवानं। तहं प्रथिराजह सूर सुभारं॥ छं० ॥ १५॥

पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना।

छंद पद्धरी॥ पदमावतिहि कुँवरी सँघत्त। दुज कथा कहत सुनि सुनि सुवत्त॥
हिंदवांन थान उत्तम सुदेस। तहँ उदत द्रुग्ग दिल्ली सुदेस॥ छं०॥१६॥
संभरि नरेस चहुआंन थांन। प्रथिराज तहां राजंत भांन॥
बैसह बरीस षोडस नरिंद। आजानबाहु भुअ लोक यंद॥छं०॥१७॥
*संभरि नरेस सोमेस पूत। देवंत रूप अवतार धूत॥
सामंत सूर सब्बैं अपार। भूजाँन भीम जिम सार भार॥ छं०॥१८॥
जिहि पकरि साह साहाब लीन। तिहुं बेर करिय पानीप हीन॥
सिंगिनि सुसद्द गुन चढ़ि जँजीर। चुक्कै न सबद बेधंत तीर॥छं०॥१९॥
बल बैन करन जिम दाँन पान। सत सहस सील हरिचँद समान॥
साहस सुक्रंम विक्रम जुवीर। दाँनव सुमत्त अवतार धीर॥ छं०॥२०॥
दिस च्यार जांनि सब कला भूप। कंद्रप्प जांनि अवतार रूप॥छं०॥२१॥

दूहा॥ कामदेव अवतार हुअ। सुअ सोमेसर नंद॥
सहस किरन झल हल कमल। रिति समीप वर विंद[1]॥ छं० ॥ २२॥

* को० छ-में यह तुक नहीं है। (१) को-चिंदं।

पृथ्वीराज का रूप, गुण सुन कर पद्मावती का मोहित हो जाना।

सुनत श्रवन प्रथिराज जस। उमग बाल विधि अंग॥
तन मन चित चहुवाँन पर। बस्यौ सु रत्तह रंग॥ छं०॥ २३॥

कुँवरी के स्यानी होने पर विवाह करने के लिये मा बाप का चिंतित होना।

वेस बिती ससिता सकल। आगम कियौ बसंत॥
मात पिता चिंता भई। सोधि जुगति कौ कंत॥ छं०॥ २४॥

राजा का बर ढूँढने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना।

कवित्त॥ सोधि जुगति कौ कंत। कियौ तब चित्त चहौं दिस॥
लयौ विप्र गुर बोल। कही समझाय बात तस॥
नर नरिंद नर पती। बड़े गढ़ द्रुग्ग असेसह॥
सीलवंत कुल सुद्ध। देहु कन्या सुनरेसह॥
तब चलन देहु दुज्जह लगन। सगुन बंद दिय अप्प तन॥
आनँद उछाह समुदह सिषर। बजत नद्द नीसाँन घन॥ छं०॥ २५॥

पुरोहित का कमाऊँ के राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुँचना।

दूहा॥ सवालष्य उत्तर सयल। कमऊँ गढ दूरंग॥
राजत राज कुमोदमनि। हय गय द्रिब्ब अभंग॥ छं०॥ २६॥

पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कमोदमनि को लगन चढ़ा दिया।

नारिकेल फल परठि दुज। चौक पूरि मनि मुत्ति॥
दई जु कन्या बचन बर। अति अनँद करि जुत्ति॥ छं०॥ २७॥

कुमोदमनि का बड़ी धूम से व्याह के लिये बारात लाना, पद्मावती का दुखित हो कर सुग्गे को पृथ्वीराज के पास भेजना।

छंद भुजंगी॥ विहिसित्तवरं लगन लिन्नौ नरिंदं। बजी द्वार द्वारं सु आनंद दुंदं॥
गढंनं गढं पत्ति सब बोलि नुंत्ते। आइयं भूप सब कट्ठु बंस जुत्ते॥ छं०॥ २८॥

चले दस सहस्सं असव्वार जानं । पूरियं पैदलं तेतीसु थानं ॥
मंत मद गलित सैं पंच दंती । मनों साँम पाहार बुग पंति पंती ॥ छं० ॥ २९ ॥
चलै अग्गि तेजी जु तत्ते तुषारं । चौवरं चौरासी जु साकत्ति भारं ॥
कंठ नग नूपं अनोपं सु लालं । रँगं पंच रंगं ढलक्कंत ढालं ॥ छं० ॥ ३० ॥
पंच सुर सावद्द वाजित्र वाजं । सहस सहनाय स्त्रिग मोहि राजं ॥
समुद सिर सिषर उच्छाह छाहं । रचित मंडपं तोरनं स्रीयगाहं ॥ छं० ॥ ३१ ॥
पदमावती विलषि बर बाल बेली । कही कीर सों बात तब होइ केली ॥
झटं जाहु तुम्ह कीर दिल्ली सुदेसं । बरं चाहुवानं जु आनौ नरेसं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

सुग्गे से संदेसा कहलाना औरचिट्ठी देना कि रुक्मिन की तरह मेरा उद्धार कीजिए ।

दूहा ॥ आनो तुम्ह चहुवांन बर । अरु कहि इहै सँदेस ॥
सांस सरीरहि जो रहै । प्रिय प्रथिराज नरेस ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कवित्त ॥ प्रिय प्रिथिराज नरेस । जोग लिषि कग्गर दिन्नौ ॥
लगु नव रग रचि सरब । दिन द्वादस ससि लिन्नौ ॥
सैं अरुग्यारह तीस[1] । साष संवत परमानह ॥
जोविची कुल सुद्ध । बरनि बर रष्षहु प्रानह ॥
दिष्षंत दिष्ट उच्चरिय[2] वर । इक पलक बिलंब न करिय ॥
अलगार रयन दिन पंच महि । ज्यों रुकमनि कन्हर वरिय ॥ छं० ॥ ३४ ॥

शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना ।

दूहा ॥ ज्यों रुकमनि कन्हर वरी । ज्यों वरि संभरि कांत ॥
शिव मंडप पच्छिम दिसा । पूजि समय स प्रांत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सुग्गे का चिट्ठी लेकर आठ पहर में दिल्ली पहुँचना ।

लै पची सुक यों चल्यौ । उड्यौ गगनि गहि वाव ॥
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर । अट्ठ जाँम में जाव ॥ छं० ॥ ३६ ॥

---

(१) को-अनुतीस ।
(२) को-वह घरिय ।

सुग्गे का पत्र पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का चलने के लिये प्रस्तुत होना।

दिय कग्गर नृप राज कर। षुलि बंचिय प्रथिराज ॥
सुक देखत मन में हँसे। कियौ चलन कौ साज ॥ छं० ॥ ३७ ॥

चामंड राय को दिल्ली में रख कर और सरदारों को साथ लेकर उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना।

कवित्त ॥ उहै घरी उहि पलनि। उहै दिन बेर उहै सजि ॥
सकल सूर सामंत। लिये सब बोलि बंब बजि ॥
अरु कविचंद अनूप। रूप सरसै बर कहु बहु ॥
और सेन सब पच्छ। सहस सेना तिय सष्षहु ॥
चामंड राय दिल्ली धरह। गढपति करि गढ़ भार दिय ॥
अलगार राज प्रथिराज तब। पूरब दिस तब गमन किय ॥ छं० ॥ ३८ ॥

जिस दिन समुद्र शिषर गढ में बारात पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी पहुँच गया और उसी दिन गज़नी में शहाबुद्दीन को भी समाचार मिला।

जा दिन सिषर बरात गय। ता दिन गय प्रथिराज ॥
ताही दिन पतिसाह कौं। भइ गज्जनै अवाज ॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और इधर इसकी सूचना चंद ने पृथ्वीराज को दी।

कवित्त ॥ सुनि गज्जनै अवाज। चढ्यौ साहाब दीन वर ॥
षुरासाँन सुलतान। कास काविलिय मीर धुर ॥
जंग जुरन जालिम जुझार। भुज सार भार भुअ ॥
धर धमंकि भजि सेस। गगन रवि लुप्पि रैन हुअ ॥
उलटि प्रवाह मनौं सिंधु सर। रुक्कि राह अड्डौ रहिय ॥
तिहि घरिय राज प्रथिराज सौं। चंद वचन इहि विधि कहिय ॥ छं० ॥ ४० ॥

बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गोष आदि से बारात देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना।

निकट नगर जब जांनि। जाय वर विंद उभय भय ॥
समुद सिषर घन नद्द। इंद दुहुँ ओर घोर गय ॥
अगिवानिय अगिवान। कुँअर बनि बनि हय सज्जति ॥
दिष्षन को चिय सबनि। चढ़ि गौष छाजन रज्जति ॥
विलषि अवास कूँवरि वदन। मनौं राह छाया सुरत ॥
झंषति गवष्षि पल पल पलकि। दिषत पंथ दिल्ली सुपति ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सुग्गे का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृङ्गार करना, और सखियों के साथ शिव जी की पूजा को जाना वहां पृथ्वीराज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुँचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीरान के साथ घोर युद्ध होना।

छं० पद्धरी॥ दिषत पंथ दिल्ली दिसाँन। सूष भयौ सुक जब मिल्यौ आंन ॥
संदेस सुनत आनंद नैंन। उमगिय बाल मन मध्य सैन ॥ छं० ॥ ४२ ॥
तन चिकट चीर डार्यौ उतारि। मज्जन[1] मयंक नव सत सिंगार ॥
भूषन मँगाय नष सिष अनूप। सजि सेन मनौं मनमथ्थ भूप ॥ छं० ॥ ४३ ॥
सोव्रन्न थार मोतिन भराय। झल[2] हल करंत दीपक जराय ॥
संगह सषिय लिय सहस बाल[3]। रुकमनिय जेम मज्जन मराल ॥ छं० ॥ ४४ ॥
पूजिय गवरि शंकर मनाय। दर्छिनै[4] अंग कर लगिय पाय ॥
फिर देषि देषि प्रथिराज राज। हस मुद्ध मुद्ध चर पट्ट लाज ॥ छं० ॥ ४५ ॥
कर पकरि पीठ हय परि चढ़ाय। लै चल्यौ न्रपति दिल्ली सुराय ॥
भइ षबरि नगर बाहिर सुनाय। पदमावतीय हरि लीय जाय ॥ छं० ॥ ४६ ॥

(१) ए० कृ-मंडान। (२) को-कल। (३) को-यव रस बाल। (४) कृ-दुरि।

बाजी सुबंब हय गय पलांन। ढौरे सुसज्जि दिसह दिसांन॥
तुम्ह लेहु लेहु मुष जंपि जोध। हम्माह सूर सब पहरि क्रोध॥ छं० ॥ ४७॥
अग्गैं जु राज प्रिथिराज भूप। पच्छै सु भयौ सब सेन रूप॥
पहुंचे सुजाय तत्ते तुरंग। भुअ भिरन भूप जुरि जोध जंग॥ छं० ॥ ४८॥
उलटी जु राज प्रथिराज वाग। थकि सूर गगन धर धसत नाग॥
सामंत सूर सब काल रूप। गहि लोह छोह वाहै सु भूप॥ छं० ॥ ४९॥
कम्मांन बांन छुट्टहि अपार। लागंत लोह इम सारि धार॥
घमसान घान सब बीर षेत। घन श्रोन बहत अरु रकत रेत॥ छं० ॥ ५०॥
मारे बरात के जोध जोह। परि रुंड मुंड अरि षेत सोह॥ छं० ॥ ५१॥

पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना।

दूहा॥ परे रहत रिन षेत अरि। करि दिल्लिय मुष रुष्ष॥
जीति चल्यौ प्रथिराज रिन। सकल सूर भय सुष्ष॥ छं० ५२॥

पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना।

पदमावति इम लै चल्यौ। हरषि राज प्रिथिराज॥
एतैं परि पतिसाह की। भइ जु आनि अवाज॥ छं० ॥ ५३॥

अवसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना।

कवित्त॥ भई जु आँनि अवाज। आय सहाबदीन सुर॥
आज गहौं प्रथिराज। बोल बुल्लंत गजत धुर॥
क्रोध जोध जोधा अनंत। करिय पंती अनि गज्जिय॥
बांन नालि हथनालि। तुपक तीरह अब सज्जिय॥
पवै पहार मनों सार के। भिरि भुजांन गजनेस बल॥
आये हकारि हंकार करि। षुरासान सुलतान दल॥ छं० ॥ ५४॥

शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना।

छं० पद्धरी॥ षुरासान मुलतान षंधार मीरं। बलक सो बलं तेग अचूक तीरं॥
रुहंगी फिरंगी हलंबी समानी। ठटी ठट्ट बल्लोच ढालं निसानी॥ छं०॥ ५५॥
मँजारी चषी मुष्ष जंबक्क लारी। हजारी हजारी हुकैं जोध भारी॥
तिनं पष्षरं पीठ हय जीन सालं। फिरंगी कती पास सुकलात लालं॥छं०॥५६॥
तहाँ बाघ बाघं महरी रिक्षोरी। घनं सारसंमूह अरु चौंर भोरी॥
इराकी अरब्बी पटी तेज ताजी। तुरक्की महाबांन कम्मांन बाजी॥ छं०॥ ५७॥
ऐसे असिव असवार अग्गेल गोलं। भिरे जून जेते सुतत्ते अमोलं॥
तिनं मद्धि सुलतांन साहाब आपं। इसे रूप सों फौज वरनाय जापं॥ छं०॥५८॥
तिनं घेरियं राज प्रथिराज राजं। चिहौ ओर घन घोर नीसांन बाजं॥छं०॥५९॥

पृथ्वीराज का तेग सँभाल शत्रुओं पर टूटना।

कवित्त॥ बज्जिय घोर निसाँन। राँन चौहाँन चिहौ दिस॥
सकल सूर सामंत। समरि बल जंच मंच तस॥
उट्ठि राज प्रथिराज। बाग मनों लग वीर नट॥
कढ़त तेग मनों बेग। लगत मनों वीज भट्ट घट॥
थकि रहे सूर कौतिग गिगन। रगन मगन भइ ओन धर॥
हर हरषि वीर जग्गे हुलस। हुरव रंगि नव रत्त वर॥ छं०॥ ६०॥

दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी की हार जीत न हुई।

दूहा॥ हुरव रंग नव रंत वर। भयौ जुद्ध अति चित्त॥
निस वासुर समुझि न परत। न को हार नह जित्त॥ छं०॥ ६१॥

युद्ध का वर्णन्।

कवित्त॥ न को हार नह जित्त। रहेइ न रहहि सूरवर॥
धर उप्पर भर परत। करत अति जुद्ध महाभर॥
कहैं कमध कहैं मध्य। कहै कर चरन अंत हरि[1]॥
कहैं कंध वहि तेग। कहैं सिर जुहि फुहि उर॥

(१) छ०-दुरि।

कहीं दंत मंत हय षुर षुपरि। कुंभ असुंडह रुंड सब ॥
हिंदवान रान भयभांन मुष। गहिय तेग चहुवांन जब ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पृथ्वीराज की बीरता का वर्णन, शाहाबुद्दीन को कमान डाल पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना।

छंद भुजंगी॥ गही तेन चहुवाँन हिंदवाँन रानं। गजं जूथ परि कोप केहरि समानं॥
करे रुंड मुंडं करी कुंभ फारे। वरं सूर सामंत हुकि गर्ज भारे॥छं०॥६३॥
करी चीह चिक्कार करि कलप भग्गे। मदं तंजियं लाज[1] उमंग मग्गे॥
दौरि गज अंध चहुआँन केरो। घेरियं[2] गिरद्दं चिहौ चक्क फेरो॥छं०॥६४॥
गिरद्दं उडी भाँन अंधार रैनं। गई सूधि सुझ्झै नहीं मझ्झि नैनं॥
सिरं[3] नाय कम्मांन प्रथिराज राजं। पकरियै साहि जिम कुलिंगवाजं॥
छं० ॥ ६५ ॥
लै चल्यौ सिताबी करी फारि फौजं[4]। परें मीर सै पंच तहँ षेत चौजं॥
रजंपुत्त पंचास झुझ्झे अमीरं। बजै जीत के नद्द नीसांन घोरं॥ छं०॥६६॥

पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना।

दूहा॥ जीति भई प्रथिराज की। पकरि साह लै संग॥
दिल्ली दिसि मारगि लगौ। उतरि घाट गिर गंग॥ छं० ॥ ६७ ॥

पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट चत्रभुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना॥

वर गोरी पद्मावती। गहि गोरी सुरतांन॥
निकट नगर दिल्ली गये। चभुजा चहुआँन॥ छं० ॥ ६८ ॥

लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना।

कवित्त॥ बोलि विप्र सोधे लगन्न। सुध घरी परट्ठिय॥
हर बांसह मंडप बनाय। करि भांवरि गंठिय॥
ब्रह्म वेद उच्चरहिँ। होम चौरी जु प्रत्ति वर॥
पद्मावति दुलहिन अनूप। दुल्लह प्रथिराज राज नर॥

(१) कृ०--लाज। (२) कृ०--करीयं।
(३) को०--तब। (४) को०--में "ले चल्यौ निकसि सब फारि फौजं" लिखा है।

मंडयौ[1] साच साहाबदी । अट्ठ सहस दै वर सुवर ॥
दै दाँन माँन षट भेष कौ । चढ़े राज द्रुग्गा हुजर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

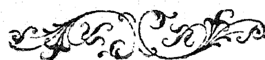
पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के साथ अपने महल में आना ।

कवित्त ॥ चढ़िय राज प्रथिराज । छाड़ि साहाबदीन सुर ॥
न्रिपत सूर सामंत । बजत नीसाँन गजत धुर ॥
चंद्र वदनि म्रग नयनि । कलस ले सिर सनमुष्ष जुष ॥
कनक थार अति बनाय । मोतिन बँधाय सुष ॥
मंडल मयंक वर नार सब । आनँद कंठह गाइयव ॥
ढोरंत चवर किक्कर करहि । मुकट सीस तिक जु दियव ॥ छं० ॥ ७० ॥

महल में पहुँचने पर आनंद मनाया जाना ।

दूहा ॥ चढ़े राज द्रुग्गह न्रिपति । सुमत राज प्रथिराज ॥
अति अनंद आनंद सैं । हिंदवान सिर ताज ॥ छं० ॥ ७१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके श्री प्रिथीराज समुद सिषर गढ़ पद्मावती पाँणि ग्रहणं जुद्ध पश्चात पातिसाह प्रिथीराज जुद्धं श्री प्रिथीराज जुद्ध विजय पातिसाह ग्रहनं मोषनं नाम विंशति प्रस्ताव संपूर्णम् ॥



(१) क-डंडयौ ।

अथ प्रिया व्याह वर्णनं लिष्यते ॥

(एक्कीसवां समय ।)

चित्तौर के रावल समर के साथ सोमेश्वर की बेटी के बिबाह की सूचना ।

कवित्त ॥ चित्त कोट रावर नरिंद । सा सिंघ तुल्य बल ॥
सोमेसर संभरिय । राव मानिक सुभग्ग कुल ॥
मुष मंची कैमास । पांन अवलंबन मंडिय ॥
मास जेठ तेरसि सुमधि । ऐन उत्तर दिसि हिंडिय ॥
सुक्रवार सुकल तेरसि घरह । धर लिन्नैा तिन बर घरह ॥
सुकलंक लगन मेवार धर । समर सिंघ रावर बरह ॥ छं० ॥ १ ॥

सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह को देने का विचार करके पत्र भेजना ।

दूहा ॥ उत्तर दिसि आहुट्ठ कैां । दे कग्गद लिषि बत्त ॥
सोमेसर कीनैा मतैा । भगिनि दिये प्रथु पुत्त ॥ छं० ॥ २ ॥

समरसिंह के गुणों का वर्णन ।

चैापाई ॥ प्रवत्तवै[1] पहुमी बल राजं । अरु जोगिंद सबन सिरताजं ॥
समर सिंघ रावर चिंत्तिज्जै । पुचि प्रिथा चित्रंग सुदिज्जै ॥ छं० ॥ ३ ॥

कवित्त ॥ बर प्रब्बत बैराज । नरब उत्तिम चित्रंगी ॥
बर आहुट्ठ नरेस । समर साहस अनभंगी ॥
बर मालव गुज्जर नरिंद । सार बंधैा बर अड्डौ ॥
उंच सग्गपन कियै । पुत्त आवै घन अड्डौ ॥
बर बीर धीर जाजुलति नप[2] । ग्रिवप्रसाद अविचल घरह ॥
प्रिथकज्ज अज्ज मन संभरैा । सुनि संमर कीजै बरह ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ सोमेसर नंदन मतैा । पुच्छि कन्ह चहुआन ॥
आदि भ्रंम धर पंथ ए । हिंदवान कुल भान ॥ छं० ॥ ५ ॥

(१) मो०—पब्बयपति । (२) को०—ए०—पत ।

कवित्त ॥ हिंदवान कुल भान। ध्रंम रष्षन सुबेद बर ॥
लै मुंजांनी ढाल। जुभ्भ्क संग्राम सार गुर ॥
सो चित्रंग नरिंद। प्रिथा दीनी प्रथिराजं ॥
हैम हयं गय अप्पि। देन दिल्लीय सब साजं ॥
गढ अत्त बत्त गहिलौत गुर। सिंगी नाद निसांन बर ॥
कालंक राइ कुप्पन बिरद। मद्दन रंभ चाहंत धर ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ सो भगिनी दीनी प्रिथा। सकल रूप गुन लच्छि ॥
चित्रंगी रावर समर। अंगन अद्दत सु अच्छि ॥ छं० ॥ ७ ॥

पत्र लेकर गुरूराम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना।

कुंडलिया ॥ बाल बेस भगिनी प्रिथा। अह समर केलि चित्रंग ॥
राज गुढ्ढ गुरराम सम। ताजी तेरह तुंग ॥
ताजी तेरह तुंग। मुत्ति नग माल सुरंगी ॥
बर दाहिम कैमास। बीर बंधव मुकि रंगी ॥
नृप कग्गद गहि हथ्थ। कन्ह अग्गा बर एसं ॥
नर उत्तिम चित्रंग। दई बर बाल सुबेसं ॥ छं० ॥ ८ ॥

पृथा कुंअरि के रूप का वर्णन।

दूहा ॥ बर बरनत भगिनी प्रिथा। कहि न परै कवि चंद ॥
मानौं रति कौ रूप लै। धरि आई मुष इंद ॥ छं० ॥ ९ ॥

चौपाई ॥ सुफल दियौ फल लद्धौ नांहि। इंद्र सुबल बलि नवला बांहि ॥
सीस सूर मुष अगनि कुबेर। इन समांनह सुंदर हेर ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथा कुंअरि और समरसिंह के उपयुक्त दम्पति होने का वर्णन।

कवित्त ॥ स्वाहा ज्यों ग्रह अगनि। सीय ग्रह राम काम रति ॥
नल दमयंत संयोग। द्रुपद कन्या अरजुनपति ॥
इंद्र सची वा जोग। जोग गव्वरिय अह शंकर ॥
भांनर नालिनि कन्ह। सोम रोहिनी नारि घर ॥

फल अप्प हथ्थ सो दीन न्टप। लच्छि सहज लच्छी सुतन ॥
दुज राज राम ग्रह लगन लिपि। सद्धि महूरत चिंति मन ॥ छं० ॥११॥
इंद्र जोग पंचमी। सुबर पंचमि अधिकारी ॥
भोम बीय न्टप थान। सूर ग्रह केत उचारी ॥
इम सुमंत ग्रह लगन। व्याह दंपति दंपति गन ॥
और सबै सुभ जोग। होइ सुष जात धान घन ॥
इक मास लगन बर थप्पि कै। दिल्ली वै दिल्ली गयैा ॥
सुरतांन दंड लीनो सुकर। सुकर भ्रंम कारज ठयैा ॥ छं० ॥ १२ ॥

लग्न का शोधा जाना।

दूहा ॥ थप्पि सु लगनह राज ग्रह। सोधि पुरान उरान ॥
बाजपेय मुष उद्धरे। प्रिथा व्याह उनमान ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवि चंद कहता है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं सकता पर जहां तक बनेगा उठा न रक्खूंगा।

बहुत मोहि कहत न बनै। बरनत कविन कठोर ॥
गुन मैं थोरिन अप्पि हों। कछु बरनिहों सुथोर ॥ छं० ॥ १४ ॥

स्त्रियों के शरीर की उपमात्रों का वर्णन।

कवित्त विधानजाति ॥ अहि ससि सन उतंग। पिक्क उर केहरि करिवर ॥
अलक बयन चष चंच। जीह कटि जघन बराबर ॥
किन्न सकल चल अचल। अदिठ अलसंत चलंतह ॥
चंदन नभ वन भवन। अंब गिरि व्यंभ्क बसंतह ॥
सुमनि सरद भय भीत निसि। रति पति लंघत मंदगति ॥
अबला सुअंग आेपम इतिय। कही चंद इन परि विगति ॥
छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ के कबि आेपम बाल की। कहिबे कों समरथ्थ ॥
सब संयोग बनाइ कै। काम चक्यौ मनुरथ्थ ॥ छं० ॥ १६ ॥

पृथा कुंअरि के रूप तथा नव यैावनावस्था का वर्णन।

छंद मोतीदाम ॥ बरनों ससि जुब्बन की वय संधि। तिनं उपमा बरनी बल बंधि ॥
मिल्ली सिसरं रिति राजह जोर। चंप्यौ न तनं विपनं नह कोर ॥ छं० ॥१७॥

कबै चलि चंचलता चलि जाइ। धरै कबहूं धन धीरज पाइ ॥
तिनं उपमा बरनी कबिचाई। पढ़ावत कांम नई गत ताई ॥ छं० ॥ १८ ॥
करं सिर ठंकि सँवारत बार। सिषावत कांम मनों चट सार ॥
दुती उपमा बरनैं कबि चंद। चलै घट रूप दिषावत इंद ॥ छं० ॥ १९ ॥
चती उपमा बरनी कबि चाह। लरें दुअ कोर मनों ससि राह ॥
उठे थन थोर विराजत वाम। धरें मनु हाटक सालिग राम ॥ छं० ॥ २० ॥
किधों फल तिंदुअ कंचन जान। धरे मनु अंग सुधा रस पान ॥
तुछं कुम राजिय राजत बाम। पपीलकि सोवन षंभ विश्राम ॥ छं० ॥ २१ ॥
जु बंकिय भोंह न तुच्छ गहर। उठे मनु मच्छ धनंक अँकूर ॥
सुबालय उष्टत मोर सुदीस। मिले जनु मंगल है ससि रीस ॥ छं० ॥ २२ ॥
कहूं उठि लागित मोर सुसीर। उठे मनु अंकुर कांम सरीर ॥
तुछं द्रग सोभत कज्जल ताम। चढ़े जनु बाहन बल्लिय काम ॥ छं० ॥ २३ ॥
दुहूं कुच बीच सरोमय तह। लगी म्रग मद्दय छीन सुयह ॥
तिनं उपमा बरनी कवि रंग। पिये जनु कालिय के सुतअंग ॥ छं० ॥ २४ ॥
कबै मिलि स्रोन द्रिगस्सुतु लेहि। मनों सिसु जुब्बन नारिय देहि ॥
स विभ्रम चाइ उभारित चक्क। इमं द्रिग इष्य कटाच्छ सुवक्क ॥ छं० ॥ २५ ॥
इते गुन लच्छिन तच्छिन बाल। करी मनों काम सिरी रति माल ॥
भई जब बाल चढंनय बेस। दई तब पिथ्थ नरिंद गिरेस ॥ छं० ॥ २६ ॥

रावल समर सिंह का गुण वर्णन।

दूहा ॥ नर नरिंद जोगिंद पति। मुंजी ढाल विरह ॥
उडगन निकट नरिंद विय। सेवत रहन गिरह ॥ छं० ॥ २७ ॥*

कवित्त ॥ सिंगी रा अवधूत। वीर चिचंग नरिंदं ॥
कमल पानि सारथ्थ। अरुन तेज कहि चंदं ॥
बर कप्पन कालकं। विरद साहन सुरतानं ॥
बर प्रब्बत वैराज। भोग जोगह बड़ दानं ॥
सो मदन रंभ आरंभवै। एक रंग रत्तौ रहै ॥
कलिकाल घाम छिप्पै नहीं। झलहलंत दुज्जन दहै ॥ छं० ॥ २८ ॥

* यह दोहा मो. में नहीं है।

श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भेजना और इस संबन्ध से अपने को बड़ भागी मानना ।

दूहा ॥ फल श्रीफल दुज हथ्थ कै । जाइ सँपतौ देव ॥
आज हनंदे पाप हम । मिलि चित्रंगी सेव ॥ छं० ॥ २९ ॥
भोजन भाव अनंत किय । दिसि उत्तर ग्रह रष्षि ॥
पाप जन्म चहुआन को । गय दुज राज सु इष्षि ॥ छं० ॥ ३० ॥

पुरोहित का चित्तौर में पहुंचकर बसंत पंचमी को तिलक देना ।

कवित्त ॥ आज हनंदे पाप । समर संमुह ग्रह भग्गे ॥
वय अक्रंम मन नट्टए[1] । क्रंम सुक्रत[2] फल जग्गे ॥
पंच दिवस रहि थांन । जंपि दुज राज सु आइय ॥
बर बसंत बैसाष । लगन पंचमि थिर पाइय ॥
चतुरंग लच्छि चित्रंग दिय । कुयन राम बिप्रह सुतह ॥
जाने कि अग्गि समसान की । देषि सुतन लग्गे सु जंह ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन ।

बाजपेय राज सू । होइ कलजुग्ग ध्रंम्म गुर ॥
और जगनि ना होइ । व्याह मंड्यो सुध्रंम धुर ॥
रथ चौसट्ठि प्रमान । रथ बर जोग प्रमानं ॥
बार बार पर बाज । बीर सज्जे उनमानं ॥
सो इक्क इक्क कर ना किरनि । सत्त सत्त सो बेद[3] विधि ॥
चित्रंग राव रावर सुध्रम । करन मतौ प्रिथिराज सिधि ॥ छं० ॥ ३२ ॥
हेम हयं गय जुगति । सचे मिष्टान पान बर ॥
बर कुबेर लभ्भैन । पार प्रथिराज राज नर ॥
चाव दिसि बर गांन । दांन चाव दिसि अप्पै ॥
ब्रह्म बेद क्रम छेद । सूर नहि सोरथ थप्पै ॥
जे जोग भोग जोगिंद नव । सो उग्गत महि भुल्लई ॥
प्रथिराज राज राजन बली । बलिन जग्ग सम तुल्लई ॥ छं० ॥ ३३ ॥

(१) क्ष. मो.—अक्रंम नट्ठए । (२) को. क्ष. ए.—अक्रत । (३) मो.—देव ।

दूहा ॥ धरम सुथिर राजन बली। देव दैव दुति चाव ॥
चाव दिसि सो देषियै। लच्छि मोल लषि भाव ॥ छं० ॥ ३४ ॥

छंद मोतीदाम ॥ जयं जय छंद जयं गुन रूप। कटावत हेम सु बारह भूप ॥
दिसं दिसि पूरि नृपं नृप थांन। मनों विधि जग्ग कि देवन थांन ॥ छं० ॥ ३५ ॥
रसं रस तोरन बंधत बार। मनो नट वत्त कला गुन चार ॥
सुभै अति सोभ सुभद्रह हेम। मनों बर मेर बिराजत तेम ॥ छं० ॥ ३६ ॥
सबै बर बीर फिरै जिहि पास। मनो बर भांन कलान प्रकास ॥
कढ़ै गर सुंदरि नान प्रकार। मनों ससि भांन उगे इक बार ॥ छं० ॥ ३७ ॥
बिराजत मुत्तिन बंदरवार। मनों भुअ आंन मयूष प्रचार ॥
ग्रहं ग्रह उंच सु पंति बिसाल। मनों कयलासय सोभति हाल ॥ छं० ॥ ३८ ॥
कथा कविचंद सु उप्पम थोर। बिराजत पंतिय कंतिय चौर ॥
धरैं धर अंम्रत पंच प्रकार। जचें तिन देत संतोष अचार ॥ छं० ॥ ३९ ॥
टगं टग लग्गिय दिष्ट प्रकार। दिपे चहुआंन कलाधर सार ॥
भली विधि रूप प्रकार प्रकार। सुभै जनु इंद्र सु जानिह द्वार ॥ छं० ॥ ४० ॥

कवित्त ॥ नहिन हेम पर भास। लच्छि कुबेर लच्छि गुन ॥
थांन थांन नवनिद्ध। देव जंपे सुदेव मन ॥
अनिम महिम गरिमास। लभि देवान मद्धिधिय ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि। राज द्वारह बर बंधिय ॥
जीतिय जितीक सुरतांन निधि। प्रिथा व्याह त्रिंमत करै ॥
धंनि धंनि धंन नव षंड हुअ। लंक पंक गड्डिय डरै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की मानो इन्द्रपूरी है।

साटक ॥ हैंम हेमय द्वार दारुन गनं[1]। दीसंत लच्छी बरं ॥
एंच हून सु च्यारि रत्न गुन ए। सिद्धांत सारं गुरं ॥
संभया थाहन ताह नैव तनयं। धन पौर संधं गुनं ॥
जानिज्जै सुर लोक इंद्र उदितं। धामं सचीवं बरं ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) कृ. मो.-नग।

पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भेजना, घर घर में तयारी होना ।

छंद हनूफाल ॥ धनि ध्रंम धनि प्रथिराज । गुन दच्छि लच्छि बिराज ॥
मधि जमुन में यों धांम । सुर नाक सुर विस्रांम ॥ छं० ॥ ४३ ॥
धज ढूंच फरहर रूप । सुरतान पट्ठय भूप ॥
त्रैलोक न्योंतें काज । मनो देव व्याह बिराज ॥ छं० ॥ ४४ ॥
बिधि वरन वरन सु धाम । कुब्बेर बरषिय काम ॥
बर ध्रंम जग्गि प्रकार । सम दांन विनयह सार ॥ छं० ॥ ४५ ॥
फिरि राज राजन चाल । लच्छि देव एवति पाल ॥
षट पाल कै प्रथु पाल । ....॥ छं० ॥ ४६ ॥
मति ध्रंम भूपति साज । आनंद उछव विराज ॥
जगि जोग जुग्गनि नैर । उच्छाह घर घर कैर ॥ छं० ॥ ४७ ॥
बिधि भांन सुरपति भांन । चहुआंन तिन सम मांन ॥
नव नेह ग्रह ग्रह दान । कवि करै कौन बषान ॥ छं० ॥ ४८ ॥
बर जीह फनपति होइ । चहुआन व्याहक जोइ ॥ छं० ॥ ४९ ॥

हाथी घोड़े सेना आदि की तयारी का वर्णन ।

छंद वृद्धनाराच ॥ परट्ठि सेन सज्जि बीर बज्जए निसानयं ॥
नाराच छंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं ।
गजं गजं हिलं मलं चला चलं गरिट्ठयं ॥
कसंमसं उकस्सि सेस कच्छ पिट्ठ उट्ठयं ॥ छं० ॥ ५० ॥
पस्यौ सुभोम भार हो वराह कंध उन्नयं ॥
चले सयन्न वंधि भूप चंद जंपि बोलयं ॥
मनों दसंति काज सेन मेलि इंद्र तोलयं ॥
ढुरंत चोंर गज्ज सीसता सिंदूर राजयं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
मनों चिजाम कंठ सूर चंद वंधि लाजयं ॥
....
फिरंत डोरि कुंडली सुबाज राज दिष्षर्यो ॥

कै हथ्थ भोर चंद कब्बि ता अमंत पिष्षहीं ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सु नष्षई सुरंग धाप बाज ताज उट्ठहीं ॥
मनों कि डोरि चक्करी सुहथ्थ हथ्थि नष्षहीं ॥
सुबीयता सुरंग चंद उप्पमा सु रहई ॥
मनोकि तार नभ्भतेय काल तेज तुट्टई ॥ छं० ॥ ५३ ॥
लजै भजै मनं गतीय पुब्बता[1] कबी कहै ॥
सु अंषिका कुरंग गत्ति भांन देषिता रहै ॥
रजं रजं जराइ राइ छित्तयं किरावलं ॥
उपम्म चंद कब्बिता कही तहां उतावलं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तयारी का वर्णन ।

कवित्त ॥ पंच राइ पंचाल । लिग्न वैराट बड्ड बर ॥
जैत सींह भोहा भुआल । का कन्ह नाह नर ॥
रा पज्जून नरिंद[2] । पांन ठंठरिय सिंघनग ॥
हह रावत आजांन । बाह बंधव सुबन्न अग ॥
बंधन सुमीर मेवार पति । अति उछाह आनंद धरि ॥
संजुरिय[3] जांन छचन सहस । सहस अड्ड बज्जन सुघरि ॥ छं० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ जस वेली वर हथ्थ लै । फल पुच्छै चित रंग ॥
बर सोमेसर हथ्थ दै । ग्रह सज्जै रस जंग ॥ छं० ॥ ५६ ॥

रावल समर सिंह का ब्याह के लिये पहुंचना, रावल की शोभा वर्णन ।

आयो बर रावर समर । तोरन संभरि वार ॥
बाल देस बनिता बनी । मनों संग रति मार ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सूर रूप रावर समर । बेस बाल सत पच ॥
प्रीत चंद कमनिय कुमुद । परस सरस सित[4] रत्त ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) क्ट. मो.-पुब्बका ।
(२) क्ट. ए.-रा पजून पूरंन ।
(३) मो.-संमिलिय ।
(४) मो.-हितलज ।

नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा का वर्णन ।

छंद मोतीदाम ॥ चढ़ी घर जाच्छिन बाल[1] बिसाल । रही लघुबेस लगी चिचसाल ॥
तनं सुष बालय अंचल लेहिं । चषं चपला कुलटा गति केहिं ॥छं०॥५९
छलावत चंचल अंचल नारि । मनों विधि दंछि कटाच्छन गारि ॥
बंधे सुर नारि कयं सुर रंग । उरिं निरखें घन विद्युत अंग[2] ॥ छं० ॥ ६० ॥
भ्रमं भ्रम होइ सुहेम किरन्न । ससी पर होइ मयूष अरुन्न[3] ॥
मची वर बीरन पीकच[4] कीच । बरष्य कि मंगल सूर सु बीच ॥ छं० ॥६१॥
भ्रमं भ्रम होत करं नष पान । परी छवि होइ रवी ससि जानि ॥
तिनं मुष यों नष में झलकाइ । न दिष्षहि उंच रहै ललचाय ॥ छं० ॥६२॥
दिपै नग चीर चिराकन वांम । रचै जनु दीपक कामय स्यांम ॥
सु उज्जल भांन चिराकनि जोति । फिरै तहां बाल जराइन कोति ॥छं०॥६३॥
उदै जनु लिच्छमी कंति [5]विगास । किधौं तप तेज किराज विलास ॥
कहै कवि चंद उपम्म प्रकास । बन्यौ जनु प्रप्पन[6] तेज विलास ॥छं० ॥ ६४ ॥

समरसिंह के पहुंचने पर मंगलाचार होना ।

कवित्त ॥ बर कलस्स बर बंदि । बंदि तरुनिय सर लिन्नौ ॥
अग्ग सुरंग कवि चंद । तहां उप्पम बर दिन्नौ ॥
घन चंदन बर पठ्ठ । सिढ़िय सोभा सुफटिक मनि ॥
घन प्रवाल थुंभिय विलास[7] । सिर सोभ सुरंग फुनि ॥
उत्तरिय बीर रावर समर । बर जोगिंद नरिंद गति ॥
स्रंगार बाल भूषन कहां । जु कछु चंद बरदाइ मति ॥ छं० ॥ ६५ ॥
दूहा ॥ स्यांम बेस तन बालभय । घटि न कछूव किसोर ॥
दोष बाल बरनत कविय । भयौ भोंर घर चौर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
बर सुबस्त्र तजि बाल नें । सैसब[8] मिस सुंडारि ॥
अब भूषन जब अग्ग करहि । जोवन चढत सवारि ॥ छं० ॥६७ ॥

(१) मो०--बाम ।
(२) ए० कृ० को०--दुरि देखत मेघ तड़ित्त सु अंग ।
(३) मो०--अरंग ।
(४) मो०--बीरह पीकन ।
(५) ए०--विगास ।
(६) मो०--दर्प्पन ।
(७) मो०--विसाल ।
(८) मो०--शैशव ।

श्रृंगार का वर्णन।

छंद मोटक ॥ तजि मज्जन सज्जि सिंगार अली। प्रगटी जनु कंद्रप जोति कली॥
सुसँवारिय केस सुरंग सुगंध। तिनं बर गुंथि प्रसून सु बंधि॥ ६८॥
तिनं उपमा सु कही कवि सुद्ध। लग्यौ ससि राह अधंमय[1] जुद्ध॥
चलें अलकें अलि चंचल घट्ट। लगी जुनु कालिय नागिनि पट्ट॥छं०॥६९॥
जरयौ ससि फूल धर्यौ मनिबद्ध। उग्यौ गुर देव किधौं निसि अद्ध॥
त्रियं उपमा कबरी सु अलप्प। चढे मनु[2] मेर ससी लय अप्प॥ छं०॥७०॥
सी मंति सुमुत्तिय बंधि संवारि। तिनं उपमा बरनी सु विचारि॥
परी रवि छोड मयूषन तार। भए जनु सिद्ध उधातम धार॥ छं०॥७१॥
बनी कबरी बर पुत्तरि बांम। अध्यातम पाठि पढावत कांम॥
धर्यौ बर भाल तिलक्क मिलाइ। मनों ससि रोहिनि आनि मिलाइ॥
छं०॥ ७२॥
मनों ससि बीयक तीय समान। तिनं सिरबाइ लिलाट सुजांन[3]॥
दुती दुतियं बरनो कवि चंद। दुर्यौ छबि देखि सरद्द कौ इंद॥ छं०॥७३॥
बनी बर भोंह सु बंकिय एह। मनों धनु कांम धरं विन जेह॥
कहौं बर नासिक ओपम एह। सु काम भवन्न कि दीपक तेह॥ छं०॥ ७४॥
द्रगं उपमा दुति यों दमकै। सु मनों सुग षंजन के चमकै॥
जु दिषै बर भाइ दुलोचन कोर। मुचावत कांम कमान के जोर॥ छं०॥ ७५॥
चाटंकन की उपमा इतनी। जु कही कवि चंद सुरंग घनी॥
जु सुन्यौ रबि राहु ग्रह्यौ ससि है। सु फिरै दुहु बीच सहायक ह्वै॥छं०७६॥
उपमा सु कपोलन की चिलकै। जु मनों ससि ह्वै रवि में झलकै॥
जुटि गंठिग मुत्तिय पंतिन की। तिनकी उपमा कवि नै मनकी॥ छं॥ ७७॥
दुअ पास कपोलन तेज कुर्यौ। मनों तारक लै ससि उग्गि उर्यौ॥
जु चिबुकन की उपमा छिलज्यौं। मनों अंग सुता सितपच्छ तज्यौं॥
छं०॥ ७८॥

(१) मो०–अधर्म्मय।
(२) मो०–मनों।
(३) ए० कृ०–सुजानि।

कल ग्रीव त्रिवल्लिय रेष वनं। सु अच्छौ मनु कन्दर पंच जनं॥
त्रिय बाल सुमालन लाल सजै। सुधसी जनु भारति नभ्भ तजै॥ छं०॥७९॥
गुंथी पट स्यांम सु मत्तिय माल। भयौ जनु तीरथ राज विसाल[१]॥
उठी पट कुट्टिय कंचुकि बांम। कि जीयन को त्रिपुरं चलि कांम॥
छं०॥ ८०॥
कछू छबि छत्तिय की बरनं। सु रच्यौ मनों कांम तिनं सरनं॥
बर लंकिय लंकय सिंघ कितौ। वर मुट्ठिय मांहि समाइ तितौ॥ छं०॥ ८१॥
* पसरे नन द्रष्टि न ठौर रुकै। * मृगतिस्नह देषि मनों सु चुकै॥
कटि मेषल उप्पम एह धरं। मनों नौग्रह सिंघ सहाइ बरं॥ छं०॥ ८२॥
सुभंत समुप्पित अंगुरि तच्च। मिले गुरु मंगल हत्तनि षच॥
बनी कर पौंचिय पट्टय स्यांम। तिनं उपमा बरनी बर तांम[२]॥ छं०॥ ८३॥
लटकै बर अंग सु फूंदन लाष। झुलैं मनु नागिनि चंदन साष॥
बरनों मनि बद्धि बढंत नितंब। सुभै जनु उज्जल द्वै रबि बिंब॥ छं०॥ ८४॥
सकोमल जंघ सु रंग सुढार। भ्रमी मन चित्त षरादिय मार॥
सजे बहु वार सिंगार सुरत्ति। चली तव हंस उथप्पन गत्ति॥ छं०॥ ८५॥
सु एडिय उप्पमता कवि एह। रची जनु कौरिय कुंद नरेह॥
बरने नख की उपमा कविता। सुजरे मनु कुंदन मुत्तियता॥ छं०॥ ८६॥
†जल बूंद पुहप्प कि द्रप्पन दुत्ति। †कि तारकि तेज कि हीर प्रभत्ति॥
बर गोप्प सुगंध सुजांनियनं। प्रगटै बर वास सदेव घनं॥ छं०॥ ८७॥
षट दून चवग्गुन में बरनं। सिनगार अभूषन ए कहनं॥
तव सज्जिय बालत मोर मुषं। उपमा कविचंद कही सुरुषं॥ छं०॥ ८८॥
इन भाइ सुमुत्तिय गुंज[३] बहोइ। द्रिगं अधरं प्रतिबिंब सजोइ॥
करैं रंगरत्त दुकूल सु ओर। झुलै मुष ऊरध पाइ झकोर॥ छं०॥ ८९॥
बन्यो मनवंछ मनोरथ जंम। करे जह चंद जु धूरिक क्रम्म॥
मिले कि कंहू अधरा रस पांन। कहै कविचंद सु जीरन जांनि॥ छं०॥९०॥

(१) को०--प्रयाग।
* ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं।
(२) मो०--छबिलांम।
† ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं।
(३) मो०--गज।

सु देषि कह्यौ कविरुप अभ्यास । मनों उठई मकरंद सुबास ॥
सजे षट दून अभूषन बाल । मनों करि कांम करी रति माल ॥ छं०॥९१॥
सु लज्ज सु संकर सों मन अंध । मनों अरनांमद अग्ग सुबंध ॥
धस्यो तन कौरव वस्त्र कुँआरि । मंडी जनु संभ मनंमथ रारि ॥छं०॥९२॥

पांच सौ वैदिक पंडित, दो सहस्र कोविद, एक सहस्र मागध आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूमधाम से रावल समरसिंह का मंडप में आना ।

कवित्त ॥ सय सुपंच वर विप्र । बेद मंचं अधिकारिय ॥
उभय सहस कोविद । छंद तक्कह[1] अनुसारिय ॥
सहस एक मागध सु । सित्त दोरांन पविचिय[2] ॥
सहस अठ्ठ डाहालगत । गाइन सुर जित्तिय ॥
उडिरेन धेन गोधूल कह । सहस दोष कहन घरिय ॥
संभरिय ग्रेह[3] आहुठ्ठ पति । मिलि विधान[4] मंडप भरिय ॥ छं० ॥ ९३ ॥

विवाह मंडप की शोभा का वर्णन ।

छंद नाराच ॥ विधांन धान मंडपं । जवांन जग्ग[5] पन्नयं ॥
विपष्य चारि कित्तनं । समर्थ दैव रत्तनं[6] ॥ ९४ ॥
धुनइ धुंम्म सालियं । अषंड लंन वालियं ॥
प्रजान पुन्य पानयं । सु पंच कोटि दानयं ॥
सभूत भेम लच्छिनं । अभूत दांन दच्छिनं ॥ छं० ॥ ९५ ॥
दमित्त काम लंबरं । कलंक कित्ति रावरं ॥ छं० ॥ ९६ ॥
भमेंन भूमि भारियं । अछंत पांनि धारियं ॥
कुसंभ चीर गंठियं । प्रथा प्रसंग पठ्ठियं ॥ छं० ॥ ९७ ॥
सु सद्दियं जयं जयं । सु सद्द विप्रयं लयं ॥

(१) ए. को. कृ.—तर्क ।
(२) मो.—पवित्तिय ।
(३) मो.—एह ।
(४) ए.—विग्रान ।
(५) मो.—जग ।
(६) यह तुक मो. में नहीं है ।

अहन्नयौ सु उद्दयं । सिकार सद्दयं सयं ॥ छं० ॥ ९८ ॥
अचिज्ज सिद्ध चारनं । विचार बार बारनं ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ परनि बीर रावर समर । बहुत कहूं रस जोइ ॥
कवि वर बरनत ना बनत । और सुभष बहु होइ ॥ छं० ॥ १०० ॥
करे चंद बरदाइ दुहुं । बार बार मनुहार ॥
राज राज ढिग ढिग फिरै । मनों समहु रविनार ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां विवाह मंडप में इन्द्रादिक देवता जय जय कर रहे हैं और लग्न का समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है।

कवित्त ॥ चौहानन के ग्रेह । इंद्र जवि[1] होय अग्नि बर ॥
अष्ट देव सत सील । नाम[2] संतोष मंच बर ॥
सहस गयन बर राज । धीर ढिल्ली अधिकारिय ॥
जच्छ देव गंध्रव्व । जयति जै जै उच्चारिय ॥
दिव देव लगन आवै घरी । तिम तिम बाढै पेम रस ॥
ज्यों चढे समुद हिल्लोर बर । तिम सु बीर बढ्ढुति जस ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दान सकल सामंत । न्यांत अग्गै अधिकारिय ॥
इंद्र साज कुब्बेर । इंद्र वासम न विचारिय[3] ॥
बचन रचन सचि कहचि । देव सचि कहै ग्यान सधि ॥
अष्ट जोग भुल्लै सभोग । निरषंत सकल विधि ॥
जे जे नरिंद संभरि धनी । संभरि विधि संभरि चरित ॥
भूपाल बीर दरबार बर । तिहित देव लागे सुगत ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सांमतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ प्रथमं सुकन्हं निवंत्यौ सु राजं । कही उप्पमा चंद कव्वीति साजं
असितं[4] एक बाजी करी पंच दूनं । दियौ राज कन्हं निवंतौ स जनं ॥ छं० १०

(१) मो०--जव । (२) ए०--नांस ।
(३) मो०--प्रति में "दान वरषत जलधारिय" पाठ है ।
(४) को० कृ० ए०--सितं ।

लक्की वस्त्र हेमं नगं पारि पारं। तिनं देषते देव गत्ती विचारं॥
दियं निड्डुरं राइ रट्ठौर राजं। भुजंगादि भुल्लै कहै सब्ब साजं॥ छं०॥१०५॥
दियं बंध राजं सलष्षं पवारं। धनं राइ कुब्बेर लभ्भै न पारं॥
महा दंत दंतीन की पंति बंधी। दरब्बार मानों नगं जोति संधी॥ छं०॥१०६॥
दियौ जाम जद्दों सु लहो जुवानं। सहस्सं दसं हेम गज एक पानं॥
दियौ राज षीची प्रसंगंति बीरं[1]। उभै दून हथ्थी हयं सत्त सूरं॥ छं०॥१०७॥
रजक्की सु वस्त्रं अनेकं प्रकारं। दिषै बीर बीरं महा बीर सारं॥
दियौ राज गौइंद आहुट्ट राजं। दियं तीस हथ्थी महातेज साजं॥ छं०॥१०८॥
इकं माल मुत्ती उतंगं सरूपं। तिनं देखतें भांन झंनं न भूपं॥
अतत्ताइ दीयौ लियौ नाहि राजं। हुतौ ईस भक्तं उदै देव साजं॥ छं०॥१०९॥
चिया रूप आगें महा पाप लच्छी। तिनं राज राजं निरष्षी अलक्की॥
दियौ राम राजं रघुब्बंस बीरं। तिनें पार कुब्बेर लभ्भ न तीरं॥ छं०॥११०॥
उभै सत्त बाजी उभै सत्त हथ्थी। तिनं सथ्थ एकं किरन्नी बिरथ्थी॥
उऐ एक राजं दियौ एक भानं। दसं तेज राकी पराकी प्रमानं॥ छं०॥१११॥
दियं सत्त बंधं कनक्कू बिराजं। उभै सहस हेमं इकं बाज राजं॥
कियौ राज न्यौंतै अजम्मेर बीरं। सदा सागरं गौरयं लाज नीरं॥ छं०॥११२॥
दिए पंच बाजी सुरंगं तुरक्की। जिने धावतें वाइ की गत्ति थक्की॥
दियौ राज चंदं पुँडीरं सु बीरं। महा हेम सहसं उभै बाज तीरं॥ छं०॥११३॥
दियौ राज कैमास न्यौतौ नरिंदं। घरं पंचमौ भाग लच्छी स व्यंदं।
जितौ राज राजं दरब्बार हेमं। तितौ पंचमौ भाग अप्पौ सु तेमं॥ छं०॥११४॥
दियौ चाइ चामंड लच्छि प्रकारं। नवं निद्धि सिद्धं सुलभ्भै न पारं॥
रह्यो एक वस्त्रं उभै पंच बाजी। दियौ राजराजिंद राजिंद साजी॥ छं०॥११५॥
दियौ अल्हनं अंग इत्तौ प्रकारं। तिए तात के नग्ग लिन्ने सुधारं॥
हयं हेम रूपं गयदं सु लच्छी[2]। जिनं देषतें इंद्र कै। गब्ब गच्छी॥ छं०॥११६
दियौ दान सूक्ष्म[3] सादल्ल गोरी। इकं बाज बीरं रजं पंच कोरी॥
दियौ राज चंदेल भोंहा विचारं। तिनं न्यौंत कौ कोइ लभ्भै न पारं॥ छं०॥११७॥

(१) को०—चीरं। (२) ए० ऋो० क०—में "तिनं अंग अंगं विरष्षं सुलच्छी" पाठ है।
(३) ए० को० क०—सूक्ष्म।

नगं पंच मुत्ती इसी अट्ठ माला । जिनें द्रव्व कौ छेह आवै न पाला ॥
बँधे साहि गोरी लही तस्सबीरं । दई राज चौहांन न्यौतें सरीरं छं०॥११८॥
सतं पंच बाजी सतं अट्ठ हथ्थी । तिनं देखतें तेज कुब्बेर नथ्थी ॥
दियौ राज जंघाल जद्दौं नरिंदं । तिनें नांम भीमं महातेज कंदं ॥छं०॥११९॥
दसं बाज पंचं इकं[1] मुत्ति मालं । तिनं तेज आहत्त रवि किरन झालं[2] ॥
हसं मीति च्यारं सयं समरकंदी । गुरं राम दीयौ मनौं राज इंदी ॥
छं० ॥ १२० ॥
लियौ ना सुराजं कछू नाहिं रष्यौ । पछै धर्म राजं सु राजं बिसष्यौ ॥
दियौ बीर चालुक्क बाघर बीरं[3]। सिरं काज राजं सुभारथ्थ भीरं ॥
छं० ॥ १२१ ॥
न्रपं हथ्थ देतं सु सेवक्क मंडै । महा छच छची न छचीन षंडै ॥
हस्यौ राज प्रथिराज दै हथ्थ तारी । तिनं भारती कौन आवै प्रकारी ॥
छं० ॥ १२२ ॥
दियौ टांक चाटा चपल्ल प्रकारं । इकं बाज तेजं मनौं अग्गि सारं ॥
दियौ वग्गरी देव देवाधि दानं । सहस्सं त बाजी दियं बाहु पानं ॥छं०॥१२३॥
दियं अंबरं छाव से पंच दूनं[4] । तिनं तेज आहन्न देषंत भूनं ॥
डुल्यौ सर्व सामंत कौ गर्भ भारी । पछें दोन सीसं दियं हथ्थतारी ॥
छं० ॥ १२४ ॥
दियौ राज हम्मीर हाहुलि इंदं । तहां कव्वि चंदं उपम्मा सु छंदं ॥
म्रगं नाभि कप्पूरयं गुंट वाजी । दियौ मुद्ध[5] मुष्टं तनं तेज साजी ॥
छं० ॥ १२५ ॥
इकं कास मीरं पची संती षंभं । इकं भद्र जातो सु हथ्थी अचंभं ॥
सबं सट्ठि हज्जार भारं प्रमानं । दियौ चारके कष्ट सोभिनं दानं ॥छं०॥१२६॥
दइ एक मालं सुमुत्ती सुरंगं । दिनं एक कौ मौल आवै सुभंगं ॥
दियौ नीति रायं सुपिचीय दानं । षिझ्यौ राज चहुवान घल्यौ न पानं ॥
छं० ॥ १२७ ॥

(१) मो०—नगं । (२) को०—जालं । (३) ए० कृ०—बीलं ।
(४) ए०—पूनं ।
(५) मो०—धुमीव ।

दई भान भट्टी निधी नाप कारं । उभै एक बाजी तुछं द्रव्य धारं ॥
दियौ बीर पाचार न्यौती प्रमानं । तिनं दान कैमास कों आइ थानं॥
छं० ॥ १२८ ॥

मुरं दोइ बाजी सु तत्तं प्रकारं । दई लष्य दूनं अधं तानि तारं ॥
दियं अल्हनं दानयं भत्ति घट्टी । इकं बाज रूपं अधं सच्च पट्टी ॥ छं० ॥ १२९ ॥
इतौ अब्ब सामंत दीनौ प्रमानं । सगा रष्यदानं करै को बषानं ॥ छं० ॥ १३० ॥

कवित्त ॥ जालंधर बर बाइ । बीर थट्टा मुलतानी ॥
बंग तिलंगी तुच्छ । कारनही निड्डानी ॥
बर गोतम दिसि गंग पार । परबत दिसि राजं ॥
माह्रु मालव राज । बीर बीरच गति राजं ॥
कुंकुन सकुंच कालिंग दिसि । कंदलेस कछ अच्छु गति ॥
न्यपराज राज राजन बली । सुबर बीर जा बीर मति ॥ छं० ॥ १३१ ॥

पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है दोनों की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ बलिय राज प्रथिराज । सुधन सगपन सु द्रष्ट[1] गति ॥
बब्बल कौ बल राच । सबर बीरच सुबीर मति ॥
सुत्त मत्त रजपूत । फिरै चाव दिसि धारं ॥
अंग अंग तनु कुटी । क्रम्म सा क्रम्मय सारं ॥
मति गरुव राज राजन बली । धरैं अंभ सम्भ सुधर ॥
चित्रंग राव रावर बली । उंच सगपन तत्त बर ॥ छं० ॥ १३२ ॥

कवित्त । अति उदार पहु पंग । सुनिय जग बत्त स्रवन्नं ॥
बलिय भाव आदरन । पवै सम पवित समन्नं ॥
बहुरि गरुअ तोंअर चिनेत । मानय मातुल गुर ॥
तिचित राज चितयौ । भ्रंम न्नरति विवाह धुर ॥
इक मात पुत्र आनंग वर । दै भगनी दै पुत्र जनि ॥
संसार संभरिय राज गुर । भए सजन या परि सुभनि ॥ छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो०-दृष्ट ।

पृथ्वीराज और पृथाबाई के नाना अनंगपाल का वर्णन ।

अनग पाल तोंअर सु । भ्रम्म धारन उद्धारन ॥
बंस बीय मातुलह । भए है बीर सुभारन ॥
कलि तारन अरि देह । जुगनि कित्ती बिस्तारन ॥
चाहुआंन कमधज्ज । बंस मातुल गुर पारन ॥
प्रथीराज दिल्ली न्रपति । चिभंगी बर चिंतयौ ॥
पंचमि बिवाह पंचमि घरिय । भलै मुहूरत में भयौ ॥ छं० ॥ १३४ ॥

कवित्त ॥ ब्याह मद्धि करनेस । जग्य मधें चित डोले ॥
छूतौ पाप कविबंध । देव देवासुर बोले ॥
ज्यौं चारन घर[1] निंद । जाइ भुक्तै अनुधारी ॥
सा सुरिंद संग्रहै । दोष लग्गै जुग भारी ॥
ग्यार सें अंन भषह सुतत । महा दोष अति ही सुबर ॥
बडबंध छोड़ निग्रह घरन । लघु बंधव हुअ नरक पर ॥ छं० ॥ १३५ ॥

विवाह का देव विधि से होना, बहुत सा दान दहेज देना ।

छंद पद्धरी ॥ तिन मध्य बिराजत राज राज। निर्मलिय कला रवि तेज साज ।
ज्यूं जुगति जूबवर करन भोग । आए सु राज राजन सभोग ॥ छं० ॥ १३६ ॥
आए सुराज तिस्सुत नरिंद । हाडाल कंन कन्नह सुच्छंद ॥
पंचाल देस सोमेस सूर । झलकंत मुष्य न्रमल्ल सनूर ॥ छं० ॥ १३७ ॥
आए सु बीर क्रिन्नाट कर्न । धूंमह सुदेव धुम्मह सुपंन ॥
एलची देस भंडिर बीर । आए सु कोटि मुष तिनह नीर ॥ छं० ॥ १३८ ॥
देवत्य ब्याह चहुआंन कीन । दंच्यं सु ब्याह सम बरह चीन्ह ॥
अप्पी सु पुत्ति सिवरह सु ग्रेह । कल बढी कला जिन लीन देह ॥ छं० ॥ १३९ ॥
अप्पे सु एक सिव ग्रह प्रमांन । आग्रन्न ब्याह द्रुग्गह निधान ॥
मै मत्त मत्ति मंतह सु कीन । सिंगार सार सत सहस दीन ॥ छं० ॥ १४० ॥
हुअ ब्याह जनक सीता प्रकार । मिलि जग्य राज राजन सुभार ॥
संभरि नरेस सोमेस पुत्त । रस मांनि बीर अब भूत भुत्त ॥ छं० ॥ १४१ ॥

(१) मो०-घर ।

साटक ॥ ऐ सोमेस सुबंन्न संभरि जयं। तारंग सूरं बरं ॥
सा दुज्जं दुज भ्रंम्म देवति धरा। ग्राहं ग्रहंजं षलं ॥
तामध्यं न्रप अंस सोम न्रपयं। नामं नरिंदं धुरं ॥
प्रिथ्थू नाथ सनाथ जग्य करनं। राज्यंद राजं गुरं ॥ छं० ॥ १४२ ॥

व्याह के पीछे दर्बार में आना।

कवित्त ॥ दलन मंच सब राज। आइ दरबार सु इंदं ॥
ज्यों नछिच विंटयौ। सरद सोहै अति इंदं ॥
कनक पंति नग व्यंट। भांन विंथ्यौ सुमेर बर ॥
जस विंथ्यौ बल लोई। ईस विंथ्यौ सु जटद्धर ॥
यों बिंथ्यौ राइ सोमेस सुअ। सबल राज राजन गहअ ॥
आरत्ति बीर देषति न्रपति। भांन चंद लग्गै हहुअ ॥ ॥ छं० ॥ १४३ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ हहअ सु लग्ग सु अर गिरि। गहअ लगै प्रथिराज ॥
चावद्दिसि लक्खी सु जन। काजन मुक्किय काज ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दूहा ॥ लयौ जनम या कज्ज न्रप। धर धर धरपति कांम ॥
चाव द्दिसि भूपति सुभे। जु कक्कु भूमि पर धांम ॥ छं० ॥ १४५ ॥
छन्द पद्धरी ॥ जो कछू राज राजन नरिंद। सो भये कांम प्रथमीस इंद ॥
नर वर न्रपत्ति दीसै प्रमांन। उज्जले गंग ज्यों भ्रंम ध्यांन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
बर सुबर बीर पग मुक्कि धीर। बहु द्रव्य इंद्र राजन सरीर ॥
नव लच्छि अंग ग्रह ग्रह प्रमांन। उच्छास लोइ मंडै निधान ॥ छं० ॥ १४७ ॥
कनबज्ज बीर मुक्की सु लच्छि। तिचि देषि इंद्र कौ ग्रब्ब गच्छि ॥
कुब्बेर कोपि अंतह निरष्षि। सो ब्रंन धार ग्रह ग्रह बरष्षि ॥ छं० ॥ १४८ ॥
बहु बंधि संधि मनु देव काज। मंगल सु जोर नीसांन बाज ॥ छं० ॥ १४९ ॥

रावल का रनिवास में जाना।

दूहा। बर बंदे सुंदरि सकल। चावद्दिसि फिरि पंति ॥
मनु अंग अंग अनंगनह। रति बर राजति कंति ॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो०--बलं।

कवित्त ॥ वरनि चारु उप्पर । उतंड अच्छित मुत्ताहल ॥
ससि उप्पर ससि किरनि । धीर सुषे गुन चाहल ॥
चावद्दिसि अंगनां । अंगनं मित गुन मंडहि ॥
एक एक कों मिलत । एक लज्या तन षंडहि ॥
प्रिथा दिष्षि झंषि चिचंगपति । अच्छित मंचह विक्रति ॥
ओडंन ओट ओटन कियै । अंनयं नारि नंषै सुहत ॥ छं० ॥ १५१ ॥

तिलक होना, और भांवरी फिरना ।

छंद भुजंगी ॥ वियं अंग अंगंति अंगं तिरंगं । बुले बेद बेदं सुजं मचं भंगं ॥
कला की अनेकं प्रकारंत व्याहं । टरै लग्न हाहं महं मंत राहं ॥ छं० ॥ १५२ ॥
दियं हस्त थालं तिलक्कंति राजं । तहां चंद कव्वी उपम्माति साजं ॥
मनों क कमोदंत ज्यौं इंद साजं[1] । मिल्यौ जाइ चंदं सु मुत्तीति पाजं ॥
छं० ॥ १५३ ॥
दिसा देव मंचं अमंचंति धारें । न्रपं भ्रंम सोधै विधी देव टारें ॥
बुले बिप्र अंगं सु विड्डी सुवेदं । मनों देवता अग्ग भूले सषेदं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
नृपं राह दिट्ठं कहरंति टारै । फिरैं भावरी भांन सुम्मेर सारै ॥ छं० ॥ १५५ ॥

ऋषीकेश वैद्य और चन्द के बेटे जल्ह आदि को दिया तब रावल फेरा फिरे ।

कवित्त ॥ श्री पति साह सुजांन । देस थंभह सँग दिन्नो ॥
अरु प्रोहित गुर रांम । ताहि अग्या नृप किन्नो ॥
रिषिकेस दिय ब्रह्म । ताहि धनँतर पद सोहै ॥
चंद सुतन कवि जल्ह । असुर सुर नर मन मोहै ॥
कवि चंद कहै बर हाथ बर । फिरि सुराज अग्या करिय ॥
करि जोरि कह्यो पीथल नृपति । रावर सत भावरि फिरिय ॥ छं० ॥ १५६ ॥
दोहा ॥ निगम बोध गोतंम रिष । थिरि जेहि दिल्ली थांन ॥
दास भगवती नांम दे । प्रिथीराज चहुवांन ॥ छं० ॥ १५७ ॥
रिषीकेस अरु राम रिष । बहु विध देकर मांन ॥
प्रिथा कुंवरि परनाय कै । संगि चलाये जांन ॥ छं० ॥ १५८ ॥

(१) मो०—छाजं ।

प्रत्येक भांवरी में बहुत कुछ दान देना ।

कवित ॥ एक फिरत भांवरी । साठि मेवात गांम दिय ॥
दुतीय फिरत भांवरी । दुरद दस एक अग्गरिय ॥
त्रितिय फिरत भांवरी । दयौ संभरि उदक्क कर ॥
चौथी भांवरि फिरत । द्रव्य दीनौ अनंत बर ॥
चहुवांन चतुठ चावद्दिसां । हिंदवान बर भांन विधि ॥
गुन रूप सहज लच्छी सुवर । सहज बीर बंधी जु सिधि ॥ छं० ॥ १५९ ॥

रावल समरसिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन

छंद भुजंगी ॥ अनेकं अनेकं प्रकारंन सव्वी । करै राज ध्रम्मं सुतं ध्रम्म कव्वी ॥
मिले सर्व छित्री इते व्याह राजं । तिलभ्भै नहीं नेक राजं सुसाजं ॥ छं० ॥ १६०
महं भाजनं रंग रामं प्रकारं । कला अट्ठ मांनों सु चव्वयं पसारं ॥
रतं नील रेनं किते स्याम सेतं । तहां ओपमा चंद बरनै सचेतं ॥ छं० ॥ १६१
गुरं भांन चंदं अरी राह राजै । मनों एक नविच सज्जे बिराजै ॥
उडंतं अबीरं घनं सार रंगं । तिनं देवता बास भूलंत अंगं ॥ छं० ॥ १६२
किते भेद भेदंत मिष्टांन रूपं । तिनं वास देवं लगै सोम भूपं ॥
विधं कुंड मंडप्प मंडे उतंगं । तिनं वास भौरं अली भूलि संगं ॥ छं० ॥ १६३
जिती विह चित्रंग गावै अपारं । दियै विप्र गारी सबं भक्ति सारं ॥
तुमं मद्धि छित्री न जानंत तत्तं । तिनं बंस कोनं सु पुच्छै अभीतं ॥ छं० ॥ १६४
रसं रचि कच्छी बडी पग्ग उट्ठी । तिनं ढुंढि ढंढात नीके लिपट्टी ॥
बडे राज देवत्त बीसल्ल नारी । सराधार भारं बली सत्तु धारी ॥ छं० ॥ १६५
तुमें चित्त चित्रंग चित्तं विचारं । तुमं ब्रह्म वंसं धरैं सत्तु भारं ॥
दियौ राज हारीत रिषं प्रमानं । कयौ तप्प एकं गए कंग पानं ॥ छं० ॥ १६६
सिवं लिंग बिम्भे तुठ्यो सो अघाटं । तिनं ठांम नामं धर्यो भेद पाटं
रमै विप्र साथं सु हारीत रिष्पं । करै सेव बाबं स आदत्त सिष्पं ॥ छं० ॥ १६
किते छेद भेदं किते गान गावै । किते देवता सेव पुष्पं चढ़ावै ॥
करै रष्षि तप्पं दिनं गंग न्हावै । तहां उज्जलं गंगपं नीर धावै ॥ छं० ॥ १६८
करै अंग कष्टं सधै पंच अग्गी । महा तेज कीनं तनं पंच नग्गी ॥
कियं पूरनं तप्प तथ्थं स अग्गं । लियं लष्ष हारी अहारी सु मग्गं ॥ छं० ॥ १६

जिती काल बेसं वहै बाल पत्या । तिनं देषिकैं सह जाजुल्य गत्या ॥
रिषं उंच तेनं छिनं मोल चायं । नहीं मुष्य मंड्यौ लियौ झेलि पायं ॥ छं० ॥ १७० ॥
चल्यौ अड्ड सीसं किये उड्ड पायं । महा तेज दुःष्षं दिष्यौ रिष्ष रायं ॥
नमो मंच मंची नमो चौसपालं । दियौ राज बंसं जमं कौ बिसालं ॥ छं० ॥ १७१ ॥
रयं मंच प्रम्मान दिष्यौ सुरिष्षं । दई भूमि जुग्गं जुगंतं बिसष्षं ॥
तिनं बंस चिचंग चिचं सु राजं । परं नीति बीरं प्रिया बाल काजं ॥ छं० ॥ १७२ ॥

छंद गीता मालची ॥ ढलकंत बेंनिय बाल सेंनिय स्रग्ग नेनिय गावईं ।
मधुरं सबद्दं रहसि बद्दं हइ हद्दं भावईं ॥
वै स्यांम सोरं गुनति गोरं चिच सोरं सोहईं ।
गुञ्जंत[1] थोरं उठे कोरं बेस भोरं मोहईं ॥ छं० ॥ १७३ ॥

बिवाह की शोभा का वर्णन ।

कवित्त ॥ विधि स्रृँगार रस बीर । हास करुना तन चारिय ॥
रुद्र भयानंक मंत । करी करुना ता वारिय ॥
करुना तजि रस अठ्ठ । भयौ नृप राज बिवाहं ॥
सुष सनेह धन ग्रेह । राज जोगिंदति साहं ॥
सुष व्याह सजन सम हृत रवन । गई नठ्ठि चय जांम निशि ॥
सहदेव देव देषन चलह । भुगति मुगति धन राज बशि ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ सा सुंदरि सुंदरि सुकथ । रस[2] दरसन परिमांन ॥
मनों देव देवाल बजि । बर दुंदभी निसांन ॥ छं० ॥ १७५ ॥

छंद भुजंगी । बजे दुंदभी भेरि देवाल थानं । करे युक्ति रुपं अनेकं प्रमानं ॥
व्रिपं भीर ऐसी दरब्बार थानं । मिले षंड षंडं सुराजान जानं ॥ छं० ॥ १७६ ॥
प्रिया रूप आगैं प्रथी कौन ऐसी । जनक्कं सुदारं सिया रूप कैसी ॥
भुगत्ती मुगत्ती हितं ताह कारं । सबै दिष्षियं राज राजं दुआरं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
महा भोजनं ते प्रकारं विलासं । तिनं स्वाद तें देव छंडे न पासं ॥
रचै अग्गि स्वाहा सुदेपत्ति होऊ । महा जग्य जापं अहंतंत सोऊ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

(१) कृ०--उजंत । (२) को० कृ०--सर ।

छिन छिन्न लंका सपत्तौ विराजै । दिनं अष्ट ग्रेहं रचै द्वार साजै ॥
सुई राज लच्छी न पूजै सुकंती । जये देवता जग्य में जीमवंती ॥ छं० ॥ १७९ ॥

कवित्त ॥ बहुत मंसधन सार । असन बलमीन समंक्षत ॥
अनँग जोग फल अनत । पान मिष्टान असंक्षत ॥
छिति छिची विधि सजहि । देइ लज्जी लछि रुपं ॥
रंक रंक गति छंति । होइ राजिंद सुभूपं ॥
नवनीत सुनीत पुनीत प्रभु । चाहुआन रंजे सुभर ॥
जानिये राज राजंन कै । सुरा थान माया सुधर ॥ छं० ॥ १८० ॥
अग्र दीप धनसार । बंटि मृगमद पान रस ॥
बहुत सरस रस राज । दिष्षि प्रतिब्यंब अप्प जस ॥
अरति ब्यंद अरबिंद । कमल कैरव ससि सागर ॥
भुगति मुगति संग्रहै । मुकति भंजै अति आगर ॥
मय मंत कूअ[1] अष्षा अषम । लषिन बतीस सुवंधि गुन ॥
तिहि काज भोज राजन करत । उछ्छाहं प्रथिराज मन ॥ छं० ॥ १८१ ॥

दूहा ॥ माया मोष[2] सु देषि कैं । गति भूले चालाहि[3] ॥
मानों मंच सुमंति[4] गति । बर ब्रह्मा बस भांहि ॥ छं० ॥ १८२ ॥

पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन ।

कवित्त ॥ एक एक रन जोग । गरुअ रहअत्त चित्त बिधि ॥
साम दांन लघुमंति कंति मग्गीति संति सिधि ॥
अबलि बाज गज एक । उभै अप्पै नर वस्त्रं ॥
हेम हीर रजकीय । पार पावै ना मंतं[5] ॥
गरुअत्त गरुअ भय भत्त सों । सत हथ्थिय करनिय जुगति ॥
प्रथिराज राज राजन वलिय । देव दांन राजन भुगति ॥ छं० ॥ १८३ ॥

कवित्त ॥ राज दांन विधि देत । लगि आचिज्ज थांन चिय ॥
नाग लोक सुर लोक । रवी मंडल नर नर हिय ॥

(१) मो०—कुआ । (२) मो०—सोभ । को०—सोख ।
(३) मो० कृ० को०—चलाहिः ।
(४) ए०—को०—कृ०—मंत । (५) मो०—मत्रं ।

इयति कंति कंतिर्यति। इथ्थ पंतिय रवि राजै ॥
सु कवि चंद बर दाइ। देषि देवाधि सु लाजै ॥
बदि राज षांन संभरि धनी। किहि बिधि लछी लछैं गुनौ ॥
बेंह सुगंग उड़गनति नभ। पत्त तरोवर गिर घनौ ॥ छं० ॥ १८४ ॥

दूहा ॥ दांन मांन निरमांन गुन। भगति रत्ति नृप जोर ॥
कहा दिष्षि कोइ लेइ निधि। भयौ भरें[2] घर चोर ॥ छं० ॥ १८५ ॥

दूहा ॥ तन अग्गै मन चलत है। मन अग्गे तन जाइ ॥
जिहि बिधि दांन सु उच्चरै। तिहि बिधि पाप सु जाइ ॥ छं० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ क्रम्मसु अति बिधिनां रची। अंग रोर सिर पान ॥
तिन भंजन सोमेस सुअ। धनि संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ १८७ ॥

चौपाई ॥ दिसि दिसि पूरिय हय गय राज। प्रिथीराज सुरपुर सम साज ॥
बाजै पंच सबद बनि रंग। रहबनि द्वादस सूर अभंग ॥ छं० ॥ १८८ ॥

कवित्त ॥ एक दीह निड्डरह। राज रष्षो चिचंगी ॥
* दुतिय दीह सामंत। गरुअ गोविन्द अभंगी ॥
त्रितिय दीह पज्जुन। बलि कूरंभ सुधारी ॥
चतुर दीह नर नाह। कन्ह कीनी कित्ति भारी ॥
पंचमै दिवस कैमास बलि। बलि सुराइ सम जग्य किय ॥
छट्टै सु दीह पुंडीर धनि। धीर रष्षि कीरत्ति लिय ॥ छं० ॥ १८९ ॥

कवित्त ॥ सत्तम दिन रघुवंस। राम करनी कर मेरं ॥
जिहि नंदी पुर भंजि। समर मनुहारि सुबेरं ॥
अट्ठम दिन अचलेस। अचल कीरति जिन रष्षी ॥
नवम दिवस पाहार। जगत दारिद्द सु नंषी ॥
दसमें पँवार धाराधि पति। सलष सु लषि पूरन्न विधि ॥
दिन एक एक रष्षे सवन। पंच च्यार लुहाय निधि ॥ छं०॥ १९० ॥

(१) ए० कृ० को०-उड़नति। (२) मो०-भस्यो।
* ए० को० कृ० प्रति में "दुतिय गोविन्द सु दीह। गरुअ सामंत अभंगी" पाठ है।

रावल का बारह दिन तक बारह सामतों ने अपने अपने यहां नेवता किया ।

कुंडलिया ॥ रष्षि उभय षट[1] बीर बर । बर जंघारो भीम ॥
जिहि ओलें प्रथिराज की । को अरि चंपे सीम ॥
को अरि चंप्प सीम । देव दुज्जन अधिकारिय ॥
तिहि रष्यौ चित्रंग । समर रावर ग्रह चारिय ॥
विधि विधांन न्रिम्मान । द्रव्य अर्चन करि चष्यौ ॥
राव्रर समर नरिंद । न्योति द्वादस दिन रष्यौ ॥ छं० ॥ १९१ ॥

बारह दिन तक रहकर रावल का कूच की तयारी करना ।

दूहा ॥ षट बीय द्यौस रषौ सु नृप । भर सु भांति बहु राज ॥
दिन बारह चित्रंग पति । बज्जे बज्जन बाज ॥ छं० ॥ १९३ ॥

कवित्त । बजि बाजन अनुराग । सबर उच्छव बर धारिय ॥
नूर धूप तें अक्क । पंड हथिनापुर सारिय ॥
हुअ उक्काह दिल्लीस । बंधि गुड्डिय ग्रह[2] धारं ॥
मनौ सोम कल कोट[3] । करिय कल वल्ल बिस्तारं ॥
धन ग्रहति ग्रेह उच्छाह हुअ । चाहुआन रवि वद्दयौ ॥
वेनिय[4] सुजस्स पुरषातनह । बल अनंत घट चढ्ढयौ ॥ छं० ॥ १९४ ॥

बरात लौटने की शोभा का वर्णन ।

छं० मोतीदाम ॥ इति छंद सुछंद सुचंद प्रकार । सु मुत्तियदाम पयं पय चार ॥
परे गजनां जिहि कंकन हार । इसो गुन पिंगल नाम उचार ॥ छं० ॥१९५ ॥
दसों दिहि पूरि न्रपत्तिय सेन । बिराजय राज अनंद सु ऐन ॥
सुधिं सुधि बीर प्रकार प्रकार । चलें संग दंपति ज्यों रति मार ॥ छं० ॥ १९६ ।
ठनंकिय घंटनि हथ्थिय पूर । किनं किय बाजिय साजिय सूर ॥
इकं इक हथ्थिय दासिय पंच । इसी सरसं गुन रच्चिय संच ॥ छं० ॥ १९७ ॥

(१) ए०-क्रु०-वर ।
(२) मो०-घर द्वारं ।
(३) मो०-कोटि ।
(४) ए० क्रु०-विलिय ।

विधिं विधि पूरन पत्तिय सोम। तिनं किय उज्जल सज्जल व्योम ॥
रहं रह राजन साजन सेन। मनों दिव देव दिवाधिप तेन ॥ छं० ॥ १९८ ॥
तुरंगनि तुंगनि की प्रति धीस। लगै तिन मंद सुमंदह ईस ॥ छं० ॥ १९९ ॥

दूहा ॥ ईस मंद संकर उदित। ब्रह्म ध्यान सिव पान ॥
संभरि घर चिचंगपति। को सन मानन जान ॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त ॥ बर सु बुद्धि साधन सरीर। जोगह अधिकारी ॥
कर अदग्ग जग दग्ग। सरन रष्षन जुगचारी ॥
माया सों नहिं लिपत। नीर नीरज समान बर ॥
यों चिचंग नरिंद। चतुर विद्या कोबिद नर ॥
गोरी सु बंध सुरतान रन। जस लेयन जै जैति बर ॥
सा लच्छि रूप भगनी प्रिथा। परनि राज पत्तौ सुघर ॥ छं० ॥ २०१ ॥

दूहा ॥ जहां परनि चिचंगपति। करी उलटि बिपरीति ॥
सिर अप्पौ जुग्गिनि नृपत। देव लोक दिवजीति ॥ छं० ॥ २०२ ॥

अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना।

कवित्त ॥ बाजे बीर सु बाजि। राज बज्जा सो बज्जा ॥
जस बज्जा बज्जासु। धम्म क्रंमं चित रज्जा ॥
सम न कोइ चिचंग। गरुअ गहिलोत गरुअ मति ॥
धनि सुध्रम्म अरु दान। दियौ दिल्लीस बहु भँति ॥
भर मंडि बीर बुट्ठ दिवस। सत्त अट्ठ अरु पंच भ ति ॥
अग्गरें बांम बर काम छत्त। इक्क बार घट्टइ सुगति ॥ छं० ॥ २०३ ॥

रोला[1] ॥ जो दिन रही ढिल्ली प्रति मांनिय देव गति ॥
रति संपति सुष ग्रेह भार आर अति
दुहुं तन सुमन निरष्षिय लोइ बर ॥
मानों सची सँजोग सुरपति आपु धर ॥ छं० ॥ २०४ ॥

दूहा ॥ कनक क्रीड सुष्षे जयति। रतिन कहै कवि चंद ॥
बर जानै कै दंपती। कै[2] दीपक कै चंद ॥ छं० ॥ २०५ ॥

(१) ए.-कृ.-को.-चौपाई। (२) ए. को.-को।

कवित्त। मति मध्या भय बाल। विनै प्रौढा अधिकारी॥
लच्छी सोज सहज्ज। रूप रति बरन सु सारी॥
धीरं तन सिय सार। विरह मंदोदरि नारी॥
पति सु हता रुकमनी। गिनी[1] हूंधिनि अधिकारी॥
सा प्रथीराज भगनी प्रिथा। देव जग्य सम जग्य किय॥
आनंद रूप आनंद कथ। सोम नंद जस बंद लिय॥ छं०॥ २०६॥
कवित्त॥ अरुन तरुन उदयंत। सिद्ध सिक्कर फिक्कारिय॥
दिसि उत्तर ईसान। दिसा दस दसन उक्कारिय॥
बिमल नाग वल्लिय विनोद। कोलिय अविलंबिय॥
बागवान दरिमीय। रवन राजन कर संमिय॥
संचार सुमन सौरभ्भ बर। भ्रमर रोरि रंगिय करिय॥
आगम अरंभ बर बरष फल। जगति जोति व्यासह धरिय॥ छं०॥ २०७॥

व्यास जगजोति की भविष्यद्वाणी।

कहत व्यास जगजोति। नयर नागोर वसंतह॥
जोइ नंदै सोइ नंद। हसै सो रुवै हसंतह॥
इंद्रपथ्थ पुर आदि। राज राजन चहुआनह॥
अमर बेलि कीरति। अछेह साधन सुरतानह॥
आचिज्ज बत्त हिंदुअ तुरक। हमल हेल हल्लै भुअन॥
प्रथमंग पुब्ब पच्छिम पथिर। होत बत्त गंध्रव सुअन॥ छं०॥ २०८॥
कवित्त॥ रुधिर अकन्नित न्हान। कच पुब्बह पच्छिम पर॥
कोलाहल कमिनिय। कज्ज हारस्य देव हरि॥
समर सून्य[2] मंडलीय। अमर विचार बार[3] किय॥
द्रुपद राय पंचाल। दुसह द्रोपदिय चीर लिय॥
* सोइ समय वरष इकईस मय। हरषवंत जुग्गनि कहिय॥
बंचै विचार हिंदू तुरक। इक्क अचल कीरति रहिय॥ छं०॥ २०९॥

(१) ए.–को.कृ.–गिनि।
(२) ए.–सुन्य। (३) मो.–सार।
* मो. प्रति में "सोई समय समय षठ विय वरष" पाठ है।

सभों का अपने अपने घर लौटना ।

कवित्त । * "अप अप ग्रेह गुरंम्य" । राज राजन संपत्ते ॥
भोरा राव भिमंग । बत्त पुच्छै जग जित्ते ॥
पामारिय प्रारंभ । सोर संभरि[1] आहानह ॥
सा हंडै सोमेस । पुत्त बंधन सुरतानह ॥
हेला हमीर हम्मीर सों । विजय राज कमधज्ज किय ॥
अच्छर अचम्भ[2] गल्हां गरुअ । धरनि पंच चहुआन लिय ॥ छं० ॥ २१० ॥

कवित्त ॥ धरनि पंच चहुआनि । आनि फेरिय कर जित्तौ ॥
ता पक्ष हिंदू तुरक । सबै[3] बीतक ज्यौं वित्यौ ॥
धीर मीर संग्रहिग । भीर भंजिय भिरि राजन[4] ॥
जै जै तन चहुवान । देव दुंदुभि घन बाजन ॥
जिहि ग्रहन पानि रावर समर । हुअ आगम जोतिग कहै ॥
अप अप्प क्रंम केलिय कहल । लिष लिलाट तित्तौ लहै ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूहा ॥ सत्तरि सत तिय अग्ग करि । रज रज अप्प प्रहास ॥
लीन सगोरी दंड धपि । षट सित्त पंचास ॥ छं० ॥ २१२ ॥

शाह गोरी का रावल को दहेज देना ।

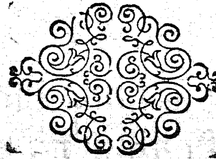
कवित्त ॥ सत्तरि सत तिय अग्ग । बीर गज राज सु अप्पिय ॥
ते लीनों सुरतान । साहि गोरी गोरी किय ॥
पंच सित्त पंचास । एक सौ तुंग तुरंगम ॥
सौ दासी चतुरंग । सत्त ढोलिय अचंभम ॥
चतुरंग लछ्छि चिचंग दे । बर सोमेसर थप्पियै ॥
बुल्लाइ[5] सजन रावर समर । पंच कोस मिलि जंपियै ॥ छं० ॥ २१३ ॥

* मो० प्रति में यह पंक्ति नहीं है ।
(१) ए० को० क्रु०—संभि ।
(२) ए०—अबंध ।
(३) ए० को० क्रु० प्रति में नहीं है ।
(४) ए० को० क्रु०—रावन ।
(५) क्रु०—वोलाई ।

प्रथा ब्याह की फल स्तुति ।

सुनै ग्रहै उग्रहै । बत्त बिय सम उच्चारै ॥
लिषै दिषै अरु सुनै । सुद्ध मंची सुद्धारै ॥
प्रथा व्याह संभरै । पंच भै अंचन लग्गै ॥
सेस फनंमित सुभट । काल पंसी नन लग्गै ॥
साधवी सीय भगनी प्रिथा । प्रथा बरन चिचंग पर ॥
इन सम न कोइ भुवनह भयौ । नन ह्वैहै रवि चक्क तर ॥ छं० ॥ २१४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके प्रिथा विवाह वर्णनं नाम एकविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २१ ॥



अथ होली कथा[1] लिष्यते ॥

[बाइसवां समय ।]

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़कर अबोल बकते हैं इसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ इक दिन प्रिथु नृप पुच्छयो । कहि कविचंद विचारि ॥
नर नारी लज्या गई । फागुन मास मझार ॥ छं० ॥ १ ॥
बाल वृद्ध जुव्वन पुरुष । बुल्लैं बोल अबोल ॥
मात पिता गुर ना गिनैं । निकसैं टोला टोल ॥ छं० ॥ २ ॥
च्यार वरन इक्कत्त मिल । कलह रूप कलहंत ॥
षाधि अषाधि न जानहीं । ज्यों मन[2] नहिं विलसंत ॥ छं० ॥ ३ ॥
या पुच्छी कविचंद कौं । चिय हरष्ष सुषदाय ॥
जु कछु भयौ सु कहौ तुम । तुम वानी बरदाय ॥ छं० ॥ ४ ॥

चन्द का कहना कि चौहान वंश का ढुंढा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी बहिन ढुंढिका थी ।

ढुंढा नाम राषस हुतौ । चहुवाना कुल मझ्झि ॥
तस लघु भगिनी ढुंढिका । जोवन रै सुष संझि ॥ ५ ॥

ढुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई, ढुंढा भस्म हो गया तौ भी ढुंढिका बैठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता ।

ढुंढि गयौ वानारसी । सत्त वरस तप किन्न ॥
तब ढुंढो सुनकैं गई । रही भ्रात सुष चिन्ह ॥ छं० ॥ ६ ॥

(१) मो० और को० प्रति में यह (होली) समय नहीं है । (२) ए०--माहि ।

ढुंढै तन मन जग्य मैं। बाल कियौ भसमंत ॥
प्रिथीराज चहुवान भय। भए सूर सामंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
तब ढुंढी बैठी रही। सत्त बरष जग जान ॥
पवन खाय सेवा करै। ताको सुनौ बषान ॥ छं० ॥ ८ ॥

तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूं वर मांग।

तब गिरिजा सु प्रसन्न भय। मँगि ढुंढी बरदान ॥
हम सद्दै तब सह करनि। भष्यि करै नर जान ॥ छं० ॥ ९ ॥

ढुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूं।

बाल वृद्ध भष्यन करौं। हम को दै महमाय ॥
यह बानी सुनि सामुही। रष्या करनी राय ॥ छं० ॥ १० ॥

गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सके।

तब गिरिजा पति सौं कह्यौ। ढुंढी रष्यसु वत्त ॥
ढुंढी नर भष्यन करै। सोय विचारौ मत्त ॥ छं० ॥ ११ ॥
गिरिजा सिव मिलि यौं कहै। एक अपूरब वत्त ॥
जोगी जंगम बाहुरैं। मे राषे नित नित्त ॥ छं० ॥ १२ ॥

शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकैं, गदहे पर चढैं, तरह तरह के स्वांग बनावैं उनको छोड़ और जिसको पावै वह भक्षण करे।

विहल विकल बानी असुर। बोलहिं बोल अनन्त ॥
एता नर मारीत जवि। अवरनि कौ करि अंत ॥ छं० ॥ १३ ॥
सिव अग्या पवनह दई। प्रिथमी घर सहु अंग ॥
फागुन मासह तीन दिन। करौ अनेरौ रंग ॥ छं० ॥ १४ ॥
रासभ परि चढ़ि चढ़ि हसहिं। सूप सीस धर लेहु ॥
गोसा बंधे गलि फिरै। हो हो सबद करेहु ॥ छं० ॥ १५ ॥

ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया।

ढुंढी आइ जहां तहां। दिष्षे लोग अजान॥
हो हो करि रासभ चढ़ैं। ए कवि कहै बषान॥ छं०॥ १६॥
चटक चटक दिन प्रति भषैं। मद मादक अप्रमान॥
नर नारी सब मति गई। ए पन मन अनुमान॥ छं०॥ १७॥
सिंधू राग बजावहीं। गावहिं नवला गीत॥
हो हो करि हा हा करैं। ए मंडो विपरीत॥ छं०॥ १८॥
घरि घरि अगनि प्रजारहीं। उभिक्ष धूर अरु राष॥
नाचैं गावैं परस्पर। चिया दिषावत काष॥ छं०॥ १९॥
इहि विधि बाउ जवाविउ। फगुन मास सों भाव॥
लज्ज भज्ज विद्यघन गई। भावै षाव सुषाव॥ छं०॥ २०॥

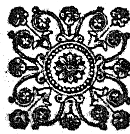
इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया।

इहि विधि दुरित निवारियौ। मिद्यौ सबी उर दंद॥
आयौ चैत सुहामनौ। गृह गृह भयौ अनंद॥ छं०॥ २१॥

जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिका की स्तुति करते हैं।

स्लोक॥ गतेनु षार समये। वसंते च समागमे॥
होलिका प्रब्व पूज्यंते। ढुंढा देवी नमोस्तु ते॥ छं०॥ २२॥

इति श्री कबि चंद बिरचिते प्रिथीराज रासके होली कथा समय नांम बावीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्।



अथ दीपमालिका कथा लिष्यते ।

(तेइसवां समय ।)

पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ फिर पूछी पृथिराज नृप । कहो चंद कवि सब्ब ॥
होतु सुकातिक मास महिं । दीप मालिका प्रब्ब ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ।

कहि कबिचंद नरिंद सुनि । जो पुच्छौ कथ मोहि ॥
दीपमालिका उतिपत्ति सब । कहै सुनाऊं तोहि ॥ छं० ॥ २ ॥

सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ।

सतयुग सतव्रत राजसय । प्रलय दिषायौ देव ॥
तासुत सोमेसर कहिय । सुर नर करत सुसेव ॥ छं० ॥ ३ ॥
बहुत पुष्य पालै प्रजा । रिद्ध दिद्ध मंडान ॥
च्यार वर्न चंहु आश्रमहि । दान मान परिथान ॥ छं० ॥ ४ ॥

उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग़ लगे थे वहां एक बैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ।

ता नगरी सत्यावती । सरित समुद्रह तहि ॥
बारी बाग विचित्त नर । ग्यान ध्यान घटि घहि ॥ छं० ॥ ५ ॥
तहां बसे सतस्रंम द्विज । वेदवंत बल बुद्धि ॥
ताकी नारी नागरी । ताक्कर नाहीं रिद्धि ॥ छं० ॥ ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो ।

अवर न कोई नर दुषी । सुष भोगवै अनंत ॥

नारी कहि जिसु रष्य सम । त्रिथा जीव तुम कंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
विथ्या जीवन मनुष कौ । जो धन नाहीं पास ॥
तातें को[1] उपचार कर । करै रहै बन बास ॥ छं० ॥ ८ ॥

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया ।

तब सतिश्रम आदर करिय । ग्यान ध्यान चित देषि ॥
जीवन जनम विथा गयो । पाप उदय तन देखि ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ सपनो अथ्य विहूनौ । सेवेरने न भाषयै दीनौ ॥
मंगह मरन मह गोन । बीकि नेम न मानि किन ॥ छं० ॥ १० ॥

सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है ।

दोहा ॥ सत्ति सरम सत वरष लो । सेये विष्णु नरंत ।
विष्णु बतायौ ब्रह्म कौं । ताको पार न अंत ॥ छं० ॥ ११ ॥
तब ब्रह्मा सु प्रसन्न भय । रुद्र बतायौ नाम ॥
रुद्र कह्यौ माया बरहु । करै हमारौ काम ॥ छं० ॥ १२ ॥

तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए ॥

त्रियन बरस त्रिय मास दिन । त्रीय घटी पल उन्न ॥
सु प्रसन भइ सा कामिनी । दिय चौदहौ रतन्न ॥ छं० ॥ १३ ॥

सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है ।

तब सतिश्रम ऐसी कही । कहा रिद्ध अरु सिद्धि ॥
सेवै नरपति नाह कों । एह बातएहु तिद्ध ॥ छं० ॥ १४ ॥
दिन पह्नर बुधि उप्पजी । दिन विहह्नि वुधि जाइ ॥

(१) कृ०--का ।

अथ दीपमालिका कथा लिष्यते ।

(तेइसवां समय ।)

पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ फिर पूछी पृथिराज नृप । कहो चंद कवि सब्ब ॥
होतु सुकातिक मास महिं । दीप मालिका प्रब्ब ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ।

कहि कविचंद नरिंद सुनि । जो पुच्छौ कथ मोहि ॥
दीपमालिका उतिपत्ति सब । कहै सुनाऊं तोहि ॥ छं० ॥ २ ॥

सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ।

सतयुग सतव्रत राजसय । प्रलय दिषायौ देव ॥
तासुत सोमेसर कहिय । सुर नर करत सुसेव ॥ छं० ॥ ३ ॥
बहुत पुष्य पालै प्रजा । रिद्धि सिद्धि मंडान ॥
च्यार वर्न चहु आश्रमहि । दान मान परिथान ॥ छं० ॥ ४ ॥

उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग़ लगे थे वहां एक वैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ।

ता नगरी सत्यावती । सरित समुद्रह तहि ॥
बारी बाग विचित्र नर । ग्यान ध्यान घटि घहि ॥ छं० ॥ ५ ॥
तहां वसे सतश्रंम द्विज । वेदवंत वल बुद्धि ॥
ताकी नारी नागरी । ताछर नाहीं रिद्धि ॥ छं० ॥ ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो ।

अवर न कोई नर दुषी । सुष भोगवै अनंत ॥

नारी कहि जिसु रष्ष सम । व्रिथा जीव तुम कंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
विथ्या जीवन मनुष कौ । जो धन नाहीं पास ॥
तातें को[1] उपचार कर । करै रहै बन वास ॥ छं० ॥ ८ ॥

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया ।

तब सतिश्रम आदर करिय । ग्यान ध्यान चित देषि ॥
जीवन जनम विथा गयो । पाप उदय तन देखि ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ सपनो अथ्य विहूनौ । सेवेरने न भाषयौ दीनौ ॥
मंगह मरन मह गोन । बीक्नि नेम न मानि किन ॥ छं० ॥ १० ॥

सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है ।

दोहा ॥ सत्ति सरम सत बरष लो । सेये विष्णु नरंत ।
विष्णु बतायौ ब्रह्म कौं । ताको पार न अंत ॥ छं० ॥ ११ ॥
तब ब्रह्मा सु प्रसन्न भय । रुद्र बतायौ नाम ॥
रुद्र कह्यौ माया बरहु । करै हमारौ काम ॥ छं० ॥ १२ ॥

तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए ॥

त्रियन बरस त्रिय मास दिन । त्रीय घटी पल उन्न ॥
सु प्रसन भइ सा कामिनी । दिय चौदहौ रतन्न ॥ छं० ॥ १३ ॥

सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है ।

तब सतिश्रम ऐसी कही । कहा रिद्ध अरु सिद्धि ॥
सेवै नरपति नाह कों । एह बानएहु तिद्ध ॥ छं० ॥ १४ ॥
दिन पद्धर बुधि उप्पजी । दिन विहस्थि बुधि जाइ ॥

(१) कृ०–का ।

दीप दिषायै बुद्धि वर। बझै दीप लछि जाइ॥ छं० ॥ १५॥

गाहा। को कौन पथीयै। को कौन जचीं॥

कह कहन नामियं सीस। दुभर[1] गअर चक्क औ किन्नयं किन कायवं॥
छं० ॥ १६॥

ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है।

दोहा॥ बंभन बुद्धि विलास हुइ। तहं दिष्षै लछिवास॥

कार्तिक मावस सोम दिन। लछि आवहि तिहि पास॥ छं० ॥ १७॥

लच्छी जल निधि ही बसी। निकसि तिहू दिन दिन्न॥

अगर कपूर सुदीप दर। जहां षान उर चिन्न॥ छं० ॥ १८॥

ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग।

बंभन राजा सेवयै। बरस भये दुअ च्यार॥

तब राजा वरदान दिय। मंगौ मन्नि विचार॥ छं० ॥ १९॥

ब्राह्मण ने दीपदान बर माँगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जले।

तब बंभन ऐसी मँगी। दीपहु दान विचारि॥

कार्तिक मास समुद्द दिन। दीपं न्नवै संसारि॥ छं० ॥ २०॥

अच्छे लोयन अछि तहां। अच्छे लोयन निपान॥

नर नारी उद्दिम रहै। पीक परी तिहिपान॥ छं० ॥ २१॥

राजा ने कहा कि तुमने क्या माँगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गाँव माँगना था, अस्तु अब घर जाओ।

कहा मँगी तुम देवता। पच्छिम बुद्धी विप्र॥

अन धन गांव गंभार मगि। घर जाओ तुम विप्र॥ छं० ॥ २२॥

ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा सेर रुई मंगाई।

(१) ए.-उभर।

अपने घर तब आय करि । तेल लियै मन एक ॥
छई सेर सवा लई । इह तन की जु विवेक ॥ छं० ॥ २३ ॥

कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए ।

कार्तिक आयौ कलपतरु । विप्रह भयौ उछाह ॥
मंग्यो हतौ सु देउ प्रभु । पड़ह बाज बहु नाय ॥ छं ॥ २४ ॥

राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले।

तब आयस नरपति कियौ । कोय न बालै दीप ॥
आज्ञा भंग जो को करै । ताहि बँधाऊं चीप ॥ छं० ॥ २५ ॥

लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अँधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए ।

लच्छि समंद निस्सरी । आई नगरहु तथ्य ॥
अंधारौ अहि पूरजे । सु दीपक दिट्ठौ जथ्य ॥ छं० ॥ २६ ॥
बंभन कै घरि दिष्षि करि । आइ सही दरबार ॥
अह निसि वासै हम वसै । लच्छी कहै विचार ॥ छं० २७ ॥
लच्छी बच्छी क्या करै । दारिद दहि मुहि मत्त ॥
तू पाला घर थान रहि । सदा दुचित्तै चित्त ॥ छं० ॥ २८ ॥
मो संगि सथ्थि जु निरबहै । नदी पवनि गिर दंद ॥
रात दिठ्ठ वासै वसों । सं छंड्यौ मति दंद ॥ छं० २९ ॥

लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म मैं तेरे घर बसूंगी ।

तब लच्छी सु प्रसन्न हुइ । कहे रोर करंक ॥
सात जनम तुरि घर वसौं । एक वसत अकलंक ॥ छं० ॥ ३० ॥

तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूंगा।

तब दारिद्र जु भजि चल्यौ । बंभन पकस्यौ धाय ॥

इक कोरी तुम पुब्ब सों। लच्छिक देव न जाय॥ छं० ॥ ३१ ॥

दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस नगर में न आऊंगा।

तब दरिद्द वाचा दई। मो कूं तूं दे जान।
बहुरि न आऊँ इह पुरी। ऐसो कह्यौ बषान॥ छं० ॥ ३२ ॥

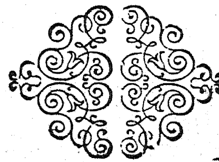
उसी घड़ी से उसके यहाँ आनन्द हो गया हाथी घोड़े झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका चली।

घरि लच्छी आनंद मन। हय गय मान महंत॥
दीपमालिका तद्दिन तैं। एह चली महि वंत॥ छं० ॥ ३३ ॥

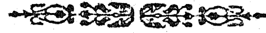
चारो दिशा में दीप मालिका का मान्य है। यह कथा कवि चन्द ने कह सुनाई॥

पुब्ब पच्छिम उत्तर दच्छिन। दीपमालिका मान॥
षान पान परिमान मन। काम मनोरथ थान॥ छं० ॥ ३४ ॥
कही चंद आनंद सौं। पुच्छी न्रप प्रिथीराज॥
दीपमालिका प्रगट हुइ। घरि घरि मंगल साज॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रिथीराज रासके दीपमालिका पर्ब्ब कथा समय नाम तेवीसमों प्रस्ताव संपूरणम्॥



अथ धन कथा लिष्यते ।



(चौबीसवां समय ।)

खट्टू बन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना ।

दूहा ॥ षट्टू आषेटक रमै । मद्दिम मुरस्थल[1] थांन ॥
नागौरै गोरी ग्रहन । सथ न्त्रिमल परधांन ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना ॥

कवित्त ॥ मंच जोग कयमास । मंच प्रथिराज सु पुच्छन ॥
तूं मंची मंचंग । मंच जानहि सुभ लच्छन ॥
सांम दांन अरु भेद । डंड निरनै करि लष्षै ॥
बहु मंचह उप्पाइ । राज मंचह करि रष्षै ॥
मंचह सुमंच मन अनुसरै । अरु मंच भेद जानै सकल ॥
अदभुत चरित्त पाषांन लिषि । बंचिन किन आवै अकल ॥ छं०॥ २ ॥
तू मंची कयमास । मंच पय पय उप्पावहि ॥
तू मंची मंचंग । मंच मंचीन दिषावहि ॥
तू मंची सामंत । *स्वांम ध्रम्मं विचारै ॥
धर सम्रह संग्रहै । मंच करि अरिन विडारै ॥
तुम जोग मंच मंची न कोइ । सह बत्तन उच्चार कैं ॥
संसार सार मंचह प्रबल । कहौ मंच विचारि कैं ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं सो तुम इसका अर्थ करो ।

(१) मो०—मरुस्थल कृ०—मुरस्थल ।
* मो प्रति में "सांमि ध्रम्मं सुविचारै" पाठ है ।

कवित्त ॥ सलिल सुबर पाषांन। मध्य पूतली अचंभं ॥
सलिल मत्त तन जा बिसाल। उप्पम रिस रंभं ॥
ता उप्पर बिय नाम। प्रगट प्राकार उचारै ॥
भूलि भूलि भ्रमि लोइ। मुद्ध मनसा करि डारै ॥
वंचौ सु वीर कैमास तुम। बियै बंच नाही बनिय ॥
भूतह भविष्य अरु बत्तमन। इह अपुब्ब मैं कथ सुनिय ॥ छं० ॥ ४ ॥

पुतली के सिर का लेख "सिर कटने से धन मिले सिर रहने से धन जाय"।

दूहा ॥ सिर कहै धन संग्रहै। सिर सज्जै धन जाइ ॥
हो मंत्री कैमास तूं। मंत्रहि करै उपाइ ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना।

कवित्त ॥ स्रवन राज हग रत्त[1]। स्रवन जानहि परिमानन[2] ॥
बेद दिष्ट देषै सु। भेद अभ्भेद सु ग्यानन ॥
पसुअ नयन आचरहि। धनह परिमांन सु लष्यइ[3] ॥
बिपति लोइ संसार। सार द्रिग इक्कय दिष्यइ ॥
मंत्रीन दिष्ट मंत्रं तनी। मंत्र भेद अनुसर सरति ॥
बमांन[4] बीर जांने सकल। मूढ ग्यांन प्रौढ़ह सुमति ॥ छं० ६ ॥

कवित्त ॥ तिष्ण तरंगन पस्यौ[5]। मंत्र तारक हरि सुहरि ॥
बहरि[6] अंध कलार। राज दंडह लिय उद्धरि ॥
सारषंष जक जीव। नयन त्रिघात धात जुरि ॥
अखिल अषेटक सूझि। डुल्लि जब चित्त मित्त परि ॥
भुल्लहि सुदान त्रिम्मान गति। मरन मंत्र[7] नहि लिष्यवै ॥
मंत्री न मंत्र भुल्लै तवै। विधि विचार विधि दिष्यवै ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो.--रस।
(२) मो.--की प्रति में "स्रव जानन परि मानन" पाठहै (३) मो.--लष्षहि।
(४) ए.--बमांन। (५)--मो--पस्यौ। (६) मो. कृ.--बंदरि।
(७) मो.--मनं।

पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि बीर बाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्वंश मरैगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है ।

छंद पद्धरी॥ अब कहौं मंच तुम पुच्छ लोइ । मनि ग्रहौं नैम जिन करौ सोइ ॥
पाषान अंक में लिषे राइ । वृत्तंत सोइ सब कँछु सुनाइ ॥ छं० ॥ ८ ॥
बाहन सुबीर कोइ भयौ राइ । तिहि पाप कंम लीनी उपाइ ॥
संसार सकल तिहि दुष्प दीन । सेवकन सेवनिह द्रव्य कीन ॥ छं० ॥ ९ ॥
प्रज पीड़ माल संग्रह्यौ कोरि । भरि जनम म्रढ़ भंडार जोरि ॥
संसार सकल तिन दुष्प पाइ । सब श्राप दीन हुह अगति जाइ ॥ छं० ॥ १० ॥
विन वंस हंस हुह तजै देह । हुम प्रजा सकल कहि अप्पगेह ॥
कितनेक दिवस तिन तज्यौ ओर । भंडार पाहि बह सुनौ बीर ॥ छं० ॥ ११ ॥

कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के रावल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचन्द, शहाबुद्दीन, भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं ।

अप पास कढ़न नहिं जाइ राइ । चित्रंग राव लिज्जै बुलाइ ॥
मिलि सुभट तास कढ्ढौ भँडार । तिन बिना दंद मचै अपार ॥ छं० ॥ १२ ॥
कनवज्ज राव जैचंद देव । नर असी लष्प तिन करत सेव ॥
गज्जन नरेस साहाब साह । दस लष्प मेच्छ सेवंत ताह ॥ छं० ॥ १३ ॥
गुज्जर नरिंद भीमंग देव । तिन अप्प अब्ब[1] परिकंक केव ॥
ढिल्लीस तेज तूंअर नरिंद । तस बढ्यो वैर उपजै[2] सु दंद ॥ छं० ॥ १४ ॥
अप तुच्छ सेन हुह मत्त मानि । मिलि समर सथ्थ पुछि लच्छवानि ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरोपाव देना और उसकी बड़ाई करना ।

चौपाई ॥ राजा ढिग कैमास बुलाइय । पहराइय सुउच्च सिरपाइय ॥
बगलि अप्प आरोहन बाजन । करी सुपारस सुसर कि राजन ॥ छं० ॥ १६ ॥

(१) ए.--अच्छ । (२) मो.--उपज्यौ ।

दूहा ॥ हरषि राज प्रथिराज कहि। मति कैमास दै नाम ॥
मति कैमास[1] कैमास तुम। सकल सुमति के धाम ॥ छं० ॥ १७ ॥
दूहा ॥ जां मंचह पूछत नृपति। सांई अंग सु कांम ॥
समर सिंघ रावर मिलै। धन काढ़ै अभिरांम ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समरसिंह के पास भेजना।

मांडि मंच चहुआंन इह। बोलिय चंद पुँडीर ॥
समर सिंघ रावर दिसा। दै कग्गद मति धीर ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना।

दूहा ॥ दस हैवर इक बग्ग बर। अरु दिय सिंगिनि पांनि ॥
कहि जुहार विधि जंपियै। नृप पुच्छिय कुसलांनि ॥ छं० ॥ २० ॥

चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं।

कवित्त ॥ लै कग्गद प्रथिराज। बीर पुंडीर सँपन्नौ ॥
सुबर जोर साहाब। मंडि गोरी धर थन्नौ ॥
बर भोरा भीमंग। चंपि चालुक्क बिलग्गा ॥
नाहर राउ नरिंद। सेन लष्षां असि दग्गा ॥
आषंड द्रव्य दिल्ली धरां। सुनि चढ्ढे द्रिगपाल सजि ॥
कढ्ढियै मंच मंची अपुन। बर बिभूति लच्छी सुरजि ॥ छं० ॥ २१ ॥

रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा।

कवित्त॰॥ समरसिंघ रावर नरिंद। समर सह संभर जित्तन ॥
अरु जोगिंद नरिंद। चित्त जोगिंद समत्तन ॥
कमल माल सो भत्ति। चंद लिल्लाट बीय दुति ॥

(१) मो॰—कैवास।

नयन रंभ आरंभ । जोग पारंभ सिंभ मति ॥
मुंजीत्र ढाल जीपन विरद । नाग मुषी सिल्लार बनि ॥
सा चिच कोट ओटह न्रपति । मद्दन रंभ मंडहि सुमनि ॥ छं० ॥ २२ ॥

पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंसकर चन्द पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैव गति है ।

दूहा ॥ बंचि बीर कग्गद न्रपति । हसिय चित्त बर बंक ॥
कछु लज्जा सगपन सु हित । रष्य पुँडीरां संक ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवित्त ॥ हसि जोगिंद नरिंद । वत्त सें मुष उच्चारिय ॥
*एक ग्रध्र संम्रूह । मंस लद्दौ पल हारिय ॥
अब्ब ग्रिद्ध विंटयौ । मंस चप्पौ जै कारिय ॥
तब सुमंत उप्पनौ । मंस लद्दौ गहि डारिय ॥
भुगवैति कोइ गड्डैति कोइ । कोइक पढ़ कोइ लब्भवै ॥
दैवान दुसंकह दैवगति । जो न्रिम्मान सु न्रिम्मवै ॥ छं० २४ ॥

चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए ।

कवित्त ॥ सुनि रुवत्त पुंडीर । बत्त जंपी सुनत्त जोइ ॥
तुम जोगिंद नरिंद । मत्त जंपौ सुतत्त होइ ॥
सुअ सोमेस नरिंद । सुवत सगपन मिस पुच्छिय ॥
तुन चहुआना[1] गरुअ । मुष्ष कढ्ढौ किम ओछिय ॥
सामंत नाथ सामंत बल । मेर ठेलि दच्छिन धरहि ॥
प्रथिराज आज राजिंद गुर । इंद फुनिंद न सो डरहि ॥ छं० ॥ २५ ॥

शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है इस लिये सहायता में आपको चलना चाहिए ।

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है ।
(१) मो० को०--लहुआना ।

कवित्त ॥ अग्गैह रावर समर । करन साहस चहुवानिय ॥
हलहल अग्ग प्रचंड । संभ सोभै गर बानिय ॥
*अग्गौ अग्ग जुगिंद । अग्गि लग्गै विहब्भांनिय ॥
आग सिंध निठ्ठुर नरिंद । उठ्ठ चंपै परवांनिय ॥
अग्गे व काल सुनियै दुसहु । सह पिच्छै फिरि ठठ्ठयौ[1] ॥
चिचंग राव रावर समर । संभरि वै दिसि चठ्ठयौ ॥ छं० ॥ २६ ॥

रावल समरसिंह का सेना आदि सजकर चलना सेना की तैयारी का वर्णन ।

रिंग्यो सबर[2] नरिंद । सज्जि है गै चतुरंगिय ॥
हय गय दल चतुरंग । जंपि माहा भर जंगिय ॥
महा सुभर गज्जंत । खूंदि खुरधर आहुट्टिय ॥
सेस सहस फन फट्टि । सकिलि[3] सल मलि साहुट्टिय ॥
फव्यौ सु सेस फन चंद कहि । तब फूंकर करि जग्गयौ ॥
फन किन्न उद्ध कुंडल करिय । तब सु सेस बल भग्गयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

छंद भुजंगी ॥ बरं बिंटियं समर साहस नरिंदं । मनों बिंटियं उड़गनं अब्भ चंदं ॥
किधो इंद्र पासं सबं देव राजै । किधौं मेर तीरं सु पब्बै विराजै ॥ छं० ॥ २८ ॥
उच्यौ छच सीसं विराजै कला की । मनों इंद्र इंदी बरं चंद[4] जाकी ॥
दुतीता उपम्मा कवी का बषानं । मनों हेम के दंड पर चंद जानं ॥ छं० ॥ २९ ॥
कळू स्यांम पाटं विराजै करारी । मनो कढ्ढई सोम कालंक कारी ॥
मयंमद्द गज्जं सबद्दं सु उठ्ठै । बरष्षंत दानं मनो मेघ बुठ्ठै ॥ छं० ॥ ३० ॥
बजै ता जंजीरं अनेकं सबद्दं । मनों बुल्लियं झिंगुरं मास भद्दं ॥
धजं धज्ज हालै विराजै फिरंती । मनों मंडियं बग्ग घन मझ्झि पंती ॥ छं० ॥ ३१ ॥
गजं उप्परं ढाल सोहै ढलक्कं[5] । मनों केलि उग्गी गिरं कज्जलक्कं[6] ॥

* यह पंक्ति मो०--प्रति में नहीं है ।

(१) मो०--उट्टयो । (२) मो०--समर ।
(३) मो०--सफल । (४) मो०--बन्द ।
(५) मो०--ठलक्कं । (६) मो०--कज्जलकं ।

सितं अद्व हज्जार विंध्यौ नरिंदं। तिनं उप्पमा दिष्षि जंपी सु चंदं ॥छं० ३२॥
सबै सेन चतुरंग सज्जी अनेकं। मनों पारसं भांन ग्रह एक एकं॥ छं० ॥ ३३ ॥

परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के पास नागौर को चले।

दूहा ॥ करि मत्ता चहु नृपति। समर राव चहूवांन ॥
नागौरह आए धरा। मद्धि कढि मेलांन ॥ छं० ॥ ३४ ॥*

धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दूत भेजकर शहाबुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चितौरपति धन निकालने नागौर आए हैं।

धर्मादन कायथ लषे। पठि दूत पतसाह ॥
ढिल्लि बै चित्तौर पति। धन कढ्ढै धरमाहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥*

समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना।

कवित्त ॥ जाइ सपत्तौ समर। चंपि ढिल्ली धरवानं ॥
चहुआना रै हथ्थ। दूत दीनौ फुरमानं ॥
असम विषम साहसी। रत्त माया अनुरत्तं ॥
कमल पत्त जल जत्त। मध्य अह न्यारौ जत्तं ॥
छिप्पै न कलक काटन कलक। राज बंध बंध्यौ नहीं ॥
दस कोस कोस ढिल्लीय तैं। राज मुक्कि राजन तहीं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का आध कोस आगे से बढ़कर अगवानी करना।

कवित्त ॥ राजं दै दरबार। सुबर आनंद उपन्नौ ॥
पुब्ब पाप कट्टनह। समर जित समर संपन्नौ ॥
सुबर बीर जोगिंद। चंद विरदावलि दिन्नौ ॥
दिल्ली तें अधकोस। राज अग्गे होइ लिन्नौ ॥

* छंद ३४-३५ मो०-प्रति में नहीं है और को० प्रति में ये ४० छंद के बाद मिलते हैं।

मंडरी मंडि देषै सु कवि। मति डंमरि लभ्भै न दुइ॥
समरह सु ग्रेह अरु समर अलि। समर सुबय अरु समर जुइ[1]॥ छं०॥ ३७॥

समरसिंह का अनङ्गपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर सब सामतों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन निकालने का क्या उपाय करना चाहिए।

कवित्त॥ अनँगपाल ग्रह जा बिसाल। समर उत्तरिय प्रिथा पति॥
विधि अनेक भोजन सु व्रत। राज उत्तर सु सार भति॥
उभय दिवस बित्तीय। सब्ब सामंत सु पुच्छिय॥
सांम दांन अरु भेद। कंक भजि कढ्ढौ लच्छिय॥
कं कहन बंक तुम अनुसरहु। समरसिंघ रावर सुमन॥
उप्पाइ मिट्टि सामंत करि। सु बर बीर कढ्ढौ सुधन॥ छं०॥ ३८॥

कैमास ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के आने के रास्ते पर दिल्लीपति रोकें, और भीमदेव चालुक्य का मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब धन निकाल लिया जाय।

कवित्त॥ मति सुचारु कयमास। द्रव्य कढ्ढन उच्चारिय॥
सेन मुष्ष सुरतांन। राज दिज्जै प्रथुभारिय॥
चालुक्कां चंपै न सीम। रावल मुष दिज्जै॥
अप्प अप्प मुष रष्षि। कढ्ढि लच्छी बर लिज्जै॥
आलाभ जुच्छ[2] पय लाभ तुछ। सु कक्कु कांम किज्जै नही॥
गोइंदराज षीची सुमति। मिलि विभूति कढ्ढ गही॥ छं०॥ ३९॥

रावल समरसिंह का इस मत को पसंद करना और मंत्री की प्रशंसा करना।

कवित्त॥ तब चित्रंग नरिंद। चंदपुंडीर बरज्जिय॥
तुम कुमंत बल मंत। मंत जांनौ न सरज्जिय॥

(१) मो·-जुग्र।
(२) मो·-यच्छ।

ते मंची मंचंग। निगम आगम सब बुझ्झैं॥
अंगन कै कुहंत। घरह सुझ्झैं मन बुझ्झैं॥
अरि अरिन मुष्ष रुक्कहि सुभर। तब सु द्रव्य मिलि कढ्ढियै॥
सुरतान भीर भंजै समर। सुमन मंत करि चढ्ढियै॥ छं०॥ ४०॥

नागौर के पास सब का पहुंचना, सुलतान के रुख पर पृथ्वीराज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना।

कवित्त॥ जाइ संपतौ समर। मध्य नागौर प्रमानह॥
सुरताना रै मुष्ष। कोट अड्डो चहुआनह॥
धन असंष कढ़ तहां। साह चर बर पगधाइय॥
चरचि चित्त सब सरित। वित्त करि हथ्थ दिषाइय॥
साहाब सुकर फुरमांन दिय। गांमी कुल बल लग्गया॥
कढ्ढी सुलच्छि आहुट्ट पति। मुष चहुआन बिलग्गया॥ छं०॥ ४१॥

दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना।

कवित्त॥ उभय दूत नागौर। दूत चहुआन पास हुअ॥
सब चरित्त धरि चित्त। लषन लष्यौ सुसेन सुअ॥
द्वै कोसां चहुआंन। कोस चिचंगराज हुअ॥
अवन गवन जानहु सुवत्त। अनुसरहु पंथ जुअ॥
मन मध्य कथ्थ जानहु सकल। चल्लहु कग्गर राज लै॥
धन ध्रंम अर्थ कढ्ढइ चरित। कहौं वत्त दिष्षै सु लै॥ छं० ४२॥

दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में धन निकालने के लिये दिल्लीपति आगए।

दूहा॥ कलि चरित्त नागौर पहु। दूत सपत्ते आइ॥
दिल्ली वै कढ्ढै सुधन। वज्जा वज्जन वाइ॥ छं०॥ ४३॥

नागौर के समाचार पाकर सुलतान का उमरा ख़ां के साथ डङ्का निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ वज्जा बज्जन वाइ। देषि दैवान दुसंकह ॥
चित्रकोट रावर नरिंद। कट्टन भुज अंकह ॥
संभरि वै आहुट्ठ। लष्षि वट्टन बत्तीसह ॥
गज्जन वै सुरतांन। दूत लै आइ चरीतह ॥
सुनि सच्छ नच्छ नीसान किय। बोलि उम्मरा षांन सह ॥
सज्जौ सुसज्ज संभरि दिसा। चाहुआन किज्जै बसह ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शाह का चक्रव्यूह रचना करके चलना, सेना की सजावट का वर्णन।

कवित्त। साह बद्दौ[1] सुरतांन। चक्का व्यूहं रचि चल्लिय ॥
एक एक असवार। बिच पाइक तिह मिल्लिय ॥
ता पच्छै गज पंति। पंति असवार सम्रूहं ॥
जमर जंग औराक। गौर जंबूरति जूहं ॥
ता पच्छ पंति षुरसांन षां। ता पच्छै बंधी अनिय ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति षां। हांसिंमह्ह षोषर पनिय ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पृथ्वीराज को बाईं ओर से बचाता सुलतान धूमधाम से चला, शेषनाग को कँपाता पृथ्वी को धसाता रात दिन चलकर नागौर से आध कोस पर जा पहुंचा।

कवित्त ॥ वाम कोह प्रथिराज। भुक्कि सुरतान सुचल्लय ॥
सज्जि सेन चतुरंग। समर दिसि समर सुहल्लय ॥
भूमि धसिय धस मसिय। सेस कसमस्सि उकस्सिय ॥
कमठ विमठ हुअ पिट्ठ। ढक्कु कूरंभ करस्सिय ॥
रिंगयौ सबल षुरसान दल। करि मुकाम सक्यौ न कोइ ॥
नुर अद्ध कोस नागौर तें। सज्जि बाज चंप्पौ सु जोइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मंत्री कैमास को रखकर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना।

(१) मो॰ ए॰—साहावदी।

कवित्त ॥ समर सिंघ सुनि श्रवन । बीर नीसान दिषंदे ॥
सज्जि सेन चतुरंग । तरकि[1] तोषार चढंदे ॥
थिर थप्पौ कैमास । लच्छि उप्पर गहि रष्षिय ॥
तरकि तोन सजि द्रोन । बलिय पारथ सम दिष्षिय ॥
भारथ्थ कथ्थ कवि चंद कहि । समर सार बर चल्लवै ॥
उक्कारि सेन सुरतान कौ । हय अठुनि करि हल्लवै ॥ छं० ॥ ४७ ॥

जैसे समुद्र में कमल फूले हों इस प्रकार से सुलतान की सेना ने डेरा दिया ।

*दूहा ॥ साहस कर पत्तिय समुद । कमुद प्रफुल्लिय रंग ॥
उतरि सेन सुरतान तँह । सह आई समरंग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

सवेरे उठते ही समरसिंहं आगे सुलतान के दल की ओर बढ़ा, उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ।

प्रात उदित रवि रत्त रँग । समर समर दिसि जग्गि ॥
तब लगि दल सुलतान के । षेह सु उड्डन लग्गि ॥ छं० ॥ ४९ ॥

धूल उड़ने से सब दिशा धूंधरी हो गई, दोनों दलों का हथियार सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ।

कवित्त ॥ षह सुषेह डंमरिय । दिसा धुंधरी सुराजै ॥
अग्ग मग्ग उक्करै । चित्त उक्करै पराजै ॥
पवन बेग संजुरै । श्रवन लग्गा असि मंचं ॥
रथ कुवेर चढ्ढये । बांन बढ्ढये सुमंतं ॥
दोउ दीन कर दुंद दल । लरन लोह सज्जे सु बर ॥
चंप्यौ नरिंद आहुट्ठ पति । अगनि सार उड्डिय दुजर ॥ छं० ॥ ५० ॥

लड़ाई का आरम्भ होना ।

कवित्त ॥ धन नरिंद सुरतान । पांन दोइ बीच समाहिय ॥
दोइ मुष्ष अरि हक्कि । सिंघ बन की गति साहिय ॥

(१) ए० को० कृ०—तरिक ।
* यह दूहा (छन्द) मो० प्रति में नहीं है ।

धार धार बज्जै प्रहार। नद्द लग्गे[1] नीसानं॥
संभरि वै सुरतान। मीर उट्ठे झुकि षानं॥
घरि च्यारि लग्गि तरवार झर। बढ्ढु उभ्भार लग्गिय फरन[2]॥
दोउ दीन भीन घट घुम्मि घन। उक्करि सेन लग्गे लरन॥ छं०॥५१॥

युद्ध का वर्णन।

छंद पद्धरी॥ बलवंत सबल पाहार पुंज। कर धरै षग्ग धायौ सु नंज॥
लै पच चली कालिका नारि। पर बत्त गहै गय दंत भार॥ छं०॥५२॥
सिर तीर बुंद बरषंत वारि। सिर नषै छंद अष्षित अपार॥
षग्ग सों षग्ग बज्जै करार। घन टहै घाइ जनु मत्त वार॥ छं०॥५३॥
मसंद मीर महुवत्त षांन। ढाहनह धीर धायौ परांन॥
पाहार कुंत किय पुंज राज। समसेल चलै हनि षग्ग गाज॥ छं०॥५४॥
तुच्यौ सु सीस संमेत पांनि। ढाहे कमंध महुबत्ति षांन॥
लघु बंधु रुस्तमा हनिय सूर। बर माल बरैं ले चलीं हूर॥ छं०॥५५॥
जै जैत सबद जंपै जगत्त। पाहार करी अविगत्त वत्त॥
पाहार पुंज रुस्तम्म षांन। मुह जुरे मरद हूये उतांन॥ छं०॥५६॥
है हयौ षग्ग रुस्तम मरद्द। बाहयौं षग्ग पुंजा दरद्द॥
तुट्टयौ सीस सा पुंज राज। अच्छरी वरै करि उद्ध काज॥ छं०॥५७॥
नारद्द नद्द ग्रह इंद मद्द। पलचरी कालिका करै नद्द॥
प्राक्रम सूर देषै पहार। धनि धन्नि कहै भर सकल सार॥ ५८॥
ब्रह्म पूरि भेदि गय सूर सार। अति उंच क्रंम पामेव वार॥ छं०॥५९॥
कवित्त॥ बलिय फौज पाहार। दुतिय भारथ जिन मंड्यौ॥
अरि अक्करि बर लीन। धार धारहु तन षंड्यौ॥
ईश सीस संग्रह्यौ। इक्क तें हथ्थ न मुक्यौ॥
सुर सुरीय कँह जांनि। सरस सिंगारहु चुक्यौ॥
जानयौ गवरि कह मानि किय। कहा जानि नंदी हस्यौ॥
जांनयै चंद इय कब्ब करि। चंद लिलाटहतें धस्यौ॥ छं०॥ ६०॥

(१) ए. क्र. को.–भग्गे।
(२) मो. प्रति में "बल उभ्भारिय पग भरन" पाठ है।

कवित्त ॥ मुत्ति लहत सामंत। सिद्ध मन डोलन लग्गा ॥
चुकि समाधि जगि सिंभ। बंभ आराधन भग्गा ॥
* आपुतुचा तजि सूर। तुचा म्हग्गन आराधी ॥
तन तुट्टिग अधि[1] धार। मग्ग नहि अक्करिवाधी ॥
अचरिज्ज एक आतम गमन। देह मटी मुक्की निमुष[2] ॥
षंषेरि षाल मुक्किय जगत। सुकर किति चल्लिय सुरुष ॥ छं० ॥ ६१ ॥

दूहा ॥ षां ततार रुस्तम सुभर। अरु जे मीर समंद ॥
सोइ तत्ते गहि तेग षरि। वर वीरा रस मंद ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ चंद बंध पुंडीर बर। लष्षन लष्पा सार ॥
मिले मीर मरदान मुष। धरि कर षग्ग करार ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवित्त ॥ षां ततार रुस्तम हुजाब। मुस्तफा महंमद ॥
† है सज्जे बर सार। तथ्य आए मीरंबद ॥
मार मार कहि धीर। मिले लष्षन लष्पेसर ॥
सार धार वज्जंत। भिस्यो मुष हम्मीर गुर ॥
पुण्डीर सुबर साहस बरह। करिव युद्ध षट्टे सुषल ॥
कौतिग्ग देव देषंत सिर। अरिय भूत नंचे अकल ॥ छं० ॥ ६४ ॥

छंद हनूफाल ॥ आए सुमीर मसंद। बर षग्ग धारिब द्वंद ॥
हक्कंत हक्क करार। वज्जंत कर करतार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
चिघ्घाय षग्ग चिकूट। बहि सार सामंत जूट ॥
पुंडीर लष्पन लोइ। भर मीर आए दोइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
बाहैं दुसार करार। लरि लष्प लष्पन सार ॥
झंडे सु षग्ग उझ्झहि। तुट्टे सु झल्लर तहि ॥
उकि उक्कि ईस रनद्द[3]। नारद्द नंचि उमद्द ॥
भगि मीर षुर षुर तार। जुरवंत मीर जुझ्झार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

* "षिति संपुट षलभल्यौ। तुचा म्रगच आराधी" मो०–प्रति में ऐसा पाठ है।
(१) मो०–असि। (२) मो०–निमष।

† मो०–प्रति में छन्द ६४ की प्रथम दो पंक्तियों का पाठ "खां ततार रुस्तम उजाव, खान मुस्तफा महांभर, है सज्जै वर सार, तथ्य आए सुर सरवर" है।
(३) मो०–सुनद्द। ए०–नरद्द।

भज्जंत सेन सुहाव। गज्जंत लष्षन गाव ॥
ननार नूरि हुजाव। रुस्तम महमुद आव ॥ छं० ॥ ६९ ॥
बाहै सुलष्षन सार। चिसि टोप छिप्पर लार ॥
चौहनी लष्षन धार। परसंसि मीर झुझार ॥ छं० ॥ ७० ॥
गय सूर मंडल भेदि। भल कहन अच्छर बेद ॥ छं० ॥ ७१ ॥
कवित्त ॥ चंद बंध पुंडीर। नाम लष्षन लष्षे सुर ॥
दुंद देवि पच्छार। दियौ हुंकार हक्कि गुर ॥
ईस सीस आनंद। पिंड गिद्धिन मन भाइय ॥
दूर सूर अच्छरि बिमांन। चढ़ि देवन आइय ॥
आतम सोई उतपति चल्यौ। देव धांन बिस्रांम भय ॥
जम लोक लोपि बसि ब्रह्म पुर। जंपि सेन दोउ सद्द जय ॥ छं० ॥ ७२ ॥
छंद दुमिला॥ छह गुर लहु पायं अक्खिर दायं बिचि बिचि रायं इंदोई ॥
दुमिलानय छंदं पढ़य फुनिंदं कहि कविचंदं गुनगोई ॥
बज्जै रन तालं असि बर झालं भर भर हालं भंभीरं ॥
पारस सुबिहानं कुट्टिय थांनं चढ़ि मध्यानं कुटि तीरं ॥ छं० ॥ ७३ ॥
गंजी जननं जरि भंगै हिक्करि लरि रज उच्छरि गगनेदं ॥
धर धीर धरंतं जोग जुगंतं लरि लरि जोरं जरि मेकं ॥
किरवांन करक्कै बिज्ज तरक्कै छिच्छ उकक्कै इन भेसं ॥
दो उप्पम भासं माधव मासं अति उल्हासं दुति केसं ॥ छं० ॥ ७४ ॥
उडि सकै न गिद्धं सरबहि बिद्धं हसयति सिद्धं दै तारी ॥
षप्पर अधिकारी षंड उकारी जै जै कारी किलकारी ॥
गज दंत न बट्ठै दै पग चट्ठै कुंत सु कट्ठै सिर चट्ठै ॥
कंदल परि उट्ठै सीस बिकुट्ठै हनहि न रट्ठै भर बट्ठै ॥ छं० ॥ ७५ ॥
दूहा ॥ सस्त्रन सस्त्र न उब्बरिय। मन बर कुट्टिय नांहि ॥
ज्यों मध्या प्रिय तुच्छ निसि। सेरो सहर समांहि ॥ ७६ ॥

रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन।

छंद रसावला॥ रोस राजं भरी। चित्रकोटे सुरी[1] ॥

(१) मो०-सरी।

हथ्थ बथ्थं जुरी। जुहि सोहै षुरी[1] ॥ छं० ॥ ७७ ॥
नीच दीनं परी। बीर हक्कै उरी ॥
कुंत कड्ढै कुरी। हथ्थ वथ्थं करी ॥ छं० ॥ ७८ ॥
दंद कड्ढै ररी। कंध सोभै धरी ॥
लुथि आलुथ्थरी[2]। जंम्मता विक्कुरी ॥ छं० ॥ ७९ ॥
देवता संभरी। ढिल्ल राजं भरी ॥
जोग मत्ते जुरी। रंभ ढूंढै वरी ॥ छं० ॥ ८० ॥
वीर जा संभरी। कुहि कुक्कै करी ॥
मात पित्तं उरी। षत्त कन्है नरी ॥ छं० ॥ ८१ ॥
स्वामिता सुद्दरी। पुप्फ नंषे सुरी ॥
... ...। कित्ति जुग्गं करी ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ कित्ति जोग करनह समथ। मिले सक्क सासेन ॥
आए मीर सुकूह करि। परिय सिंह सिर जेन ॥ छं० ॥ ८३ ॥

अरिल्ल ॥ कोप्यो रावल राज महाभर। सेना साह सहावह लिय पर ॥
हिंदुअ सेन हक्कि भर उट्ठे। पंच षांन सिर सारह बुट्ठे ॥ छं० ॥ ८४ ॥

छंद भुजंगी ॥ उठे पंच षानं बरं आसुरानं। बजे भेरि नफ्फेरि चंबे[3] निसानं ॥
धमक्कै धरा नाग गज्जै सुगेनं। चढ़े देव कौतिग्ग देषंत नैनं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
मिली अक्कुरी रथ्थ अप्पार रंजै। नचै नारदं ईसुरं अप्प कज्ज ॥
करै कूह दौरै भरं आसुरानं। जुटे सूर सामंत लग्गे भरानं ॥ छं० ॥ ८६ ॥
षगं दूअ बाहै झरै टोप मथ्थै। मनों झल्लरं देवलं कूटि हथ्थै ॥
जुरै षांन सामंत दोसार सारं। कहै दीन रामं जपै इष्ट सारं[4] ॥ छं० ॥ ८७ ॥
षडे आइयं अप्प आकूब मीरं। कुटै अंम धीरज्ज कंपै अधीरं ॥
तबै आइ चामंड दाहिंम रायं। हयौ सेल मीरं गहक्कै गुरायं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
समं सेल षानं वहै षग्गझट्टं। पस्यौ अश्व चामंड भग्गै सुघट्टं ॥
उठे चोंड रायं गहै षांन सारं। तुटै मंडलं तुहिहै भाग पारं ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) मो०-खरी। (२) मो०-लोथि लोथं परी।
(३) ए०-को०-अंबे।
(४) मो०-चारं।

ढह्यौ षांन हथ्थें सु चामंड रायं । इतै देषि मीरं निकट्टं सु तायं ॥
वहै षग्ग ढाहै चल्यौ अप्प सायं । हली फौज साहं चंपे असुरायं ॥छं०॥९०॥
तबै केलियं षान षानां कुलाहं । दुअं धारि षग्गं तुहैं हिंदु थांहं ॥
तबै आइ अड्डो भरं अत्तताई । लिए सिप्परं घाव तिच्छे सुताई ॥ छं० ॥९१॥
वहै दूअ षग्गं करै मार झट्टं । मनों रंभथंभं दुअं सीस कट्टं ॥
गुरं गज्जते अत्तताई अभंगं । भरक्कै सुसेना सबै मीर भग्गं ॥ छं० ॥ ९२ ॥
इकं सेर नंमीर साहब्ब षानं । दुअं बंध पुत्तं सु आरब्ब जानं ॥
दुअं धंम धारी उरं जागियानं । उभै दौरि बंधं लगे आसमानं ॥ छं० ॥ ९३ ॥
चपे मीर मुष्षं चवै मार वानं । लगे दाव घावं करै षग्ग पानं ॥
इयं जुद्ध आनुद्ध देष्यौ अपारं । भरं निड्डुरं देषि धायौ सुभारं ॥ छं० ॥ ९४ ॥
हए निड्डुरं संगि हय बंध मीरं । मनों सीर[1] इक्कं वरे दो सरीरं ॥
हने तेग तुरियं सुकमधज्जरामं । ढह्यौ अंस ओहंस उठ्यौ तिसायं ॥ छं० ॥ ९५ ॥
उठे निड्डुरं हक्कि रट्ठौर[2] रानं । सिता[3] बीस चौंडं सुषं मानि भानं ॥
इते आइ दीनो तुरंगं अपानं । चाढ्यौ राव हयमीर कमधज्ज मानं ॥ छं० ॥ ९६ ॥
धये आइ तत्ते करै अप्प पानं । भगे सेन मीरं ढहै पंच षानं ॥
बढी जैत देषी वरं हिंदुआनं । ... ... ॥ ९७ ॥
रिझ्झें नार कंअक्छरी गिद्ध सिद्धं । मनं बांकि प्रेमं जयं जस्स लिद्धं ॥
जयं जंपियं जोगिनी जे गमत्ते । करी कित्ति चंदं गयं गेतं पत्ते ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज की विजय, शहाबुद्दीन की सेना का भागना ।

कवित्त ॥ घरिय अद्ध दिन रह्यौ । साह साहब बल भग्गिय ॥
गात षंभ निरघात । हथ्थ सामंतन लग्गिय ॥
पर्‍यौ षांन आकूब । जेन सेना ढंढोरिय ॥
केलीषां कुंजर कुलाह । तुहि तिन संग[4] विछोरिय ॥
चहुआंन सेन चव दंत चढ़ि । तनु तिन रव रनंषयौ ॥
सुरतांन भीच पंचौ परत । जलधि मध्य पत्तांयौ ॥ छं० ॥ ९९ ॥

(१) मो०—शीश । (२) मो०—रत्तोरे ।
(३) मो०—रुके ।
(४) मो०—तंग ।

सूर्यास्त होना ।

गाथा ॥ अथ वत दीह सुधीरं । साहिब सेरंन हंति निट्ठुरयं ॥
करि प्राक्रंम अपारं । जलनिधि मड्डि गत पतंगं ॥ छं० ॥ १०० ॥

रात होना । सेना का डेरे में आना ।

कवित्त ॥ जल निधि मध्य पतंग । पत्त[1] दिष्षिय तम ग्रासिय ॥
कायर पंकज मुदिग । कुमुद उघघरि अलि वासिय ॥
नर को चिंतव विहंग । वाम विरहनि दुष बढ्ढिय ॥
संजोगिनि स्रृंगार । चित्त कामह रथ चढ्ढिय ॥
चक्रवाक चित चक्कित हुअ । चोर बिटप मन उल्लसिय ॥
औसरे सेन विय उत्तरिय । सांमि ध्रंम मन में बसिय ॥ छं० ॥ १०१ ॥

गाथा ॥ निसचर वरचित चित्तं । चितं जाग्रत उभय सयनेयं ॥
जामं सर सरि हितं । वामीयं काम सपनायं ॥ छं० ॥ १०२ ॥

अरिल्ल ॥ पतत पतंग सुदिष्षिय अंबं । मानहु सीय सुद्ध प्रति व्यंबं ॥
नष मयूष कोदह उप्पारै । मानो तिमिर जोग जंभारै ॥ छं० ॥ १०३ ॥

चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकसी करना ।

कवित्त ॥ जबहि राज प्रथिराज । सेन उत्तरिय रयन गत ॥
तबहि सुराजन कज्ज । रहे सामंत सु जग्गत ॥
राचां मंड निडुरकमंध । अत ताइय ईस बर ॥
सु गुरु जैत पामार । अरिय भंजन अलष्ष भर ॥
अवरें सु सब्ब सामंत भर । चढ़े राज चौकी समथ ॥
गुर लज्ज अवर भर सज्जि रहि । चै पष्षर चवरार षथ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अरिल्ल ॥ डेरा करि बर राज महाभर । तुक्क अंतर मिलि रहै सिंघ गुर ॥
चौकी सेन चढ़े भर सिंघं । एक एक सक सूर अभंगं ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ राम रैंन पावार भर । अरु सु कन्ह भत्तीज ॥
फुनि रघुवंसी राज घर । सब चौकी सजि नींज ॥ छं० ॥ १०६ ॥

(१) मो०--पतत ।

अरिल्ल ॥ सजि चौकी अप सथ्थ सकल मिलि। चढ़त सूर भर न्रप बरज्जि[1] बलि ॥
गुरु सामंत अयति अप्प गढ़ि। रचे सुच्यारि दुअं चौकी चढ़ि ॥ छं० ॥ १०७ ॥
इक चौकी वर सिंघ राज सज। भर दुअ चढ़े अप्प अप्पन कज ॥
थांन थांन जकि रहे सूर बर। सज्जि सनाह रहे जु हंस नर ॥ छं० ॥ १०८ ॥

शहाबुद्दीन के सरदारों का रात को चौकी देना।

छंद भुजंगी ॥ चढ़ी साह चौकी सुरत्तांन षांनं। दोई दीन बज्जै निसानं रिसानं ॥
चमक्कै सनाहं उपंमा सु चंडी। मनो चंदनी रैंन प्रति व्यंब मंडी ॥ छं० ॥ १०९ ॥
फिरै पंति दंती नकी कंति एमं। मनों कज्जलं कूट कंगूर हेमं ॥
फिरै पष्षरी पंति कूदंत बाजी। तिनं देखतें बंदरं द्रोन लाजी ॥ छं० ॥ ११० ॥
लगे पारसी बोलनं मेक सथ्थं। मनो प्रब्बतं बंदरं केलि कथ्थं ॥
इकं एक चित्ते दुअं चित्त नाही। तिनं पंचिये[2] सार साध्रंम सांची ॥ छं० ॥ १११ ॥
षिझै मुष्ष बोलै सुरत्तान दोही। करै भूमि दुज्जन पुरं काल कोही ॥
इसी सेन जोरी सु गोरी नरिंदं। मनों बंटियं पारसं नभ्भ चंदं ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन।

अरिल्ल ॥ लिलह सज्जि प्रिथिराज महाभर सेन सह।
मनों प्रप्पन प्रति व्यंब प्रगट्टिय जानि ग्रह ॥
यापर ओपम और विचार लो अष्षियै।
ज्यों बद्दर में चंद दुरै कछु दिष्षियै ॥ छं० ॥ ११३ ॥
घुरि निसांन घन सद्द स्रवंन न संभरै।
हय गय साजिय साज चक्कतें उभ्भरै[3] ॥
भेरि भनंकिय भंकिन फेरिय नद्दयं।
*एक तबे उत दिष्षि दल बल बद्दयं ॥ छं० ॥ ११४ ॥

शहाबुद्दीन के सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ षां रुस्तम तत्तार। षांन चौकी वे लग्गा ॥
षां नूरी हुजाब षां। महमद्द असि जग्गा ॥

(१) मो०-बररजि। (२) मो०-पंचियं।
(३) मो०-प्रति में "है गै बाजिय गाज फूकतें उभ्भरै" पाठ है।
* मो०-प्रति में ए 'इन वे उन दिष्ष' पाठ है।

केली षां भष्षरी। रोम षोवर षां पन्नी ॥
बर भट्टी मद्द नंग। स्वामि मंझ्यौ सा अन्नी ॥
वीरंग वीर वज्जर विरज। बर चरित्त चिहुं दिसि लगे ॥
सुरतांन कांम अरि भंजनो। सुबर बीर बीरद्द पगे ॥ छं० ॥ ११५ ॥

सुलतान के सरदारों के क्रम से सजकर खड़े होने का वर्णन।

कवित्त ॥ अग्गिषांन उजवक्क। धाइ धावड़ सुरतांनी ॥
ता पाछै साहाव। षांन बंध्यौ तुल सानी ॥
ता पाछै नूरी। हूजाब सेई संचारी ॥
केलीषां कुंजर कुलाह। किन्नी कुट वारी ॥
बांनिक्क विराह दुल्लाह बर। भाई षा भट्टी सु सिर ॥
प्रिथिराज राज आहुट्ठ तें। बर निसान बज्जै दुसर ॥ छं० ॥ ११६ ॥

घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का आगे बढ़ना, दोनों सेना का साम्हना होना।

कवित्त ॥ सुलतानां रै मुष्ष। समर उत्तर्यौ नरिंदं ॥
मनों विद्धि विद्दान। मांड मजाद समुंदं ॥
दोऊ सेन उत्तरिय। भंम्म अप्प अप्पन उच्चारिय[1] ॥
अरि सन्नद्द करि प्रांन। जुद्ध बर मंडि उच्चारिय ॥
पहु फट्टि निसा पह फट्टि कर। घरिय बज्जि घरियार घन ॥
प्राची सुमंत दिसि वर झिलिय[2]। अमर कित्ति चिंते सुमन ॥ छं० ॥ ११७ ॥

प्रातःकाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन।

छंद गीतामालची ॥ नव नवय प्रानय विरह प्रावय[3] संष दिव धुनि बज्जियं।
झलकंत पवनह मधुर गवनह अैसु अस्व हरज्जियं ॥
विकुरंत चंद सुमंत दंदं दिवस ता गम जानयं ॥
पह फट्टि चीरं परिग पीरं तोरि भूषन नाषयं ॥ छं० ॥ ११८ ॥
नव मिलहिं अलिनी हलै नलिनी सह मंद प्रकासयं।

---

(१) मो०—विच्चारिय।
(२) कृ०—सिलिय। ए०—मिलिय। (३) मो०—पाटय।

नय[1] मुदिय कुमुदिय अचिन प्रमुदिय सत्त पत्त सुभासयं ॥
जुग जपत अजयं धरत सजयं चित्त मरन विचारयं ।
सामंत सूरय चढ़े नूरय देव तूरय तारयं ॥ छं० ॥ ११९ ॥

घरि अह भानय चढ़ि प्रमानय राज सेनय सज्जियं ।
उभ्भारि बीरय बंधि तीरय अप्प अप्पय गज्जियं ॥ छं० ॥ १२० ॥

कवित्त ॥ अद्ध सूर उग्गंत । ढ़ाल ढुक्की सुरतानिय ।
ठांम ठांम मधगंध । सज्जि चल्लै अगवांनिय ॥
धर नर गिर धावत सन्नद्ध । जूह चतुरंग जगाइय ॥
ढिल्ली बै सुरतान । धुक्कि नीसान बजाइय ॥
जा हथ्थ हथ्थ कविचंद कहि । अल्लह देइ सुपाइयै ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति षां । सुबर सेनरि गाइयै[2] ॥ छं० ॥ १२१ ॥

रावल समरसिंह का सब सरदारों से पूछना कि क्या हाल है कौन दृढ़ है और डरता है। सभों का उत्साह पूर्ण वीरता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ प्रात समर रावर नरिंद । साहस गत पुच्छिय ॥
कहै सब्ब सामंत । मत्ति जंपौ मति अच्छिय ॥
कोन वीर को धीर । कोन साहस को कातर ॥
कवन दुत अवधूत । जोग कावंध समातर ॥
बंधनह कोंन कौ बंधियै । अरु किन बंधन तन कुहयौ ॥
चित्रंगराज राजंग गुर । रहसि मंत बर कुहयौ[3] ॥ छं० ॥ १२२ ॥

रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर स्वामी का साथ देता है वही सच्चा बीर है।

हुहै वीर अवजोग । प्रांन पति सथ्थ न कुट्टै ॥
चुक्कै न वीर अवसर प्रमांन । जिहि जोग अहुट्टै ॥
इक बंधन बंधियै । हुट्टत तन बंधन अग्गै ॥

(१) मो०—नव ।
(२) ए०—को०—ह्र०—रंगाइए । (३) मो०—जुट्टयौ ।

स्वांमि संकरैं छांड़ि। स्वांमि छक्कारति भग्गै॥
सोई बीर धीर साहस सुई। सुइ रन बीर सुबीर हुई॥
चिचंग राव रावल चवै। जल बुडतं रन कीर सोइ॥ छं०॥ १२३॥

दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना।

दूहा॥ उदित अर्क दिसि पुब्ब पहुं। जगे सेन दोइ जंग॥
अस्व अप्प बल बढ्ढए। बल बज्जंगी[1] अंग॥ छं०॥ १२४॥

पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना।

कवित्त॥ तब प्रथिराज नरिंद। समर उत्तरिय चढ़ाइय॥
सज्जि सेन चतुरंग। बाम को[2] दाव लसाइय॥
स्यांम सेत धजबंधि। नेत निक्करि निक्काइय॥
बंदि बीर बिभ्भूत। लुल्लिय लिल्लाट लगाइय॥
नारद्द दद्द तुंबर सुचिर। सिव समाधि जग्गाय बसि॥
अदभुत जुद्ध दोउ दीन कौ। अप्प आन दिष्षै रहसि॥ छं०॥ १२५॥

सुलतान का रणसज्जा से सजकर सवार होना।

दूहा॥ सुनि रू वत्त सुरतांन चढ़ि। सजि नषसिष अपसिद्ध॥
अरुभर सकल सनाह कसि। चढ़ि अवधूत सनद्ध॥ छं०॥ १२६॥

हिन्दुओं के तेज के आगे मीरों का धीर छूटना।

दूहा॥ जब हिंदू दल जोर हुअ। छुट्टि मीर धर भ्रंम॥
*असमय आर बषांन चलि। करन उद्धसा क्रंम॥ छं०॥ १२७॥

एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल समर सिंह का शत्रुओं पर टूटना।

दूहा॥ इत राजन उत समर बर। दुअ दल सज्जि असंष॥
तन तुरंग तिन बर करन। नमिय तेज चय नंष॥ छं०॥ १२८॥

(१) मो०--बज्जंगिय।
(२) मो०--कोदं।
* मो० प्रति में "अमरस मय साह करि आलखां प्राक्रंम" पाठ है।

युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खां का मारा जाना।

छंद भुजंगी ॥ मिले लोह हथ्थं सु बथ्थं हकारे। मनों बारुनी मत्त मै गंध भारे ॥
दिठी दिठ्ठ दूनं भरं आसुरानं। पलं कूह कज्जै उभै सिंध जानं ॥छं०॥१२९॥
जपै दुष्ट मंचं मुषं राम नामं। कहै मेच्छ दीनं ग्रहै मुठ्ठि वामं ॥
छुटै तीर भारं द्रुमं कै निसानं। मनों भाद्रवं गज्जियं मघ्घवानं॥ छं० ॥ १३०॥
बजै भेरि तूरं बजै संष नद्दं। मनों सज्जई बीर अनहद्द सद्दं ॥
भिरैं मेच्छ हिंदू लरै लोह तत्ते। सचै ईस सीसं षहं देव पत्ते॥ छं०॥ १३१॥
हुए षंड षंडं भरं सो अलग्गं। मनों देव दानैं विरुध्धें बिलग्गं ॥
षिजै लोह आरब्ब वाहै करूरं। चली फौज चहुआंन गय सूर नूरं ॥छं०॥१३२॥
तबैं आइ ठढ्ढौ भरं सिंघ सेनं। तनं आवरे वीर रूपं पथेनं ॥
दिठं दिठ्ठ लग्गी समं षांन षानं। हयंती हयंती मुषं आसुरानं॥ छं० ॥ १३३ ॥
तुरी छंडि राजं सहै संग पानं। हए सेल सथ्थं फटे षांन थानं ॥
जुटे सेल संन्हो बहै षग्ग झट्टं। परै टट्टरी' झट्ट लग्गै सुघट्टं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
भई भीर सिंघं अनुब्बं अपारं। कहै बीर धीरं मुषं मार मारं ॥
रह्यौ आइ अड्डो पतीधार स्यामं। हयौ षग्ग षांनं सु पंमार रामं॥ छं० ॥ १३५॥
ढह्यौ आरबं षांन दो दीन साषी। जिने दीन के ध्रंम की लाज राषी ॥छं०॥१३६॥

पाँच घड़ी दिन चढ़े वीरता के साथ लड़ कर अरब ख़ां का मारा जाना।

कवित्त ॥ पंच घटी दिन चढ्यौ। उमरि आरब्ब षांन लरि ॥
हिंदुअ सेन सन्नद्ध। क्रोह छंड्यौ सुकंक अरि ॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन तुट्यौ तन तुट्टिय ॥
अस्त बस्त बज्जी कपाट। दद्धीचन जुट्टिय ॥
पग पगति सिंभ पग पग मुगति। भुगति भूमि कित्तिय चलिय ॥
धनि सेन साह सुरतांन दल। दरिय बीर मत्ती षुलिय ॥ छं० ॥ १३७॥

खुमान खां का क्रोध करके लड़ने को आना।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध। उमड़ि आरब्ब षांन जुरि ॥

(१) मो०—टट्टरं।

* बल घट्यौ पतिसाह। षबरि षुम्मांन षांन सुनि ॥
परि अरिष्ट सु बिहांन। भए सब सथ्य उतारै ॥
अप्प अप्प मुष छंडि। मंडि करि वार करारै ॥
घरियार सघन समघाइ बजि। लरत लोह भए लल्लरिय ॥
दोइ दीन दुंद दारुन दरिय। करैं बीर गुन गल्हरिय ॥ छं० ॥ १३८ ॥

युद्ध का वर्णन।

छंद मोतीदाम॥ सुअंत कमंत बढै अनदोस। परै घन बत्त सरोसिय रोस ॥
लठै जनु सांड भयानक भंति। करै घन गज्जं घनं बन कंति॥ छं० ॥ १३९ ॥
बहै असि अंक निसंक नि नारि। उतारत भाजन सूत कुंभार ॥
तकै सिरछंन तकत्तिय घाउ। बहै करि वार मनो बहि बाउ ॥ छं० ॥ १४० ॥
जहां तहां धुक्कत उठ्ठत एक। सरफै तरफै रत तच्छिय नेक ॥
हलंमल होत षरभ्भर फीर। बहै असमांन अनुंछिय तीर ॥ छं० ॥ १४१ ॥
बहै सर पष्षर निक्करि जात। तकै तन घट्ट करंत निघात ॥
परैं बर बज्ज गुरज्ज सिरंन। बहै सिर रत्त कै पब्ब झिरंन ॥ छं० ॥ १४२ ॥
अदभ्भुत आवध बज्जिय मार। ढहै जिमि द्रुच्छ सुनद्द किनार ॥
हलंमिल है दल पैद्दल एक। भयं इम युद्ध घरी भर एक ॥ छंद ॥ १४३ ॥

ग्यारह दिन युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्बल होना। रावल समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध। सबर संघट[1] पंच घटि ॥
बल घट्टिय पतिसाह। षग्ग षरभरिय षांन जुरि ॥
हाइ हाइ आरिष्ट। सकल हिंदून सेन करि ॥
समर सिंघ मुष छंडि। जाइ भंज्यौ तिरछौ परि ॥
घन घाइ बजाइ सु फौज फिरि। लरन लोह कढ्ढे भिरन ॥
दोउ दीन दीन उप्पम बिसल। मद मैगल कुट्टे लरन ॥ छंद ॥ १४४ ॥

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है।
(१) मो०-संघन।

युद्ध वर्णन।

छंद त्रिभंगी॥ मद मोष कि कुट्टं दो बर जुट्टं संकर तुट्टं आहुट्टं।
भर भर भूआलं बूथर चालं कर बजि तालं तर तुट्टं॥
करि कर बर कुंतं सजि बलवंतं भिरि गज दंतं चढ़ि दंतं।
करि घन संमानं बीर भरानं उप्पम जानं करि नंतं॥ छं०॥ १४५॥
तज्जे सब सस्त्रं बीर सुमित्रं बजि अनुरत्तं उत्तंगे।
उर उर बर घट्टे रुधि रस लुट्टे छवि बल पट्टे रग रंगे॥
धर धरति फुरक्कं चलत न दिष्षं अंतर रुष्षं अवरुष्षं॥
बग्गं अघ जानं को किरवानं गिल छिन षानं जद्द भष्षं॥ छं०॥ १४६॥
द्वै वै हिंदवानं तजै न थानं द्रोन समानं गुर पिंडं॥
रितु राज बसंतं दीपति चिंतं संकुचि जंतं मिल षंडं॥
नेजे बर षानं बलि लक्कि ध्यानं मीर धरानं भ्रमि दंदं॥
सब सेन समाहं सुरपति छाहं को तिग राहं लै चंदं॥ छं०॥ १४७॥

खुरासान ख़ां का घोर युद्ध करना।

कवित्त॥ षां षुरसांन ढहाइ। षांन षुरसांन गद्दन पति॥
सत्त दून भर समर। समर आहुन्ति मंडि क्रिति॥
सेन नवत भ्रित नवत। नवत गजराज साज नव॥
ते समस्त नव मंच। यंच तंच नव्वंत सब॥
दिन अदित हंस इक सघ्य उडि। रन आहुट्टिय बीर बर॥
दिष्षहि सुजघ्य गंध्रव गुननि। जुबर कित्त बित्ती सुभर॥ छं०॥ १४८॥

समर सिंह की बीरता का वर्णन।

कवित्त॥ पद्यौ समर षावास। समर जित्तै सुरतानी[1]॥
परि भट्टी मद्द नंग। सस्त्र वाहे सुत्रिहानी॥
पद्यौ गौर केहरी। रेह अजमेरां सष्षिय[2]॥
स्वामि ध्रम जस रत्त। क्रित्ति भारथ भर भष्षिय॥
रघुवंस पंच पंचौं मिले। बर पंचानन नाम क्रमि॥
चित्रंग बीर पंचो परत। चढ्यौ भान मध्यान नमि॥ छं०। १४९॥

(१) मो०—षुरसानी। (२) मो०—रष्षिय।

सूचना ।

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डांकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	)॥
कविवर बिहारीलाल—(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	)॥
गद्यकाव्यमीमांसा—(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	)॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	)॥
समालोचना—(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
समालोचनादर्श—पद्य—(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	≡)	)॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र—(पण्डित नारायणपांडे रचित)	॥)	-)
विसूचिका चिकित्सा	।)	)॥
हरिश्चन्द्र—पद्य—(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)॥
भगवद्गीता—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	।-)	)॥
उथेलो—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ९ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य—प्रति भाग	१)	-)
हिन्दी लेकचर (बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
उदलमिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	)॥
प्राचीन—लेख-मणि-माला—१ भाग (बाबू श्यामसुन्दरदास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित) ...	।-)	)॥
पृथ्वीराजरासो—पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
,, समय १२-२४	२)	=)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित)	३)	)॥
श्रीधर का जंगनामा	॥।)	-)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)

सभा के पुस्तकालय की सूची	...	...	...		=)
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)			...		॥)
चन्द्रशेष का हम्मीर हठ	...	...	..	...	॥)
महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)		...	...		१)
वैज्ञानिक कोश (भौगोलिक परिभाषा)	...	...	...		=)॥
,, ,, (ज्योतिषिक परिभाषा)	...	...	...		।)
,, ,, (अर्थशास्त्र की ,,)	...	...	...		।=)
,, ,, (रासायनिक ,,)	...	...	...		॥)
,, ,, (गणितशास्त्र की ,,)	...	...	...		।-)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	...	...	...		१)
गीतावली	...	...	...	... ...	।)
योगदर्शन	...	...	...	... ...	२)
गुरुगीता	...	...	...	... ...	।)
रामचरितमानस	...	...	...	...	८)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की १० पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक मूल्य सभासदों के लिये ६) रु० है।

